सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 120, नई दिल्ली, बुधवार 09 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन पर आधारित नाट्य देखने पहुंचे...

06 स्वस्थ जीवनशैली दवा से अधिक लाभकारी

08 ट्रिपल 'एम' सरकार: अध्यख्य बनने के बाद नेताओं, मंत्रियों ने की मनमोहन की तारीफ

## "जब इलेक्ट्रिक वाहन (EV) प्रदूषण नहीं करते, तो उनकी एक्सपायरी डेट (15 वर्ष) क्यों रखी गई है?"

संजय बाटला

इसका उत्तर तकनीकी से अधिक प्रशासनिक, आर्थिक और माफियातंत्र आधारित है। आइए इसे बिंदुवार समझते हैं:

**1. सरकारी नियम समान रूप से लागू होते हैं**

सरकार ने भारत में सभी प्रकार के वाहनों (ICE और EV) के लिए सामान्य Fitness Validity नियम लागू कर रखा है।

प्राइवेट वाहनों की वैधता: 15 वर्ष

उसके बाद वाहन को Re-registration कराना पड़ता है।

यह नियम प्रदूषण की दृष्टि से भले बनाया गया हो, लेकिन EVs को अलग करने की कोई नीति नहीं बनी।

**2. EV में भी बैटरी की उम्र सीमित होती है**

EV की बैटरी (विशेषतः Lithium-ion) औसतन 8–10 वर्ष तक सही प्रदर्शन देती है।

उसके बाद बैटरी की क्षमता घटने लगती है, रेंज कम होती है।

सरकार इसे एक संकेत मानती है कि वाहन पुराना हो चुका है।

**3. वाहन कंपनियों का लॉबी प्रेशर**

वाहन निर्माता कंपनियां नहीं चाहतीं कि वाहन 20-25 साल तक चलते रहें।

इससे नई बिक्री में गिरावट आती है।

इसलिए लॉबी करके सरकारों पर दबाव बनाया जाता है कि पुराने वाहन हटाए जाएं।

**> ठीक वैसे ही जैसे पुराने बल्बों की जगह LED, पुराने फोन की जगह स्मार्टफोन, और पुराने कंप्यूटर की जगह हर साल नया मॉडल लाया जाता है।**

**4. सरकारी राजस्व का सवाल**

15 साल बाद वाहन को फिर से रजिस्टर करवाना पड़ता है, जिससे सरकार को Tax और Fee मिलती है।

वाहन को कबाड़ घोषित कर फिर से नया वाहन खरीदवाने का दबाव बनाकर GST, Road Tax, Insurance आदि में बड़ी आमदनी होती है।

**5."कबाड़ नीति" (Vehicle Scrappage Policy) का उद्देश्य**

2021 में भारत सरकार ने वाहन स्क्रैपिंग नीति लागू की, जिसमें पुराने वाहनों को हटाकर ₹ईंधन दक्ष, पर्यावरण मित्र वाहनों₹ को प्रोत्साहन देने की बात कही गई।

लेकिन विडंबना ये है कि EV पहले से ही पर्यावरण अनुकूल हैं, फिर भी उन्हें नहीं बख्शा गया।

**6. तकनीकी कारण मात्र बहाना बनते हैं**

यदि कोई वाहन तकनीकी रूप से सक्षम है, बैटरी नई है, और फिटनेस पास कर रहा है — तो उसे हटाने का कोई वैज्ञानिक कारण नहीं है।

परंतु, सरकारी प्रक्रिया और माफिया-प्रेरित लॉबिंग से नीतियाँ बनती हैं, वैज्ञानिक विवेक से नहीं।

**निष्कर्ष:**

> इलेक्ट्रिक वाहन प्रदूषण नहीं करते, फिर भी उन्हें 15 वर्षों बाद कबाड़ मानना एक प्रकार से न्यायिक और नैतिक अन्याय है।

यह वाहन कंपनियों, सरकार और लॉबिस्टों की मिलीभगत से बनाया गया तंत्र है — जिसका उद्देश्य पर्यावरण नहीं, निर्माताओं, बीमा कंपनियों का आर्थिक लाभ और सत्ता को कमीशन, रिश्वत और कर-संग्रह है।

## 'दिल्लीवालों के लिए बड़ी जीत, पर प्रदूषण के खिलाफ...', पुराने वाहनों को लेकर क्या बोले पर्यावरण मंत्री

परिवहन विशेष न्यूज

पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने सीएक्यूएम के पुराने वाहनों पर ईंधन प्रतिबंध स्थगित करने के फैसले का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि सरकार वायु गुणवत्ता सुधार के लिए प्रतिबद्ध है लेकिन प्रतिबंध विज्ञान पर आधारित होने चाहिए। सीएक्यूएम ने प्रतिबंध 1 नवंबर तक स्थगित कर दिया है। मंत्री ने उत्सर्जन के आंकड़ों पर आधारित नीति की वकालत की है।

**नई दिल्ली।** पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने मंगलवार को सीएक्यूएम के उस फैसले का स्वागत किया जिसमें उम्र पूरी कर चुके वाहनों पर ईंधन प्रतिबंध के क्रियान्वयन को स्थगित किया गया है। उन्होंने इसे शहर के लोगों के लिए ₹बड़ी राहत₹ बताया। राष्ट्रीय राजधानी में वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए सिरसा ने कहा कि प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई जारी रहेगी, लेकिन वाहनों पर प्रतिबंध मनमानी आयु सीमा के बजाय विज्ञान और आंकड़ों के आधार पर होना चाहिए।

सिरसा ने कहा, ₹हमारे अनुरोध के बाद सीएक्यूएम ने लोगों की चिंताओं के प्रति संवेदनशीलता दिखाई है। यह दिल्लीवासियों के लिए बड़ी राहत है।₹ दिल्ली-एनसीआर में वायु गुणवत्ता पर केंद्र सरकार के पैनल सीएक्यूएम ने मंगलवार को राष्ट्रीय राजधानी में उम्रदराज वाहनों पर ईंधन प्रतिबंध के क्रियान्वयन को एक नवंबर तक स्थगित करने का निर्णय लिया।

पहले जारी किए गए निर्देशों के अनुसार, ऐसे वाहनों को एक जुलाई से दिल्ली में ईंधन नहीं दिया जाना था, चाहे वे किसी भी राज्य में पंजीकृत हों। सिरसा ने पिछले सप्ताह सीएक्यूएम से ऐसे वाहनों के खिलाफ कार्रवाई रोकने का अनुरोध किया था, उन्होंने इस कदम को ₹समय से पहले और संभावित रूप से प्रतिकूल₹ बताते हुए "परिचालन और बुनियादी ढांचे की चुनौतियों₹ का हवाला दिया था।

मंत्री ने जोर देकर कहा कि प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए, लेकिन नीतियां उम्र के बजाय उत्सर्जन के आंकड़ों पर आधारित होनी चाहिए। उन्होंने कहा, ₹हम वास्तविक प्रदूषण के स्तर का आकलन करने के लिए उचित अध्ययन करेंगे और अपने निष्कर्षों के साथ सुप्रीम कोर्ट और नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) से संपर्क करेंगे।

प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए, लेकिन सिर्फ इसलिए नहीं कि वे पुराने हैं। कोई भी नीति उम्र के बजाय उत्सर्जन के आंकड़ों पर आधारित होनी चाहिए।" उन्होंने पिछली सरकार के दौरान लगभग 80,000 वाहनों को स्क्रैप करने पर भी गंभीर चिंता जताई। कहा, ₹दिल्ली में कोई उचित स्क्रैपिंग सुविधा नहीं है। हम जानना चाहते हैं कि वे वाहन कहां गए। इस बारे में गहन जांच शुरू की जाएगी।"

## दिल्ली मेट्रो के यात्रियों के लिए गुड न्यूज, अब रेड लाइन समेत इस रूट की 75 ट्रेनों में होगी ये खास सुविधा

दिल्ली मेट्रो की रेड और ब्लू लाइन पर चलने वाली पुरानी ट्रेनों में अब आधुनिक एलसीडी डिस्प्ले सिस्टम लगाए जा रहे हैं। इससे यात्रियों को अगले स्टेशन समय और अन्य जरूरी सूचनाएं ऑडियो-वीडियो के माध्यम से मिलेंगी। स्टेशनों पर लगे पीआइडीएस को भी अपग्रेड किया जा रहा है ताकि यात्रियों को ट्रेनों के आगमन की सही जानकारी मिल सके। यह कार्य 2027 तक पूरा हो जाएगा।

**नई दिल्ली।** दिल्ली मेट्रो की रेड लाइन (रिठाला-शहीद स्थल न्यू बस अड्ड गाजियाबाद) व ब्लू लाइन (द्वारका सेक्टर 21-नोएडा इलेक्ट्रानिक सिटी/वैशाली) पर चलने वाली 75 पुरानी मेट्रो ट्रेनों के यात्री सूचना डिस्प्ले सिस्टम (पीआइडीएस) को बदलकर अत्याधुनिक एलसीडी आधारित डिस्प्ले सिस्टम लगाए जा रहे हैं। इसके माध्यम से मेट्रो में सफर के दौरान यात्रियों को अगले स्टेशन व समय की जानकारी के साथ-साथ ऑडियो व वीडियो के माध्यम से अन्य आवश्यक जानकारियां भी मिल सकेंगी। इससे यात्री को सफर में बेहर अनुभव हो सकेगा।

दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) का कहना है कि पुरानी मेट्रो ट्रेनों के गेट के ऊपर स्टेशनों के नाम लिखे रूट मैप लगे थे। इसके अलावा एलईडी आधारित स्क्रीन की सुविधा थी। इसके माध्यम से अगले स्टेशन व दरवाजे किधर खुलेंगे इसकी जानकारी मिलती थी। इसकी जगह अब इसे एलसीडी आधारित डिस्प्ले सिस्टम लगाए जा रहे हैं। जिस पर अगले स्टेशन, दरवाजे खुलने व समय की जानकारी मिलती है। इसके अलावा परिचालन से जुड़ी आवश्यक जानकारियां भी ऑडियो व वीडियो के रूप में प्रसारित की जाती है। इसका मकसद यात्रियों को मेट्रो में सफर के दौरान सतर्क रहने के प्रति जागरूक करना है।

मेट्रो ट्रेनों के गेट के ऊपर लगे रूट मैप की जगह भी एलसीडी आधारित डिस्प्ले सिस्टम लगाया जा रहा है। दोनों मेट्रो लाइन के अब तक 30 मेट्रो में ये डिस्प्ले सिस्टम लगाए जा चुके हैं। शेष 45 मेट्रो ट्रेनों में वर्ष 2027 तक एलसीडी डिस्प्ले सिस्टम लगाने का काम पूरा होगा। इसके अलावा मेट्रो स्टेशनों पर लगे पीआइडीएस भी बदले जा रहे हैं। एनसीआर में 289 मेट्रो स्टेशन हैं। इन स्टेशनों पर कुल 1462 पीआइडीएस लगे हुए हैं। इसके माध्यम से स्टेशन पर ट्रेनों के आगमन के समय व कोच की संख्या की जानकारी दी जाती है। डीएमआरसी के अनुसार वायलेट लाइन पर कश्मीरी गेट से जनपथ के बीच सात स्टेशनों के 44 पीआइडीएस हाल ही में अपग्रेड किए गए हैं। इसके अलावा अभी येलो लाइन पर जीटीबी नगर से कुतुब मीनार के बीच 18 स्टेशनों के प्लेटफार्म के 72 पीआइडीएस और कानकोर्स पर लगे 38 पीआइडीएस अपग्रेड किए जा रहे हैं।

## दिल्ली में यहां जान जोखिम में डालकर सड़कों पर चलते हैं लोग, तो फुटपाथ पर बिकती हैं गाड़ियां

परिवहन विशेष न्यूज

**दिल्ली।** फुटपाथ इसलिए बनाएं जाते हैं, ताकि एक राहगीर सुरक्षित चल सके। लेकिन यमुनापार में फुटपाथ वाहनों के शोरूम बने हुए हैं। फुटपाथ पर गाड़ियां बेची जा रही हैं। राहगीरों को अपनी जान जोखिम में डालकर वाहनों के बीच सड़क पर चलने को मजबूर होना पड़ रहा है।

उनके जीवन को बचाने के लिए पुलिस, निगम व जिला प्रशासन बेबस नजर आते हैं। आरोप है कि सबकुछ आंखों के सामने होने के बाद भी अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों को नजर नहीं आता है।

एक सिंगल सड़क नहीं है, जिसपर प्रशासन व निगम यह दावा कर सके कि इस सड़क का फुटपाथ अतिक्रमण मुक्त है। जोन चेयरमैन से लेकर जिला विकास समितियों के चेयरमैन के यहां तक स्थिति बहुत खराब है।

बाबरपुर सौ फुटा रोड, वजीराबाद रोड, सूरजमल विहार, पटपड़गंज रोड गीता कालोनी, झील खुरंजा, मयूर विहार समेत कई सड़कों के फुटपाथ वाहनों के शोरूम बने हुए हैं। सौ फुटा रोड बाबरपुर का सबसे बुरा हाल है। रोड के दोनों साइड पुराने वाहनों को बेचने वाले एजेंट ने शोरूम बनाएं हुए हैं।

फुटपाथ से लेकर सड़क की दो लेन तक इन एजेंट्स ने घेरी हुई है। इस सड़क पर तीन स्कूल हैं। विद्यार्थियों से लेकर आम राहगीर सड़क पर चलते हैं, क्योंकि फुटपाथ

पर चलने के लिए उन्हें जगह नहीं मिलती है। फुटपाथ पर करीब एक हजार वाहन खड़े होते हैं। सौ फुटा रोड पर कबीर नगर की गली नंबर-एक संकरी गली है, यहां एजेंट्स ने फुटपाथ के साथ ही गली भी घेर रखी है।

आरोप है कि यहां एजेंट्स के अलावा सामान लेने के लिए आने वाले व्यक्ति अपना वाहन खड़ा नहीं कर सकता है। एजेंट्स उसे वाहन ही खड़ा नहीं करने देते हैं। अगर कोई वाहन खड़ा करता है तो वह कहते हैं पुलिस, प्रशासन और निगम को इसी बात का पैसा देते हैं, ताकि अतिक्रमण करने में कोई दिक्कत नहीं आती है।

वह कार्रवाई से इसलिए नहीं डरते हैं, क्योंकि टीम के पहुंचने से पहले ही उन्हें उनके आने की सूचना मिल जाती है। यह वह सड़क है, जहां शाहदरा के एसडीएम तपन झा ने दावा किया था कि अवैध रूप से सड़कों व फुटपाथ पर बेचने वालो पर कार्रवाई होगी, लेकिन कुछ नहीं हुआ। जिला पुलिस उपायुक्त सतीश कुमार को फोन किया, लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो सका।

**कड़कड़डूमा कोर्ट के पास फुटपाथ पर सजता है वाहनों का बाजार**

कड़कड़डूमा कोर्ट के पास फुटपाथों का भी बुरा हाल है। यहां सूरजमल विहार रोड पर फुटपाथ पर वाहनों का पूरा बाजार लगता है। ऐसा नहीं है कि यहां बाजार एक ही दिन लगता है।

रोजाना एक जैसे हालत होते हैं, लेकिन निगम व पुलिस की कार्रवाई यहां नजर नहीं आती है। सड़क पर राहगीर चलते हैं, हादसे की संभावना बनी रहती है। फुटपाथ पर राहगीरों को चलने के लिए जगह मिले, ऐसा कभी यहां होते नहीं देखा गया।

**फुटपाथ से लेकर सड़क पर बिकने के लिए सजते हैं वाहन**

गीता कालोनी में पटपड़गंज रोड व झील खुरंजा में वाहन बेचे जाने के लिए फुटपाथ से लेकर सड़कों पर सजाए जाते हैं। सड़क पर 500 से अधिक संख्या में वाहनों के खड़े होने से रास्ता संकरा हो जाता है, इससे सड़क पर जाम लगता है। यहां हालात ऐसे हैं कि उस जाम में कई बार राहगीर को भी फंसना पड़ता है। यहां के स्थानीय लोगों का आरोप है कि सरकारी विभाग अपनी आंखे मूंदे हुए हैं। अतिक्रमण करने वालों का दुस्साहस बढ़ता जा रहा है। वाहन बेचने के लिए उनके पास पर्याप्त जगह नहीं है, फुटपाथ को ही शोरूम बना देते हैं।

दिल्ली नगर निगम सड़क व फुटपाथ पर अतिक्रमण करने वालों पर कार्रवाई समय-समय पर करती है। जहां भी अतिक्रमण है, वहां से हटाया जाएगा।

*मुकेश बंसल, डिप्टी जोन चेयरमैन शाहदरा उत्तरी जोन।*

पूर्वी दिल्ली में फुटपाथ राहगीरों के लिए सुरक्षित रास्ते की बजाय वाहनों के शोरूम बन गए हैं। बाबरपुर सौ फुटा रोड वजीराबाद रोड समेत कई सड़कों पर अतिक्रमण है जिससे राहगीरों को सड़क पर चलने को मजबूर होना पड़ रहा है। कड़कड़डूमा कोर्ट के पास भी फुटपाथों पर वाहनों का बाजार लगता है। निगम का कहना है कि अतिक्रमण हटाने के लिए कार्रवाई की जाएगी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

## ओड़िशा में स्टेयरिंग छोड़ने को लेकर चालकों का आंदोलन, चालक संघ का 6 सूत्री मांग

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

**भूबनेश्वर :** आज से ओड़िशा मे 2 लाख ड्राइवर बस और ट्रक नहीं चला पाएंगे। ऑटोरिक्शा और कार भी सड़कों पर नहीं चलेंगे। ओडिशा ड्राइवर्स एसोसिएशन ने विशेष कानून की मांग को लेकर चक्काजाम शुरू कर दिया है। दूसरी ओर, मजदूर संगठनों ने बुधवार को देशभर में आम हड़ताल का आह्वान किया है। वामपंथी दलों ने भी हड़ताल का समर्थन किया है।परिणामस्वरूप, आम आदमी का जीवन काफी हद तक प्रभावित होने का खतरा है। महासंघ के अध्यक्ष प्रशांत मेंडुली की जानकारी के अनुसार, हमने सरकार को डेढ़ महीने का समय दिया है। लेकिन, सरकार ने एक बार भी चर्चा के लिए नहीं बुलाया है। हमें विरोध-आधारित रुख अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ा है। विभिन्न सरकारी वाहन, स्कूल बस, एम्बुलेंस, ओमफेड दूध ले जाने वाले आवश्यक वाहन विरोध प्रदर्शन से प्रतिबंधित कर दिए गए हैं। उन्होंने सभी श्रेणियों के ड्राइवरों से इस विरोध में शामिल होने की अपील की है। कुछ जिला ड्राइवर संघों ने स्पष्ट कर दिया है कि वे स्टीयरिंग व्हील हड़ताल में शामिल नहीं होंगे। नतीजतन, महासंघ 2 विफल हो गया है। ओडिशा रोड ट्रांसपोर्ट वर्कर्स महासंघ मील मंच ने इस विरोध का विरोध किया है। संगठन सचिव संतोष साहू ने कहा कि राज्य में 35 यूनियन हैं, लेकिन एक संगठन विरोध में

शामिल हो गया है। यह विरोध प्रदर्शन अपने वर्चस्व का दावा करने और अपने हितों को हासिल करने के लिए बुलाया गया है। सरकार को पटरी से उतारने की साजिश है। अगर सरकार सुरक्षा प्रदान करती है, तो वाहनों की आवाजाही सामान्य हो जाएगी। ट्रक और बस मालिक संघ महीनों से परिवहन विभाग द्वारा वाहनों की जांच कर पुलिस को अतिरिक्त अधिकार देने के प्रस्ताव का विरोध कर रहे हैं। दोनों संघों ने परोक्ष रूप से स्टीयरिंग व्हील परित्याग आंदोलन का समर्थन किया है। राज्य निजी बस मालिक संघ के सचिव देवेंद्र कुमार साहू ने कहा कि चालकों की विशेष कानून की मांग वाजिब है। हम यात्रियों की सुविधा के लिए बस आंदोलन को प्राथमिकता देते हैं। हालांकि, चालकों के विरोध की स्थिति को देखने के बाद संघ निर्णय की घोषणा करेगा। राज्य ट्रक मालिक संघ के अध्यक्ष पुरंजन पाढ़ी के अनुसार, राज्य में अधिकांश चालक ट्रक, मिनी ट्रक और हाइवा चलाते हैं। उनके विरोध के कारण ट्रकों का आवागमन असंभव है। हम स्टीयरिंग व्हील परित्याग आंदोलन का समर्थन करते हैं। संघ की मांग थी कि ऑटो चालकों को ओडिशा मोटर परिवहन चालक एवं श्रमिक कल्याण बोर्ड में शामिल किया जाए। 60 साल के बाद पेंशन, दुर्घटना में मरने वाले चालकों के परिवारों को 20 लाख की बीमा राशि प्रदान की जाए। दुर्घटनाओं में इलाज के लिए 5 लाख रुपये दिए जाएं। हर 100 किमी पर चालकों के लिए विश्राम कक्ष और शौचालय बनाए जाएं। ड्राइविंग का समय तय किया जाए। ड्राइविंग लाइसेंस फीस घटाकर 15 हजार रुपए की जाए। हर खदान व फैक्ट्री में 70 प्रतिशत चालकों को काम में प्राथमिकता दी जाए। एक सितंबर को राष्ट्रीय चालक दिवस घोषित किया जाए। दूसरी ओर आरोप लगाया गया है कि चालक महासंघ स्टीयरिंग व्हील हड़ताल के दौरान सरकारी बस सेवा बंद करने की साजिश कर रहा है। महासंघ के अध्यक्ष प्रशांत मेंडुली का एक ऑडियो वायरल हुआ है, जिसमें उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं से प्रत्येक स्टॉपेज पर एक घंटे के लिए सरकारी बसों को रोकने का आह्वान किया है। इस ऑडियो के वायरल होने के बाद शासन स्तर पर इससे निपटने की योजना शुरू हो गई है। उक्त ऑडियो में श्री मेंडुली सदस्यों से पूरी तरह शांतिपूर्ण तरीके से विरोध प्रदर्शन करने की बात कह रहे हैं। लेकिन वे सरकारी चालकों को समझाने के लिए हर स्टॉपेज पर आधे से एक घंटे तक सरकारी बसों को रोकने पर जोर दे रहे हैं। उनका कहना है कि यदि सरकारी बसें निर्धारित समय से 5/6 घंटे देरी से आती हैं, तो संबंधित सरकारी वाहन का चालक वाहन छोड़ने को मजबूर होगा। उन्होंने ऑडियो में किसी भी प्रशासनिक अधिकारी या नेता की बातों में न आने की सलाह दी है।

# शिव शयन चतुर्दशी आज

सृष्टि का पालनहार भगवान विष्णु का आषाढ़ मास की देवशयनी एकादशी यानी रविवार से 4 महीने के लिए शयन काल शुरू हो गया है। भगवान विष्णु के शयन पर जाने के बाद अब शिवजी भी योग निद्रा में जाने वाले हैं। इस तिथि को शिव शयनोत्सव के नाम से जाना जाता है। भगवान शिव शयन काल में जाने से पहले अपने एक अन्य स्वरूप रुद्र को सृष्टि का कार्यभार सौंप देते हैं। शास्त्रों में बताया गया है कि भगवान रुद्र का शासन राष्ट्रपति के शासन काल की तरह होता है, जिसमें सभी नियमों का पूरी तरह पालन करना होता है।

**इस तरह कार्यभार देखते हैं रुद्र**

==========

रुद्र भगवान जब सृष्टि का दायित्व संभालते हैं, तब उनकी नजर आपकी गलतियों पर बनी रहती है और धर्म अध्यात्म के कार्य करने वालों की इच्छा भी जल्दी पूरी होती है। ऋग्वेद में रुद्र की स्तुति 'बलवानों में सबसे अधिक बलवान' कहकर की गयी है। यजुर्वेद का रुद्राध्याय, रुद्र देवता को ही समर्पित है। रुद्र को ही कल्याणकारी होने से शिव कहा गया है। इसलिए इन दिनों रुद्र भगवान की पूजा करना सबसे अधिक फलदायी मानी गई है। भगवान रुद्र जल्द ही प्रसन्न हो जाते हैं और क्रोध भी इनको जल्दी ही आता है। सृष्टि का कार्यभार संभालने के दौरान जब वह किसी के कर्मों से प्रसन्न होते हैं, उसकी सभी समस्याओं को खत्म कर देते हैं। वहीं जिस पर क्रोध आता है तो उसको कई तरह समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

**शिव शयनोत्सव के बाद आएगा सावन मास**

==========

शिव शयनोत्सव के बाद सावन मास का प्रारंभ होता है और इस दौरान सावन सोमवार का व्रत का विशेष महत्व है। इस मास में शिव पूजा और सावन स्नान की परंपरा शुरू होती है। शिवपुराण में बताया गया है कि सावन सोमवार का व्रत रखने वाले व्यक्ति की हर मनोकामना पूरी होती है। भगवान शिव को प्रिय होने के अलावा सावन मास अन्य कारणों से भी शुभ फलदायी माना गया है। इसी महीने सागर मंथन की शुरुआत हुई थी और मार्कंडेय ने भी अपनी लंबी उम्र की तपस्या के लिए इस माह को चुना था। इस माह शिव भक्तों द्वारा कावंड़ यात्रा का आयोजन किया जाता है।

**चातुर्मास में न खाएं ये चीजें**

==========

चातार्मास के दौरान भगवान विष्णु क्षीर सागर में शयन करते हैं। मान्यता है कि भगवान इस दिन से 4 मास तक पाताल में राजा बलि के द्वार पर निवास करके कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी को लौटते हैं। इसीलिए, आषाढ़ी शुक्ल पक्ष की एकादशी को 'देवशयनी' और कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी को 'प्रबोधिनी' या 'देवउठनी' एकादशी कहते हैं। इन 4 महीने में यज्ञोपवीत, विवाह संस्कार, गृह प्रवेश, मुंडन सहित सभी मांगलिक कार्य बंद हो जाते हैं। ज्योतिषाचार्यों के मुताबिक, चातुर्मास के पहले महीने श्रावण में हरी सब्जी, भाद्रपद में दही, आश्विन में दूध और कार्तिक में दाल नहीं खानी चाहिए। चातुर्मास में पान मसाला, सुपारी, मांस और मदिरा का सेवन भी वर्जित है।

# सावन सोमवार व्रत पर भोलेनाथ को लगाएं आम की इस खास मिठाई का भोग, बेहद आसान है बनाने का तरीका

इस साल सावन का पावन महीना 11 जुलाई से शुरू होकर 9 अगस्त तक चलेगा। इस दौरान भगवान शिव की पूजा-अर्चना का विशेष महत्व होता है खासकर Sawan Somvar Vrat का। अगर आप भी इस सावन सोमवार पर भोलेनाथ को कुछ खास और स्वादिष्ट भोग लगाना चाहते हैं तो आम की यह अनोखी मिठाई एकदम सही रहेगी। इसे बनाना बेहद आसान है और यह झटपट तैयार हो जाती है।

11 जुलाई, शुक्रवार से सावन का महीना शुरू हो जाएगा, जिसमें शिव भक्त पूरी श्रद्धा से भोलेनाथ को प्रसन्न करने में जुट जाते हैं। सावन सोमवार का व्रत रखकर भगवान शिव की पूजा-अर्चना की जाती है। बता दें, इस दिन भक्तजन भगवान शिव को कई तरह के भोग लगाते हैं।

ऐसे में, अगर आप भी आने वाले सावन सोमवार पर भोलेनाथ को कुछ खास और स्वादिष्ट भोग लगाना चाहते हैं (Sawan Somvar Vrat Recipe), तो मैंगो पेड़ा एक बेहतरीन ऑप्शन है। पहली बात, तो ये कि यह बनाने में बेहद आसान है और दूसरा इसका स्वाद भी बेहद लाजवाब होता है।

**मैंगो पेड़ा बनाने के लिए सामग्री**

पके हुए आम का गूदा (पल्प): 1 कप

मावा (खोया): 1.5 कप (या 150 ग्राम पनीर को कद्दूकस करके भी ले सकते हैं)

चीनी: ½ कप (आप अपने स्वाद के अनुसार कम या ज़्यादा कर सकते हैं)

घी: 1 चम्मच

इलायची पाउडर: ½ छोटा चम्मच

गार्निश के लिए: बारीक कटे हुए पिस्ता या बादाम

यह भी पढ़ें- Sawan Somvar Vrat 2025: सावन सोमवार के दिन कब और कैसे करें महादेव की पूजा, यहां जानें सबकुछ

**मैंगो पेड़ा बनाने की विधि**

सबसे पहले एक पका हुआ आम लें, उसे छीलकर छोटे टुकड़ों में काट लें। इन टुकड़ों को मिक्सी में डालकर एकदम चिकना गूदा (पल्प) बना लें।

एक नॉन-स्टिक पैन में 1 चम्मच घी गरम करें। इसमें मावा (या कद्दूकस किया हुआ पनीर) डालकर धीमी आंच पर लगातार चलाते हुए हल्का सुनहरा होने तक भून लें। ध्यान रहे, मावा जलना नहीं चाहिए। इसे एक प्लेट में निकाल कर ठंडा होने दें।

उसी पैन में आम का गूदा डालें और धीमी आंच पर तब तक पकाएं जब तक उसका पानी सूख न जाए और वह गाढ़ा न हो जाए। इसे भी लगातार चलाते रहें।

जब आम का गूदा गाढ़ा हो जाए, तो इसमें भुना हुआ मावा और चीनी डालकर अच्छी तरह मिला लें। इस मिश्रण को धीमी आंच पर तब तक पकाएं जब तक यह पैन का किनारा न छोड़ने लगे और एक साथ इकट्ठा न होने लगे।

अब इसमें इलायची पाउडर डालकर अच्छी तरह मिलाएं और गैस बंद कर दें।

मिश्रण को एक प्लेट में निकालकर हल्का ठंडा होने दें। इतना ठंडा हो जाए कि आप उसे हाथ से छू सकें।

अब हाथ पर थोड़ा-सा घी लगाकर चिकना कर लें। मिश्रण का थोड़ा-सा हिस्सा लेकर अपनी पसंद के अनुसार गोल या ओवल शेप में पेड़े बना लें। आप चाहें तो पेड़े के बीच में उंगली से हल्का दबाकर डिजाइन भी बना सकते हैं।

तैयार पेड़ों को बारीक कटे हुए पिस्ता या बादाम से सजाएं और भोलेनाथ को भोग लगाकर प्रसाद के तौर पर ग्रहण करें।

## किडनी की पथरी

सरफोंका 12 ग्राम
गोखरू 6 माशा
गोक्षरादी गुग्गाल 1 गोली
सरफोका और गोखरू को कूटकर 250 ग्राम पानी में रात भीगा दें, प्रात आग पर आधा जल जला दें, और छानकर 24 ग्राम मधु मिलाकर 1 गोली गोक्षरादि गूगल खाकर यह क्वाथ सेवन कर लें।
पार्किंसन ( कम्पन रोग)
चोपचिनी
अश्वगंधा
सोंठ
गुलाब के फूल
सभी को 24,24 ग्राम लेकर पीसकर 6,6 माशा की 16 पुड़िया बनाए, प्रात साय सनाय के काढ़े से लें।

# मृत्यु के बाद आत्मा का क्या होता है?

मृत्यु के बाद आत्मा के साथ क्या होता है, इस बारे में विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और दर्शनशास्त्रों में अलग-अलग दृष्टिकोण हैं:

**धार्मिक दृष्टिकोण:**

1. पुनर्जन्म: हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म में आत्मा को कर्म के आधार पर नए शरीर में पुनर्जन्म लेने की मान्यता है।

2. स्वर्ग या नर्क: ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म में आत्मा का न्याय किया जाता है और उनके कर्मों के आधार पर स्वर्ग या नर्क में भेजा जाता है।

**दार्शनिक दृष्टिकोण:**

1. भौतिकवाद: कुछ लोगों का मानना है कि आत्मा मृत्यु के बाद समाप्त हो जाती है।

2. आध्यात्मवाद: अन्य लोगों का मानना है कि आत्मा एक आध्यात्मिक क्षेत्र में जारी रहती है।

**सांस्कृतिक दृष्टिकोण:**

1. पितृ पूजा: कुछ संस्कृतियों में मृतकों को पूर्वजों के रूप में पूजा जाता है।

2. आध्यात्मिक संबंध: अन्य लोगों का मानना है कि आत्मा जीवित लोगों से जुड़ी रहती है।

इन दृष्टिकोणों से हमें मृत्यु के बाद आत्मा के साथ क्या होता है, इस बारे में विविध दृष्टिकोण मिलते हैं।

# जीवन में कुछ भी पीछे बकाया रह जायें तो वह बार-बार हमें लौटने, पूरा करने के लिए मजबूर करता रहता है इसीलिए हमें बार-बार जन्म पर जन्म लेना पड़ता है

इसे एक उदाहरण से समझते हैं, जब हम कार्यालय से कार्यमुक्त होते हैं तब हमें अपने कार्यालय के प्रत्येक खण्ड/यूनिट/विभाग से, जिससे हम कार्य समय में संबंधित रहे होतें हैं, जिनसे लाभ/उपयोगिता प्राप्त की होतीं हैं, ₹कोई बकाया नहीं/नो ड्यूज़₹ सर्टिफिकेट प्राप्त करना होता है ताकि हमारा हिसाब-किताब बराबर किया जा सके। बिल्कुल वैसे ही जीवन-भर हम इस संसार में विविध प्रकार से लाभान्वित लेतें हैं, बहुत से लोगों के साथ संबंधित होतें हैं, किसी से कुछ लेना होता है, किसी को कुछ देना होता है। यह लेना-देना मात्र धन/सम्पत्ति ही नहीं, व्यवहार/प्रेम/ ममता/ स्पर्श/संपर्कखिलाना/पहनाना/उत्साहित करना/सहयोग/स्वीकार करना

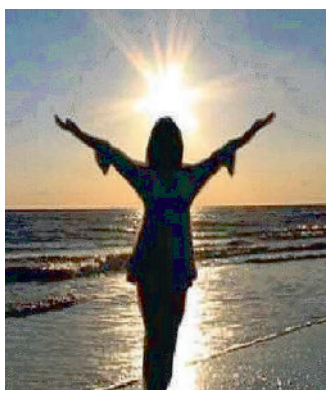

इत्यादि बहुत कुछ हो सकता है। इसके विपरीत के भाव भी यथास्थिति हो सकते हैं। यदि हम अपने-अपने क्रिया-कलाप को ठीक से देखें तो हम किसी के साथ भी यथोचित संबंध पूरा नहीं करते। हम संबंधों/कृत्यों/व्यवहारों/लेन-देन को यथासंभव टालते ही रहतें हैं या किसी भावना में बहकर समत्व निर्णय नहीं ले पाते। सोचतें हैं कि कल/कभी करेंगें, लेकिन कल किसका आया है। जब भी वह कल आया है आज/अभी बनकर आया है और हम उसे अनिश्चितकालीन टालते ही रहें हैं। समय/ परिस्थिति/ अवसर निकल जाता है और हम बाद में मात्र पश्चाताप ही करते रहते हैं। कभी वह व्यक्ति चला जाता है कभी हमें वहां से हटना पड़ता है और बचे सारे जीवन वह बात सालती रहती है कि 'काश हमने ठीक समय पर उसे यह बात बताई होती, तो स्थिति कुछ और होती।' यह तो फिर भी जीवन रहते की बात है लेकिन जीवन तो अनिश्चित है कभी भी अगले पल का इंतजार नहीं करता। जीवन में जो जो काम/व्यवहार/संबंध अधूरे रह जातें हैं उन्हें पूरा करने के लिए, हमें फिर फिर लौट-लौटकर आना पड़ता है तब वह मिल भी जायें तो हम-वह बकाया संबंधों को जानने-समझने में ही समय निकाल देतें हैं। ध्यान रहे कि एक बीज में एक पूरा वृक्ष पैदा करने की क्षमता होती है। एक वृक्ष अनेक फल, और अनेक फलों से अनन्त बीज बनतें हैं। कुछ फल एक बीजी होतें हैं जबकि कुछ फल अनेक बीजी होतें हैं। और अपने अधूरे कृत्यों से हमने, न जाने कितने अगले जन्मों के लिए बीज तैयार कर लियें हैं। वास्तव में हमारी जीवन शैली/प्रवृत्ति बन गई है कि हम क्षण के भी हजारवें हिस्से में बीजारोपण करते रहते हैं और हमारी यही प्रवृत्ति हमारे जीवन-मुक्ति/मोक्ष में बाधक है।

# पिचके हुए फेफड़ों में नई जान भर देंगे 10 सुपरफूड्स

फेफड़ों को हेल्दी बनाए रखने के लिए हमारी डाइट का न्यूट्रिशन से भरपूर होना जरूरी है। ऐसे में कुछ फूड्स ऐसे हैं जैसे कि हल्दी में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण पाया जाता है जबकि अदरक फेफड़ों से टॉक्सिन्स निकालता है। ऐसे ही कुछ और फूड्स भी सेहत को फायदा पहुंचाते हैं। इसलिए इन सुपरफूड्स को डाइट में शामिल करें और फेफड़ों को हेल्दी बनाए रखें।

**नई दिल्ली।** फेफड़े हमारे शरीर का एक महत्वपूर्ण अंग हैं, जो ऑक्सीजन को एब्जॉर्ब कर ब्लड तक पहुंचाते हैं और शरीर से कार्बन डाइऑक्साइड को बाहर निकालते हैं। लेकिन आज के समय में बढ़ते प्रदूषण, स्मोकिंग और अनहेल्दी लाइफस्टाइल के कारण फेफड़ों की कैपेबिलिटी पर असर पड़ने लगा है।

ऐसे में फेफड़ों को हेल्दी बनाए रखने के लिए हमारी डाइट का हेल्दी होना काफी महत्वपूर्ण हो गया है।

कुछ ऐसे सुपरफूड्स हैं जो फेफड़ों की सफाई करने, सूजन को कम करने और इन्फेक्शन से बचाने में मदद करते हैं। जिनके बारे में यहां जानकारी दी गई है, आइए जानते हैं उन सुपरफूड्स के बारे में-

**हल्दी**

हल्दी में करक्यूमिन नामक एंटी-इंफ्लेमेटरी कंपाउंड पाया जाता है, जो फेफड़ों की सूजन को कम करता है और फेफड़ों को डिटॉक्स करने में मदद करता है। यह अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी समस्याओं को कम करने में भी सहायक है।

**अदरक**

अदरक में प्राकृतिक डिटॉक्सिफाइंग गुण होते हैं, जो फेफड़ों से म्यूकस निकालने में मदद करते हैं और फेफड़ों के इन्फेक्शन से भी बचाते हैं।

**लहसुन**

लहसुन में एलिसिन नामक तत्व होता है, जो एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-वायरल गुणों से भरपूर होता है। यह फेफड़ों में होने वाले इन्फेक्शन और इंफ्लेमेशन को कम करने में मदद करता है।

**ग्रीन टी**

ग्रीन टी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स फेफड़ों की कोशिकाओं को पॉल्यूशन और स्मोकिंग से होने वाले नुकसान से बचाते हैं। यह फेफड़ों की सफाई करने में भी मदद करती है।

**सेब**

सेब में फ्लेवोनॉइड्स और विटामिन सी की अच्छी मात्रा पाई जाती है, जो फेफड़ों की कैपेबिलिटी बढ़ाने और बीमारियों से बचाने में मदद करते हैं।यह अस्थमा के मरीजों के लिए भी फायदेमंद होता है।

**बेरीज**

ब्लूबेरी, स्ट्रॉबेरी और रास्पबेरी में एंटीऑक्सीडेंट की अच्छी मात्रा पाई जाती होते हैं, जो फेफड़ों को फ्री-रैडिकल्स से बचाने और कोशिकाओं को डैमेज होने से बचाते हैं।

**गाजर**

गाजर में विटामिन ए और बीटा-कैरोटीन पाया जाता है, जो फेफड़ों की सुरक्षा करते हैं और उनकी कार्यक्षमता को बेहतर बनाते हैं।

**पालक**

पालक में मैग्नीशियम और आयरन पाया जाता है,जो ऑक्सीजन को बेहतर तरीके से अवशोषित करने में मदद करते हैं और फेफड़ों को मजबूत बनाते हैं।

**अखरोट**

अखरोट में मौजूद ओमेगा-3 फैटी एसिड सूजन को कम करता है और फेफड़ों की स्ट्रेंथ में सुधार लाता है।

**अलसी के बीज**

अलसी के बीज भी ओमेगा-3 फैटी एसिड पाया जाता है, जो अस्थमा और फेफड़ों की अन्य बीमारियों में लाभदायक होता है। इन सुपरफूड्स को अपने डाइट में शामिल करके आप अपने फेफड़ों को मजबूत बना सकते हैं और सांस से जुड़ी बीमारियों से बच सकते हैं।

# काजू-किशमिश-बादाम को दूध में उबालकर खाने के फायदे क्या हैं?

काजू-किशमिश-बादाम को दूध में उबालकर खाने के फायदे क्या हैं? जानें लेने का सही तरीका -

अक्सर आपने कुछ लोगों को दूध के साथ बादाम, किशमिश और काजू को खाते देखा होगा. लेकिन ऐसा करना कितना फायदेमंद है इसके बारे में पता होना जरूरी है. आज का हमारा लेख इसी विषय पर है. आज हम आपको अपने इस लेख के माध्यम से बताएंगे कि आप यदि दूध के साथ किशमिश, काजू, बादाम का सेवन करते हैं तो इससे क्या-क्या फायदे हो सकते हैं.

1.यदि आप दुबले-पतले और कमजोर हैं तो ऐसे में दूध में काजू, किशमिश और बादाम उबालकर लें. ऐसा करने से न केवल फिट और हेल्दी रहा जा सकता है बल्कि थकान और कमजोरी को दूर करने में भी ये दूध आपके काम आ सकता है.

2.कई समस्याओं को दूर करने के लिए इम्यूनिटी का मजबूत होना बेहद जरूरी है. ऐसे में बता दें कि बादाम, किशमिश और काजू तीनों ही इम्यूनिटी बूस्ट करने में आपके काम आ सकता है.

3.शरीर में हीमोग्लोबिन का स्तर सही होना जरूरी है. स्तर के गिरने से एनीमिया यानि खून की कमी जैसी बीमारियों के लक्षण नजर आ सकते हैं. ऐसे में बता दें कि दूध में यदि काजू, किशमिश और बादाम मिलाकर खाई जाए तो इससे एनीमिया से भी बचा जा सकता है.

4.त्वचा की कई समस्याओं को दूर करने में भी दूध में काजू, किशमिश और बादाम आपके बेहद काम आ सकता है. ऐसे में आप रात को सोने से पहले दूध में इन तीनों को उबालकर पिएं. ऐसा करने से त्वचा भी खिली-खिली नजर आ सकती है.

5.हड्डियां कमजोर होने के कारण अक्सर लोगों को दर्द और सूजन का सामना करना पड़ता है. ऐसे में बता दें कि हड्डियों को मजबूत बनाने में दूध में काजू, किशमिश और बादाम आपके बेहद काम आ सकते हैं. इनमें विटामिन डी, कैल्शियम और मैग्नीशियम पाया जाता है, जिससे जोड़ों के दर्द से भी मुक्ति भी मिल सकती है.

6.सबसे पहले दूध को एक पैन में डालें और फिर उसमें काजू, किशमिश और बादाम को डालें. अब दूध को अच्छे से उबालकर गुनगना करके पिएं.

# दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन तानाशाही के खिलाफ आदि एक पत्र दिल्ली के पर्यावरण मंत्री, श्री मंजिन्दर सिंह सिरसा जी को लिख शिकायत करी.

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट नें कमिसन फॉर एयर क्वाल्टी मनेजमेंट की तानाशाही के खिलाफ एक पत्र दिल्ली के पर्यावरण मंत्री, श्री मंजिन्दर सिंह सिरसा जी को लिख शिकायत करी.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की, कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मेनेजमेंट (CAQM) द्वारा 1.11.2026 से दिल्ली के अंदर BS 4 डीजल (AITP) बसों की एंट्री रोकने के आदेश 3 जून 2025 को जारी कर भारत के बस मालिकों का आर्थिक और मानसिक शोषण करने की साजिश करी है. इसकी भी संभवाना की बस बनाने वाली कम्पनियो को बड़ा फायदा देने की कोशिस भी CAQM कर रहा है, क्योंकि जब पुरानी बसें बंद होंगीं तभी ट्रांसपोर्टर्स मजबूरी में नई बसें खरीदेंगे.

संजय सम्राट का कहना है की हमारी डीजल BS 4 बसें 2020 मार्च तक दिल्ली के पडोसी राज्यों में पंजीकृत हुई थी.क्योंकि पिछले 10 वर्षो से अधिक दिल्ली में कोई भी डीजल बसें और टेम्पो ट्रेवलर दिल्ली में रजिस्ट्रेशन नहीं हो रहे थे. हमारे दिल्ली के ट्रांसपोर्टर्स नें पडोसी राज्यों में डीजल BS 4 बसें रजिस्ट्रेशन कराई थी. 2020 -2022 में करोना महामारी नें विकराल रूप ले लिया. हमारे कुछ मेंबर्स की डेथ भी हुई. इन 3 सालो में पर्यटन उद्योग पूरी तरह बंद हो

गया. हमारी ज्यादातर बसें 3 सालो तक पार्किंग में खड़ी रही. बसों की किस्तें ना देने के कारण हमारी बसों को बैंक वाले और प्राइवेट फाइनेंसर पार्किंग से उठा कर ले गए. कुछ लोगो नें प्राइवेट फाइनेंसर से कर्जा लेकर और घर के सोने जेवरात बेचकर अपनी बसों की किस्तें चुकाई. सरकार या और किसी भी देश की संस्था नें किसी तरह का कोई सहयोग बस मालिकों के लिए नहीं करा.

संजय सम्राट का कहना है इससे पेहले भी सुप्रीम कोर्ट नें डीजल बसें सन 2000 में बंद कर दी थी लेकिन डीजल BS 2 सीरिज जो की प्रदूषण रहित गाड़ियाँ है दोबारा से सन 2001 में दिल्ली में ही गाड़ियों का रजिस्ट्रेशन शरू करा. यें डीजल BS 2 की सीरिज की गाडी अब BS 6 डीजल तक आ गई है. सुप्रीम कोर्ट और NGT नें दिल्ली एनसीआर में डीजल गाड़ियों की पेहले से ही उम्र 10 साल तय करी और पेट्रोल गाड़ियों की 15 साल उम्र तय की. हम उसका भी पालन कर रहे है. जब हमारी डीजल गाड़ियों को 10 साल उम्र दी गई है फिर CAQM हमारी डीजल BS 4 बसों को 6 साल में क्यों बंद कर रहा है?

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन नें पर्यावरण मंत्री जी को पत्र के माध्यम से बताया की यें डीजल बसें हमारे ट्रांसपोर्टर्स नें बड़ी खून पसीने की कमाई से खरीदी है, इनसे ही परिवार की रोजी रोटी चलती है.

एक ट्रांसपोर्टर्स की वजह से ड्राइवर,क्लीनर,हेल्पर,मकेनिक, स्पेयर पार्ट्स, डेंटर,पेंटर, और ना जाने कितने परिवार की रोजी रोटी चलती है.

मंत्री जी, इसलिए आप से विनती है की ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट नें पर्यावरण मंत्री से मांग करी है की हमारी BS 4 डीजल बसों की जितनी उम्र रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट में है उतनी उनको चलती रेहने दी जाए.

और इस आदेश पर पुनर्विचार करके इस आदेश को निरस्त करवाया जाए.

और वास्तव में प्रदूषण करने वाले हवाई जहाज की उम्र चेक करके उनका प्रदूषण चेक कराया जाए. और दिल्ली में प्रदूषण रोकने के लिए कृत्रिम बारिश या अन्य उपाय किये जाये. ना की गाड़ियाँ बिकवाने का धंधा किया जाए.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन नें इस विषय में पर्यावरण मंत्री श्री मंजिन्दर सिंह सिरसा से मिलने का समय भी माँगा है जिस से हम अपने पक्ष को उनके सामने रख सकें.

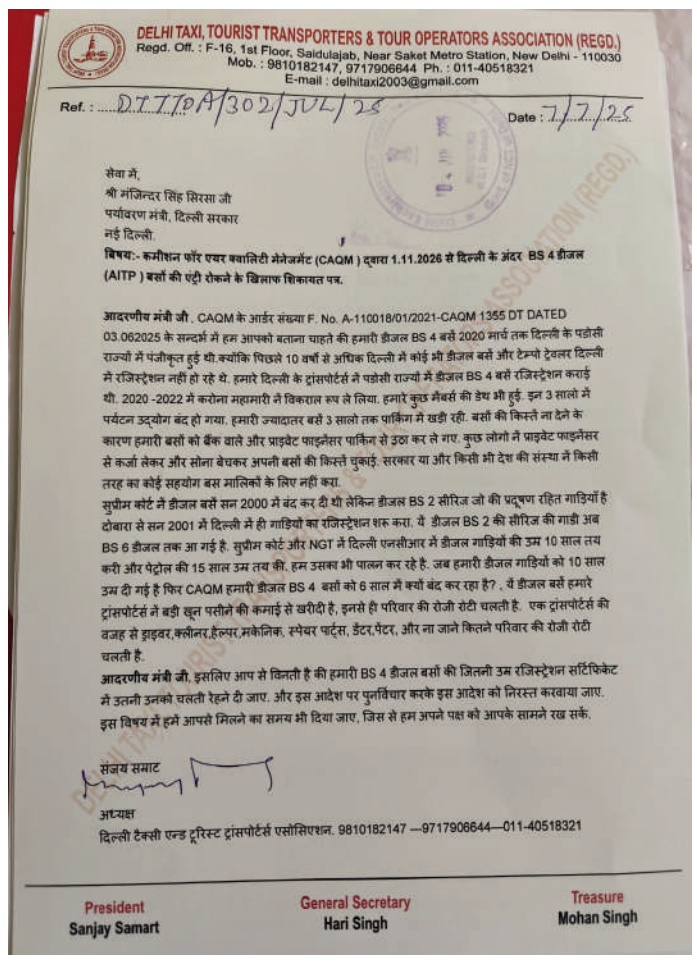

DELHI TAXI, TOURIST TRANSPORTERS & TOUR OPERATORS ASSOCIATION (REGD.)
Regd. Off. : F-16, 1st Floor, Saidulajab, Near Saket Metro Station, New Delhi - 110030
Mob. : 9810182147, 9717906644 Ph. : 011-40518321
E-mail : delhitaxi2003@gmail.com

Ref. : DTTOA/302/JUL/25 Date : 7/7/25

सेवा में,
श्री मंजिन्दर सिंह सिरसा जी
पर्यावरण मंत्री, दिल्ली सरकार
नई दिल्ली.

**विषय:- कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मेनेजमेंट (CAQM) द्वारा 1.11.2026 से दिल्ली के अंदर BS 4 डीजल (AITP) बसों की एंट्री रोकने के खिलाफ शिकायत पत्र.**

**आदरणीय मंत्री जी**, CAQM के आर्डर संख्या F. No. A-110018/01/2021-CAQM 1355 DT DATED 03.062025 के सन्दर्भ में हम आपको बताना चाहते की हमारी डीजल BS 4 बसें 2020 मार्च तक दिल्ली के पडोसी राज्यों में पंजीकृत हुई थी.क्योंकि पिछले 10 वर्षो से अधिक दिल्ली में कोई भी डीजल बसें और टेम्पो ट्रेवलर दिल्ली में रजिस्ट्रेशन नहीं हो रहे थे. हमारे दिल्ली के ट्रांसपोर्टर्स नें पडोसी राज्यों में डीजल BS 4 बसें रजिस्ट्रेशन कराई थी. 2020 -2022 में करोना महामारी नें विकराल रूप ले लिया. हमारे कुछ मेंबर्स की डेथ भी हुई. इन 3 सालो में पर्यटन उद्योग बंद हो गया. हमारी ज्यादातर बसें 3 सालो तक पार्किंग में खड़ी रही. बसों की किस्तें ना देने के कारण हमारी बसों को बैंक वाले और प्राइवेट फाइनेंसर पार्किंग से उठा कर ले गए. कुछ लोगो नें प्राइवेट फाइनेंसर से कर्जा लेकर और सोना बेचकर अपनी बसों की किस्तें चुकाई. सरकार या और किसी भी देश की संस्था नें किसी तरह का कोई सहयोग बस मालिकों के लिए नहीं करा.

सुप्रीम कोर्ट नें डीजल बसें सन 2000 में बंद कर दी थी लेकिन डीजल BS 2 सीरिज जो की प्रदूषण रहित गाड़ियाँ है दोबारा से सन 2001 में दिल्ली में ही गाड़ियों का रजिस्ट्रेशन शरू करा. यें डीजल BS 2 की सीरिज की गाडी अब BS 6 डीजल तक आ गई है. सुप्रीम कोर्ट और NGT नें दिल्ली एनसीआर में डीजल गाड़ियों की उम्र 10 साल तय करी और पेट्रोल गाड़ियों की 15 साल उम्र तय की. हम उसका भी पालन कर रहे है. जब हमारी डीजल गाड़ियों को 10 साल उम्र दी गई है फिर CAQM हमारी डीजल BS 4 बसों को 6 साल में क्यों बंद कर रहा है? , यें डीजल बसें हमारे ट्रांसपोर्टर्स नें बड़ी खून पसीने की कमाई से खरीदी है, इनसे ही परिवार की रोजी रोटी चलती है. एक ट्रांसपोर्टर्स की वजह से ड्राइवर,क्लीनर,हेल्पर,मकेनिक, स्पेयर पार्ट्स, डेंटर,पेंटर, और ना जाने कितने परिवार की रोजी रोटी चलती है.

**आदरणीय मंत्री जी**, इसलिए आप से विनती है की हमारी BS 4 डीजल बसों की जितनी उम्र रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट में उतनी उनको चलती रेहने दी जाए. और इस आदेश पर पुनर्विचार करके इस आदेश को निरस्त करवाया जाए. इस विषय में हमें आपसे मिलने का समय भी दिया जाए, जिस से हम अपने पक्ष को आपके सामने रख सकें.

संजय समाट
अध्यक्ष
दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन. 9810182147 —9717906644—011-40518321

President Sanjay Samart | General Secretary Hari Singh | Treasure Mohan Singh

# जनसंघ के संस्थापक डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन पर आधारित नाट्य 'राष्ट्रवाद का आदिपुरुष' को देखने पहुंचे

मुख्य संवाददाता

**नई दिल्ली :** दिल्ली भाजपा ने जनसंघ के संस्थापक एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन पर आधारित एक नाट्य ₹राष्ट्रवाद के आदिपुरुष₹ की प्रथम प्रस्तुति आज नई दिल्ली के कामानी ओडिटोरियम में रखी जिसे कार्यकर्ताओं के साथ देखने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा एवं दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता भी पहुंचे।

प्रदेश अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा को पुष्प गुच्छ एवं समृती चिन्ह देकर स्वागत किया। नड्डा ने इस डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के राष्ट्रवादी विचारों को सरलता एक नाट्य के रूप में प्रस्तुत करने के लिए दिल्ली भाजपा की सराहना की।

**प्रदेश पदधिकारियों ने दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता का मंच पर अभिनंदन किया।**

अन्य गणमान्य दर्शकों में प्रमुख थे केन्द्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा, विधानसभा अध्यक्ष विजेन्द्र गुप्ता, दिल्ली सरकार में मंत्री सरदार मनजिंदर सिंह सिरसा, आशीष सूद, सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी, सुश्री बांसुरी स्वराज के आलावा वरिष्ठ नेता विनय सहस्रबुदधे एवं श्याम जाजू, अनेक विधायक, पार्षद एवं प्रदेश पदाधिकारी आदि प्रमुख थे।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन पर आधारित नाट्य मंचन की कल्पना की और आज नाट्य करवा कर एक नई प्रेरक रचनात्मक प्रस्तुति कार्यकर्ताओं के समक्ष रखी।

वीरेन्द्र सचदेवा ने नाट्य मंचन से पूर्व गणमान्य अतिथियों, उपस्थित पार्टी नेताओं एवं कार्यकर्ताओं के प्रति अपने स्वागत सम्बोधन में बताया की इस नाटय के निर्माण के पीछे हमारा भाव था सरल भाषा में डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन, उनकी राष्ट्रवाद की कल्पना, शिक्षा, राजनीतिक कार्यों एवं कश्मीर के प्रति समर्पण को जनता के समक्ष रखना।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा की डा. मुखर्जी के जीवन पर आधारित इस नाट्य को सफल बनाने के लिए नैशनल स्कूल एवं ड्रामा एवं श्रीराम कला केंद्र के 58 कलाकारों के साथ एक मुख्य निर्देशक एवं 16 टेक्निकल स्टाफ सहित 75 लोगों की टीम ने प्रबल भूमिका निभाई है। भाजपा के विभिन्न मोर्चों के प्रभारी डा. सुमित भसीन ने युवा मोर्चा, पूर्वांचल मोर्चा एवं मीडिया विभाग के कार्यकर्ताओं के साथ व्यवस्था बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई।

नाट्य मंच से दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता ने कहा की आज हमने डा. मुखर्जी के जीवन पर आधारित नाट्य ₹राष्ट्रवाद का आदिपुरुष₹ का चित्रण कर एक अनूठी शुरूवात की है और हम डा. मुखर्जी के राष्ट्रवादी विचारों को दिल्ली के जन जन तक लेकर जायेंगे।

सीएम रेखा गुप्ता ने कहा डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के राष्ट्रवादी विचार हों या कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाने के लिए बलिदान हो यह आगे आने वाली सदियों तक भारतवासियों को प्रेरणा देते रहेंगे।

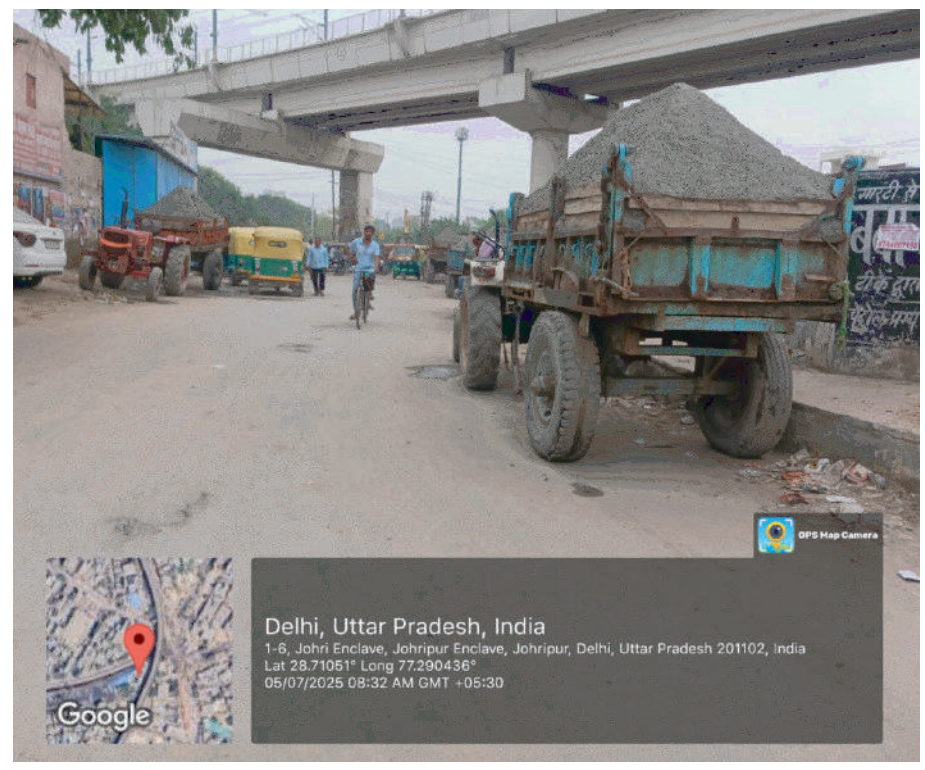


दिल्ली मे रेत रोडी .डस्ट मिट्टी मलवा सीमेंट सरिया और ईंट की ढुलाई मे ट्रेक्टर ट्राली रात दिन बेलगाम दोड रहे है जो सबसे ज्यादा प्रदुषण फैलाते है ट्रेक्टर के पिछे ट्राली मे कोई ब्रेक लाइट नही मुडने के लिए ईनडिकेटर लाइट नही ज्यादातर चालक पर चालक लाइसेंस नही प्रदुषण प्रमाण पत्र नही मान्य वाहन बीमा नहीफिर भी दिल्ली पुलिस .दिल्ली ट्रैफिक पुलिस .दिल्ली परिवहन विभाग की मिलीभगत से हजारो की संख्या मे ट्रेक्टर ट्राली व्यवसायिक कार्य मे हरसमय बेलगाम दोड रहे है जोकी व्यवसायिक कार्य के लिए दिल्ली मे प्रतिबन्धित वाहन है सबसे ज्यादा ध्वनि प्रदुषण धुल प्रदुषण फैलाते है क्या यह दिल्ली मे बेन हो पायेंगे

# ईदगाह कमेटी के अध्यक्ष इसरार खान ने हाफिज गुलाम सरवर और दानिश खान का किया स्वागत

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली:** ईदगाह कोटला गाँव, मयूर विहार कमेटी के सदर इसरार खान उर्फ चुन्नू ने ऑल इंडिया यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हाफिज गुलाम सरवर और डी. के. फाउंडेशन के डायरेक्टर दानिश खान का गर्मजोशी से स्वागत किया।

इस मौके पर कमेटी अध्यक्ष इसरार खान ने जानकारी देते हुए बताया कि वे लगातार समाज के जिम्मेदार लोगों से संवाद कर रहे हैं और उन्हें कमेटी से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि ईदगाह, कब्रिस्तान, मस्जिद और मदरसे के कार्यों को और अधिक व्यवस्थित और विस्तृत रूप से संचालित किया जा सके।

उन्होंने बताया कि वर्ष में दो बार ईद की नमाज़ ईदगाह में अदा की जाती है, पाँच वक्त की नमाज़ मस्जिद में पढ़ी जाती है, और कई गरीब बच्चे मदरसे में तालीम हासिल कर रहे हैं। कब्रिस्तान की देखरेख के लिए भी कमेटी लगातार क्षेत्रीय जिम्मेदार लोगों को साथ जोड़ने की कोशिश कर रही है।

मौजूदा कमेटी के सलाहकार मोमिन अली ने बताया कि ईदगाह कमेटी का कार्यक्षेत्र काफी विस्तृत है और यह लगभग 23 से अधिक मस्जिदों से जुड़ा हुआ है। ऐसे में अधिक संख्या में समर्पित लोगों की आवश्यकता है, जिससे ईदगाह, कब्रिस्तान, मस्जिद और मदरसे से जुड़े कार्य सुचारू रूप से किए जा सकें। साथ ही, इतने बड़े क्षेत्र के संचालन के लिए आर्थिक संसाधनों की भी जरूरत होती है, जो समाज के जिम्मेदार और सेवाभावी व्यक्तियों के जुड़ने से पूरी हो सकती है।

एडवोकेट फैज़ अहमद ने बताया कि कमेटी में लगातार नए मेंबर और वॉलंटियर्स को जोड़ा जा रहा है, ताकि कमेटी के सभी कार्य कुशलता से संपन्न होते रहें।

ऑल इंडिया यूनाइटेड मुस्लिम मोर्चा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हाफिज गुलाम सरवर ने कहा, ₹मुझे खुशी है कि मुझे ईदगाह कमेटी का सदस्य बनकर सेवा करने का अवसर मिला है। मैं अपनी ओर से हर संभव प्रयास करूंगा, ताकि ईदगाह, कब्रिस्तान, मस्जिद और मदरसे की जरूरतें पूरी की जा सकें। एक मुसलमान होने के नाते यह मेरा कर्तव्य है कि मैं अल्लाह के घर की खिदमत करूं। मैं इसरार साहब के नेतृत्व में सबके साथ मिलकर काम करता रहूंगा।₹

वहीं, दानिश खान ने भी भरोसा दिलाया कि वे अपनी संस्था डी. के. फाउंडेशन के माध्यम से कानूनी और प्रशासनिक सहायता प्रदान करते हुए कमेटी के कार्यों को और अधिक प्रभावशाली बनाएंगे। उन्होंने कहा, ₹यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे अल्लाह के घर के कार्य में भागीदारी करने का मौका मिला है। क्षेत्रीय निवासियों की सुविधा सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता है।

इस अवसर पर मोहम्मद सलीम उर्फ गुड्डू, वरिष्ठ पत्रकार शम्स आगाज़, पत्रकार रिज़वान, एम. नफ़ीस रशीद समेत कमेटी के कई अन्य जिम्मेदार सदस्य भी उपस्थित रहे।

# कोर्ट बिल्डिंग की अटकी लिफ्ट, 25 मिनट तक फंसे रहे नौ लोग: फिर ऐसे बची जान

गाजियाबाद कोर्ट की तीन मंजिला इमारत में लिफ्ट खराब होने से चार महिलाओं समेत नौ लोग 25 मिनट तक फंसे रहे। दरवाजा तोड़कर उन्हें बाहर निकाला गया। लिफ्ट पहली मंजिल पर बंद हुई और लोगों का इंटरनेट भी चला गया। अधिवक्ताओं ने सरिये से गेट खोलने की कोशिश की। बार एसोसिएशन ने जिला जज से शिकायत की जिन्होंने मेंटेनेंस का आश्वासन दिया।

**गाजियाबाद।** कोर्ट की तीन मंजिला बिल्डिंग की मंगलवार को लिफ्ट बंद हो गई। इसमें चार महिला सहित नौ लोग सवार थे। सभी लोग 25 मिनट तक फंसे रहे। दरवाजा तोड़कर लोगों को बाहर निकाला गया। इस मामले में बार एसोसिएशन ने जिला जज से शिकायत की है।

कोर्ट की तीन मंजिला बिल्डिंग में सीढ़ी के अलावा लिफ्ट लगी हैं। यहां प्रतिदिन हजारों लोग आते हैं। मंगलवार दोपहर को बिल्डिंग की लिफ्ट में चार अधिवक्ता और पांच अन्य लोग सवार हो गए। पहले फ्लोर पर लिफ्ट बंद हो गई। लिफ्ट में सवार लोगों का इंटरनेट बंद हो गया। नेटवर्क चले गए।

इस पर लोगों ने मदद के लिए शोर मचाया। इस दौरान एक महिला के मोबाइल में नेटवर्क आए तो उन्होंने परिचित को फोन कर मदद मांगी। इसके बाद अधिवक्ताओं ने बाहर से लिफ्ट के गेट को सरिये के जरिये खोलने की कोशिश की। लिफ्ट का थोड़ा सा दरवाजा खुला लेकिन लिफ्ट तेजी से नीचे खिसक गई।

इसके बाद लिफ्ट ग्राउंड और पहले फ्लोर के बीच में अटक गई। अधिवक्ताओं ने सभी लोगों को ऊपर खींचकर लिफ्ट से बाहर निकाला। लिफ्ट में फंसी महिला रेनू अग्रवाल ने बताया कि उनकी आयु 56 वर्ष है। उन्हें जब बाहर की ओर खींचा गया तो उनके पैर में खरोंच आ गई।

गर्मी में लिफ्ट के अंदर उनकी तबीयत खराब हो गई। पंखा नहीं चल रहा था। लिफ्ट में अंधेरा था। बार एसोसिएशन के अध्यक्ष दीपक शर्मा ने कहा कि उन्होंने जिला जज से इसकी शिकायत की है। उन्होंने मेंटेनेंस कराने का आश्वासन दिया है।

# ग्रेटर नोएडा के बीटा दो क्षेत्र में कपड़ा कंपनी के मैनेजर की संदिग्ध मौत

ग्रेटर नोएडा के बीटा दो क्षेत्र में एक किराए के कमरे में कपड़ा कंपनी के मैनेजर शिवम की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। उनकी पत्नी गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती हैं। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और मामले की जांच शुरू कर दी है। शुरुआती जांच में फंदा लगाने की बात सामने आ रही है परिवार में तीन बच्चे भी हैं।

**ग्रेटर नोएडा। बीटा** दो कोतवाली क्षेत्र में किराए के कमरे में कपड़े की कंपनी के मैनेजर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। पत्नी की भी हालत गंभीर है, स्वजन ने उसे अस्पताल में भर्ती कराया है। डाक्टरों ने उसे वेंटीलेटर पर रखा है। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर स्वजन से पूछताछ की। फिलहाल, स्वजन ने किसी भी आरोप से इनकार किया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की बात कही है।

**तीन बच्चे भी हैं पर विार में**

मूलरूप से फतेहपुर जनपद के थाना असोथर अंतर्गत धर्मपुर निवासी शिवम (40) कासना स्थित कपड़े की कंपनी टिम करन में काम कर रहे थे। वह मैनेजर पद पर कार्यरत थे। बीटा दो क्षेत्र के सेक्टर 36 में किराए के कमरे में पत्नी पूजा और तीन बच्चों के साथ रह रहे थे।

सोमवार देर रात रिश्तेदार को संदिग्ध हालात में दंपती कमरे में मरणासन्न हालत में मिले। रिश्तेदार ने उन्हें नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां पर कुछ देर बाद शिवम की मौत हो गई जबकि पत्नी की हालत गंभीर होने के चलते डाक्टरों ने वेंटीलेटर पर रखा है।

"प्रारंभिक जांच में शिवम व पूजा के फंदा लगाने की बात सामने आ रही है। किस बात पर विवाद हुआ, घटना का क्या कारण है, पूजा के होश में आने पर ही पता चलेगा। विभिन्न बिंदुओं पर जांच की जा रही है।"

**-विनोद कुमार, प्रभारी निरीक्षक**

प्रभारी निरीक्षक विनोद कुमार का कहना है कि प्रारंभिक जांच में शिवम व पूजा के फंदा लगाने की बात सामने आ रही है। किस बात पर विवाद हुआ, घटना का क्या कारण है, पूजा के होश में आने पर ही पता चलेगा। विभिन्न बिंदुओं पर जांच की जा रही है।

# गुरुग्राम में अगर कर दी ये गलती तो खानी पड़ सकती है हवालात की हवा, नगर निगम कर रहा 24 घंटे निगरानी

गुरुग्राम नगर निगम ने शहर की सफाई व्यवस्था सुधारने के लिए 254 कचरा संवेदनशील बिंदुओं (जीवीपी) पर निगरानी बढ़ाने का फैसला किया है। संयुक्त आयुक्तों को सुबह जीवीपी पर पहुंचकर रिपोर्ट देनी होगी। अवैध डंपिंग पर सख्त कार्रवाई की जाएगी और नागरिकों से सहयोग की अपील की गई है। निगम ने त्वरित प्रतिक्रिया टीम का भी गठन किया है।

**गुरुग्राम :** साइबर सिटी में सफाई व्यस्था को बेहतर करने के लिए अब शहर में बने 254 कचरा संवेदनशील बिंदुओं (जीवीपी) की निगरानी होगी।

सभी संयुक्त आयुक्त सुबह 11 बजे से पहले जीवीपी पर पहुंचेंगे। इसके साथ ही एक्सईएन, एसडीओ और जेई को ग्रुप में फोटो भेज कर रिपोर्ट देनी होगी।

इसको लेकर नगर निगम आयुक्त प्रदीप दहिया ने आदेश जारी कर दिए हैं। अतिरिक्त निगमायुक्त रविंद्र यादव को इसका इंचार्ज बनाया गया है, जो प्रतिदिन मॉनीटरिंग करेंगे।

बता दें कि शहर में हर कहीं कूड़ा फेंकने के कारण शहर गंदा हो रहा है और नगर निगम की भी छवि खराब हो रही थी।

निगम ने जीवीपी पर कूड़ा डालने के लिए ट्रालियां खड़ी कर रखी हैं। प्रतिदिन सुबह जीवीपी की सफाई होने से शहर को स्वच्छ बनाने में मदद मिलेगी।

**बनाई गई क्वीक रिस्पांस टीम**

शहरवासियों की शिकायतों का शीघ्र समाधान सुनिश्चित करने के लिए जोनवार क्विक रिस्पांस टीम (क्यूआरटी) का गठन किया गया है।

ये टीम किसी भी कचरा या गंदगी से संबंधित शिकायत मिलने पर तत्परता से कार्रवाई करेंगी। इससे यह सुनिश्चित होगा कि कोई भी शिकायत अनदेखी न रह जाए और नागरिकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

**अवैध डंपिंग पर होगी सख्त कार्रवाई, विशेष कार्य बल तैनात**

नगर निगम द्वारा सार्वजनिक स्थलों, सड़कों के किनारे और ग्रीन बेल्ट में अवैध रूप से कचरा या मलबा फेंकने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

इसके लिए विशेष कार्यबल सातों दिन, 24 घंटे निगरानी करेगा। अवैध डंपिंग करते पाए जाने पर संबंधित वाहन को जब्त कर भारी जुर्माना लगाया जाएगा। साथ ही थाने में एफआईआर दर्ज कर कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी।

**नागरिकों से सहयोग की अपील**

नगर निगम ने नागरिकों से भी अपील की है कि वे इस अभियान में सहयोग करें और अवैध डंपिंग करने वालों की पहचान कर निगम को सूचित करें।

ऐसे मामलों की जानकारी फोटो या वीडियो के माध्यम से भेजी जा सकती है, जिसमें वाहन नंबर स्पष्ट रूप से दिखाई दे। इससे निगम त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित कर सकेगा।

**सेक्टर 29 और बसई रोड से हटेंगे मलबे के ढेर**

अभियान के अंतर्गत शहर में विभिन्न स्थानों पर पड़े कंस्ट्रक्शन एंड डेमोलिशन (सीएंडडी) वेस्ट को हटाने का कार्य भी किया जा रहा है।

ऑटो मार्केट बसई रोड और सेक्टर-29 में पड़े मलबे को इंडो एनवायरो इंटीग्रेटेड सर्विस द्वारा एकत्र कर बसई स्थित प्लांट में भेजा जाएगा। इस बारे में निगमायुक्त द्वारा आदेश जारी कर दिए गए हैं।

नगर निगम गुरुग्राम स्वच्छता के प्रति पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है और यह अभियान नागरिकों के सहयोग से एक बड़ी सफलता बनेगा। हम न केवल सफाई व्यवस्था को मजबूत कर रहे हैं, बल्कि अव्यवस्था फैलाने वालों पर सख्ती भी बरतेंगे। मेरा आग्रह है कि सभी नागरिक इस अभियान में सहभागी बनें और एक स्वच्छ, सुंदर व स्वस्थ गुरुग्राम के निर्माण में योगदान दें।

*– प्रदीप दहिया, आयुक्त नगर निगम गुरुग्राम*

# मोदीनगर में कांवड़ खंड़ित होने पर फूटा कांवड़ियों का गुस्सा, कार में की तोड़फोड़, ड्राइवर की हालत गंभीर

मोदीनगर के राजचोपले क्षेत्र में कांवड़ यात्रा के दौरान कांवड़ खंडित होने पर कांवड़ियों ने एक कार में तोड़फोड़ की जिससे कार चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। धार्मिक आस्था के चलते कांवड़ियों का आक्रोश बढ़ गया। स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी जिसके बाद पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित किया और घायल को अस्पताल पहुंचाया।

**मोदीनगर:** राजचोपले क्षेत्र में मंगलवार को कावंड यात्रा के दौरान कांवड़ियों का गुस्सा फूट पड़ा।

हरिद्वार से हरियाणा के मेवात की ओर जा रहे कावंडियों की कावंड खंडित हो गई। जिस पर कांवड़िए भड़क गए।

धार्मिक आस्था के अनुसार कावंड का खंडित होना बहुत बड़ा अपशकुन माना जाता है, जिससे कावंडिए बेहद आक्रोशित हो गए।

इसी गुस्से में कावंडियों ने वहां से गुजर रही एक कार को रोक लिया और देखते ही देखते कार में जमकर तोड़फोड़ शुरू कर दी। इस घटना में कार चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी।

पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित करने की कोशिश की और घायल चालक को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

# कांवड़ यात्रा को लेकर खास इंतजाम, कांवड़ियों को मिलेगी ये विशेष सुविधा

गाजियाबाद में कांवड़ियों के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए स्वास्थ्य विभाग ने व्यापक इंतजाम किए हैं। 100 से अधिक चिकित्सक और 500 से अधिक स्वास्थ्य कर्मी तैनात किए गए हैं जो कांवड़ियों के पैरों में छाले पड़ने पर तुरंत मरहम लगाएंगे। 20 मोबाइल टीमें भी घूमती रहेंगी जिनके पास प्राथमिक उपचार किट और वैक्सीन उपलब्ध होंगी। मेरठ रोड पर अस्थायी अस्पताल खोले जा रहे हैं।

**गाजियाबाद।** यदि किसी कावड़िया के पैर में चलते-चलते छाले पड़ गए हैं तो उसे घबराने की जरूरत नहीं है तुरंत छालों पर मरहम लगाने के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा तैनात किए गए चिकित्सक आ जाएंगे।1

पहली बार स्वास्थ्य विभाग ने जिले की सीमाओं में प्रवेश करने वाले कांवड़ियों की सेहत का विशेष ध्यान रखने के लिए 100 से अधिक चिकित्सक तैनात किए हैं और 500 से अधिक स्वास्थ्य कर्मी आधा किलोमीटर के अंतराल पर तैनात रहेंगे।1

यही नहीं 20 मोबाइल टीम वाहनों पर घूमती रहेंगे।1 इन टीमों के पास प्राथमिक उपचार की किट के अलावा एआरवी और ए एसवी वैक्सीन भी होगी 1कुछ स्वास्थ्य कर्मी कांवरिया के भेष में भी मेरठ रोड पर ड्यूटी करते हुए नजर आएंगे।1

सीएमओ डॉक्टर अखिलेश मोहन ने बताया कि अस्थाई रूप से अस्पताल भी खोले जा रहे हैं। मेरठ रोड पर प्राइवेट अस्पतालों को भी अलर्ट रहने के निर्देश दिए गए हैं 1साथ ही प्राइवेट अस्पतालों में भर्ती किए जाने वाले कांवड़िया का इलाज भी विभाग द्वारा कराया जाएगा।1

एंबुलेंस भी पूरे मार्ग पर तैनात रहेंगे।1 मोदीनगर मुरादनगर भोजपुर और साहिबाबाद क्षेत्र में विशेष चिकित्सा शिविर भी लगाए जाएंगे।1 यह शिविर 24 घंटे चलेंगे और चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य कर्मियों की ड्यूटी का रोस्टर भी 24 घंटे की उपलब्धता के आधार पर लगाई गई है।1

एक अनुमान के अनुसार इस बार 20 लाख से अधिक कांवरिया मेरठ रोड से गुजरेंगे।1 इनमें दिल्ली हरियाणा राजस्थान और पंजाब के कावड़ यह भी शामिल होंगे।

# संसार को ब्रज के महत्व को बताने के लिए किया भगवान श्रीकृष्ण ने ब्रज रज का पान : आचार्य मृदुल कृष्ण गोस्वामी महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

**वृन्दावन।** छटीकरा रोड़ स्थित मृदुल वृन्दावन धाम में द भागवत मिशन फाउंडेशन एवं भागवत परिवार समिति (रजि.) दिलशाद गार्डन,दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे अष्टदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा एवं श्रीगुरू पूर्णिमा महोत्सव के छठवें दिन व्यासपीठ से श्रीहरिदासी वैष्णव संप्रदायाचार्य विश्वविख्यात भागवत प्रवक्ता आचार्य गोस्वामी मृदुल कृष्ण महाराज ने सभी भक्तों-श्रृद्धालुओं को महारास लीला, मथुरा गमन, कंस वध एवं भगवान श्रीकृष्ण और रुक्मिणी विवाह की कथा श्रवण कराई।साथ ही भगवान श्रीकृष्ण और रुक्मणि विवाह की अत्यंत दिव्य व भव्य झांकी सजाई गई।साथ ही विवाह से संबंधित बधाईयों का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया गया।

व्यासपीठ पर आसीन आचार्य गोस्वामी मृदुल कृष्ण महाराज ने महारास का प्रसंग श्रवण कराते हुए कहा कि महारास लीला भगवान श्रीकृष्ण की एक अद्भुत व परम रसमयी लीला है।जिसे उन्होंने असंख्य ब्रजगोपियों के हृदय की अभिलाषा को पूर्ण करने लिए व अभिमानी कामदेव के अभिमान को नष्ट करने के लिए श्रीधाम वृन्दावन के यमुना तट पर शरद पूर्णिमा की रात्रि को किया था।जिसमें उन्होंने अनेकों रूपों में अपनी बांसुरी बजाकर संपूर्ण विश्व को ब्रजमंडल की ओर आकर्षित किया।लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण की महारास लीला के दर्शनों के लिए समस्त देवी-देवताओं के साथ भगवान शिव भी ब्रज गोपी का स्वरूप धारण कर श्रीधाम वृन्दावन पधारे थे।

उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण की महारास में सम्मिलित ब्रजगोपियां कोई साधारण स्त्रियां नहीं थी।वो पूर्व जन्म के महान तपस्वी ऋषि-मुनि थे।जिन्होंने भगवान श्रीकृष्ण को अपने पति के रूप में पाने के लिए अनन्त युगों तक कठोर तपस्या की थी।इसीलिए ब्रजगोपियां भी भगवान श्रीकृष्ण के समान ही परम आनंदमयी व चिन्मयी थीं।

पूज्य महाराजश्री ने कहा कि श्रीमद्भागवत में वस्तुतः भगवान श्रीकृष्ण की समस्त लीलाओं का वर्णन है।श्रीकृष्ण ने बृज में बाल लीलाएं करके समस्त ब्रज

वासियों को आनंद प्रदान करते हुए जीव और ब्रह्म के अंतरंग भेद को समाप्त करके एकत्व की शिक्षा प्रदान की। भगवान ने माखन चोरी करके भक्तों को अद्भुत प्रेम और भक्ति का संदेश प्रदान किया।भगवान ने माखन चोरी लीला करके समस्त भक्तों को बताया कि जो भक्त निस्वार्थ भाव से मुझसे प्रेम करता है, तो मैं उसके प्रेम रूपी माखन को प्रेम से ग्रहण करता हूं।

पूज्य महाराजश्री ने कहा कि भगवान ने ब्रजरज पान करके समस्त संसार को ब्रज के महत्व के बारे मे शिक्षा प्रदान की।साथ ही पृथ्वी तत्व का शोधन किया तथा यमुना के अंदर बसे हुए प्रदूषण रूपी कालीया को नाथ कर भगवान ने समस्त संसार के भक्तों को अद्भुत संदेश प्रदान किया। मेरी भक्ति केवल पूजन पाठ जप तप दर्शन से ही नहीं अपितु प्रकृति की शुद्धि, प्रकृति का संरक्षण एवं प्रकृति की सेवा के द्वारा भी की जा सकती है।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, प्रमुख समाजसेवी दासबिहारी अग्रवाल, महोत्सव के मुख्य यजमान श्रीमती हिना-विकास अग्रवाल, श्रीमती श्याम लता-कुसुम पाल शर्मा, श्रीमती अरुणा शर्मा, आचार्य किशोर कुमार शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा, आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

# विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई 2025 बनाम भारतीय डिजिटल जनगणना 2027- डिजिटल तकनीकी क्रांति

भारत में पहली बार डिजिटल जनगणना होगी-घर बैठे खुद भरे जनगणना का फॉर्म-पहली बार सेल्फ एंट्री की सुविधा- सरकार लॉन्च करेगी खास वेब पोर्टल
भारत में 1 मार्च 2027 से शुरू होने वाली जनगणना,कई माइनों से अनोखी होगी-वार्षिक आय, जाति,मकान सहित अनेक व्यक्तिगत जानकारीयों से बहुत कुछ बदल जाने की संभावना- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर यह सर्वविदित है कि भारत दुनियाँ की सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है,जो142.6 करोड़ से भी अधिक है व चीन से बहुत आगे निकल गया है, जिसमें युवाओं की संख्या सबसे अधिक है जो भारत की सबसे बड़ी ताकत है, जिनके बल पर आज हम तेजी से विकास कर रहे हैं। आज हम आज हम इस जनसंख्या विषय पर चर्चा करने की बात इस एंगल से कर रहे हैं क्योंकि 7 जुलाई 2025 शाम को सरकार से जानकारी आई कि भारत में 2027 में होने वाली जनगणना डिजिटल माध्यम से होगी, यानें घर बैठे हम खुद जनगणना का फॉर्म मोबाइल या किसी अन्य इंस्ट्रूमेंट पर भर सकते हैं, जिसके लिए सरकार एक पोर्टल लॉन्च करेगी। दूसरी बात शुक्रवार 11 जुलाई 2025 को विश्व जनसंख्या दिवस है, मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र, यह मानता हूं कि भारत में 16 वर्षों के बाद जो डिजिटल जनगणना हो रही है उसमें काफी कुछ बदल जाने की संभावना है, यानें यहजनगणना अनोखी होगी, जिसमें जाति सहित अनेको सवालों की बौछार की जाएगी, जैसे फ्रिज टीवी वाहन प्रॉपर्टी घर मकान रोजगार इत्यादि अनेकों सवाल पूछे जाएंगे, आधार कार्ड की संलग्नता भी होगी, यानें जो लोग अभी संपन्न होते हुए भी, पर्दे के पीछे सरकारी योजनाओं का फायदा लाभ उठा रहे हैं, तथा टैक्स से बाहर हैं, उनकी आर्थिक संपन्नता पर्दे के पीछे ही है,सामने में वे हर क्षेत्र में आरक्षण सुविधा स्कीम,सरकारी योजनाओं का लाभ,जाली जाति कार्ड पर चुनाव लड़ रहे हैं, इत्यादि अनेकों लाभ अपात्र होते हुए भी उठा रहे हैं, इस जनगणना से वो पर्दे के पीछे इंजॉय करने वाले भारी मात्रा में सामने आ जाएंगे व टेंक्स के दायरे में आ जाएंगे,व इन सभी सुविधाओं के लाभ को बंद करने की नौबत आने की संभावना है,क्योंकि वित्तीय स्लैब के ऊपर दर्ज होंगे,इसलिए टैक्स के दायरे में आ जाएंगे, दूसरी ओर उनको सरकारी सुविधाएं व लाभ समाप्त होने की संभावना बनी रहेगी।चूँकि विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई 2025 बनाम भारतीय डिजिटल जनगणना 2027, डिजिटल तकनीकी क्रांति के रूप में उभरेगी,इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत में 1 मार्च 2027 से शुरू होने वाली जनगणना,कई माइनों से अनोखी होगी-वार्षिक आय, जाति,मकान सहित अनेक व्यक्तिगत जानकारीयों से बहुत कुछ बदल जाने की संभावना हैं।

साथियों बात अगर हम 7 जुलाई 2025 को सरकार द्वारा भारत के पहले डिजिटल जनगणना के ऐलान की करें तो,भारत में होने वाली अगली जनगणना को लेकर सरकार ने एक बड़ा ऐलान किया है। यह देश की पहली डिजिटल जनगणना होगी,जिसमें आम लोग खुद भी अपनी जानकारी ऑनलाइन दर्ज कर सकेंगे। इसके लिए सरकार एक खास वेब पोर्टल लॉन्च करने जा रही है। इसके अलावा, मोबाइल ऐप के जरिए भी जनगणना का काम पूरा किया जाएगा। सरकार ने कहा है कि नागरिक चाहें तो खुद ही अपनी जनगणना की जानकारी वेब पोर्टल पर दर्ज कर सकते हैं। इसके लिए दो चरणों में जनगणना होगी। पहला चरण 'हाउस लिस्टिंग एंड हाउसिंग सेंसस' यानी घर और मकान की जानकारी, और दूसरा चरण 'पॉपुलेशन एनुमरेशन' यानी जनसंख्या की गिनती। दोनों चरणों में लोग खुद अपनी जानकारी दर्ज कर सकेंगे।कब होगी अगली जनगणना ?जनगणना 2026 और 2027 में दो चरणों में होगी। पहला चरण 1 अप्रैल 2026 से शुरू होगा, जिसमें मकानों की गिनती की जाएगी। दूसरा चरण 1 फरवरी 2027 से शुरू होगा, जिसमें लोगों की जनसंख्या, जाति और बाकी जरूरी जानकारियां जुटाई जाएंगी। इसके लिए 16 जून 2024 को सरकारी अधिसूचना जारी की गई है। यह आज़ादी के बाद भारत की 8वीं और कुल 16वीं जनगणना होगी। 34 लाख कर्मचारियों को दी जाएगी ट्रेनिंगइतने बड़े काम के लिए सरकार ने देशभर में करीब 34 लाख लोगों को नियुक्त किया है। इन कर्मचारियों को तीन स्तरों पर ट्रेनिंग दी जाएगी। पहले राष्ट्रीय ट्रेनर, फिर मास्टर ट्रेनर और आखिर में फील्ड ट्रेनर इन्हें तैयार करेंगे। हर गांव और शहर को छोटे-छोटे हिस्सों में बांटा जाएगा और हर हिस्से के लिए एक कर्मचारी जिम्मेदार होगा। इससे कोई भी घर या व्यक्ति गिनती से न छूटे।.सीमाओं में बदलाव की आखिरी तारीख तय,सरकार ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को आदेश दिया है कि अगर वे अपने जिलों, तहसीलों या पुलिस थानों की सीमाओं में कोई बदलाव करना चाहते हैं, तो उसे 31 दिसंबर 2025 से पहले कर लें। उसके बाद वही सीमाएं जनगणना में अंतिम रूप से मानी जाएंगी। सीमाएं तय करने के तीन महीने बाद ही जनगणना शुरू की जा सकती है। इससे जनसंख्या गिनती में कोई गड़बड़ी नहीं होगी।

साथियों बात अगर हम डिजिटल जनगणना को समझने की करें तो,भारत की 16वीं जनगणना (2025–27) सबसे पायदान पर डिजिटल होगी, जिसमें हम घर बैठे स्वयं अपना फॉर्म भर सकते हैं।डिजिटल-इ-जनगणना क्या है ? यह भारत की पहली 100 पेर्सेंट पूर्णतःडिजिटल सेंसेक्स होगी, बिना कागज़ी फॉर्म के,हम घर से ऑफिशियल पोर्टल या मोबाइल ऐप पर आधार -लिंकड मोबाइल से लॉगिन कर फॉर्म भर सकते हैं।एक बार हमारा डेटा जमा होने के बाद, एक एनुमरेटर (गणना कर्मचारी) घर पर आकर आपके द्वारा भरी जानकारी की सत्यता की पुष्टि करेगा क्या पूछे जाएंगे ?पारंपरिक जनगणना के सवालों (नाम, उम्र, लिंग, जन्मतिथि, वैवाहिक स्थिति, शिक्षा, रोजगार आदि) के साथ अब वस्तुओं की उपलब्धता (मोबाइल, टीवी, फ्रिज, वाहन) और घरेलू सुविधाएं (स्वच्छता, ईंधन, पेयजल स्रोत) के बारे में भी पूछी जाएगी।अनुमानित संख्या'करीब 34–36 प्रश्न होंगे।प्रक्रिया और टाइमलाइन (1) स्वयं-नोंदणी-आप घर से ऑनलाइन फॉर्म भरें और ओटीपी के जरिए सत्यापित करें (2) एनुमरेटर सत्यापन-बाद में सरकारी कर्मचारी हमारे पास आकर डेटा की जांच करेंगे और यदि कोई जानकारी अद्यतन करनी हो तो करेंगे। (3) दो टप्पेःफेज (1) (हाउस लिस्टिंग)-अक्टूबर 2026 से हिमाचल, उत्तराखंड, जम्मू- काश्मीर, लद्दाख सहित कुछ इलाके शुरू होंगे। फेज (2) (पापुलेशन ऐनुमैरेशन), मार्च 2027 से पूरे देश में।डिजिटल इ-जनगणना के फायदे(1) सटीकता व तेज डेटा संग्रह- मैनुअल त्रुटियाँ कम होंगी और परिणाम जल्दी मिलेंगे। (2) लागत और पेपर बचत-कागज़, लॉजिस्टिक आदि पर खर्च कम होगा (3) डेटा सुरक्षा-एन्क्रिप्टेड डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म एवं गोपनीयता में बढ़ोतरी।(4)स्मार्ट गवर्नेंस-नीति निर्धारण,कार्य योजना,निर्वाचन क्षेत्रों का निर्धारण आदि में वास्तविक समय-आधारित डेटा का लाभ।हमारा पहचान प्रमाण (आधार या मोबाइल ओटीपी) के साथ जब पोर्टल लाइव होगा, तब फॉर्म भर सकते हैं।यदि इंटरनेट की सुविधा न हो, तो चिंता न करें-एनुमरेटर हमारे घर आएगा।यह पहला मौका है जब आप घर से ही ऑनलाइन फॉर्म भरेंगे और फिर एनुमरेटर सत्यापन करेगा।डिजिटल प्रक्रिया के कारण भविष्य की योजनाओं में आपकी जानकारी समय रहते सरकारी योजनाओं और संसाधनों को और बेहतर तरीके से लक्षित करने में मदद करेगी।

साथियों बात अगर हम शुक्रवार 11 जुलाई 2025 को विश्व जनसंख्या दिवस व 7 जुलाई 2025 को किए गए भारत के पहले डिजिटल जनगणना के ऐलान की तुलना करें तो, विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई 2025 और पहली बार डिजिटल जनगणना का आपसी संबंध हैं।

(1) विश्व जनसंख्या दिवस का उद्देश्य-हर साल 11 जुलाई को मनाया जाने वाला विश्व जनसंख्या दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1989 में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य जनसंख्या से जुड़े मुद्दों जैसे-स्वास्थ्य, शिक्षा, लैंगिक समानता, गरीबी, और सतत विकास पर वैश्विक जागरूकता फैलाना है।भारत 2025 में पहली बार डिजिटल जनगणना की तैयारी कर रहा है, जिसमें लोग ऑनलाइन माध्यम से स्वयं अपने परिवार की जानकारी भर सकेंगे। यह डिजिटल साक्षरता, डेटा की सटीकता और रियल टाइम प्रोसेसिंग की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है।दोनों के बीच संबंध-जनसंख्या डेटा की सटीकता और अद्यतन जानकारी डिजिटल जनगणना से वास्तविक समय में अद्यतन, गहन और विश्लेषणात्मक जनसंख्या आँकड़े मिल सकेंगे। ये आँकड़े विश्व जनसंख्या दिवस पर जनसंख्या नीति बनाने और सटीक योजना तैयार करने में मदद करेंगे। (2) नीतिगत योजना और संसाधनों का समुचित वितरण, जनसंख्या दिवस पर जनसंख्या विस्फोट, संसाधन वितरण और शहरीकरण जैसे विषयों पर चर्चा होती है। डिजिटल जनगणना से प्राप्त आँकड़ों की मदद से शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, रोजगार जैसे क्षेत्रों में डेटा आधारित योजना बनाना आसान होगा (3) जनसंख्या वृद्धि की डिजिटल निगरानी, डिजिटल जनगणना के ज़रिए यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकेगा कि किन राज्यों या क्षेत्रों में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है।यह जनसंख्या नियंत्रण नीतियों के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करेगा, जिसे विश्व जनसंख्या दिवस पर विशेष रूप से रेखांकित किया जाता है।(4) सतत विकास लक्ष्यों की प्रगति की समीक्षाएसगी में स्वास्थ्य, शिक्षा, और समानता जैसे कई लक्ष्य सीधे जनसंख्या से जुड़े हैं।डिजिटल जनगणना इन लक्ष्यों की ट्रैकिंग में मदद करेगी और जनसंख्या दिवस पर इनका विश्लेषण किया जा सकेगा।विश्व जनसंख्या दिवस 2025 और डिजिटल जनगणना के बीच गहरा संबंध है। दोनों का लक्ष्य है,जनसंख्या से जुड़ी जानकारी को बेहतर तरीके से समझना, ताकि सतत, समावेशी और योजनाबद्ध विकास सुनिश्चित किया जा सके। डिजिटल जनगणना इस दिशा में एक तकनीकी क्रांति है, जो भारत को भविष्य की नीतियों के लिए सशक्त बनाएगी।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई 2025 बनाम भारतीय डिजिटल जनगणना 2027-डिजिटल तकनीकी क्रांतिभारत में पहली बार डिजिटलजनगणना होगी- घर बैठे खुद भरे जनगणना का फॉर्म- पहली बार सेल्फ एंट्री की सुविधा- सरकार लॉन्च करेगी खास वेब पोर्टलभारत में 1 मार्च 2027 से शुरू होने वाली जनगणना कई माइनों से अनोखी होगी-वार्षिक आय,जाति,मकान सहित अनेक व्यक्तिगत जानकारीयों से बहुत कुछ बदल जाने की संभावना हैं।

# दुनिया के सबसे एडवांस फाइटर जेट F-35 की सुरक्षा कर रही महिंद्रा की गाड़ी, इन फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

हाल ही में ब्रिटेन के F-35B स्टील्थ फाइटर जेट ने तिरुवनंतपुरम एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग की। ईंधन की कमी के कारण हुई इस लैंडिंग के बाद जेट की सुरक्षा CISF और महिंद्रा मार्क्समैन को सौंपी गई। महिंद्रा मार्क्समैन B6 स्तर की बैलिस्टिक सुरक्षा से लैस है और इसमें 4x4 व्हील ड्राइव है। तकनीकी खराबी के संदेह के चलते विमान को 48 घंटे तक जमीन पर रखा गया।

**नई दिल्ली।** हाल ही में केरल के तिरुवनंतपुरम एयरपोर्ट पर ब्रिटेन का F-35B स्टील्थ फाइटर जेट ने लैंडिंग की है। यह दुनिया के सबसे महंगे और एडवांस्ड फाइटर जेट्स में से एक है। इस फाइटर जेट की सुरक्षा की कमान CISF के साथ ही Mahindra Marksman को मिली है। यह मार्क्समैन फाइटर जेट की सेफ्टी को बरकरार रखने के लिए CISF की मदद कर रही है। आइए जानते हैं कि आखिर ऐसा क्या हुआ कि F-35B स्टील्थ फाइटर जेट को भारत में लैंड करना पड़ा और महिंद्रा मार्क्समैन किन फीचर्स के साथ आती है?

**क्यों करनी पड़ी इमरजेंसी लैंडिंग?**

HMS Prince of Wales कैरियर स्ट्राइक ग्रुप का F-35B जेट इंडो-पैसिफिक में भारत और ब्रिटेन की साझा नौसेना अभ्यास के बाद उड़ान भर रहा था। इस उड़ान के दौरान फ्यूल कम हो जाने के कारण इसे इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी। इस घटना को सामान्य मानी गई, लेकिन सैन्य जानकारों के अनुसार पूरी तरह से अभूतपूर्व नहीं है। लैंडिंग के बाद तकनीकी खराबी के संदेह के चलते F-35B को 48 घंटों तक जमीन पर ही रखा गया। इस दौरान जेट की सुरक्षा के लिए CISF के साथ Mahindra Marksman को तैनात किया गया है।

**Mahindra Marksman की खुबियां**

महिंद्रा मार्क्समैन B6 स्तर की बैलिस्टिक सुरक्षा कवच के साथ आती है। इसमें 2.2-लीटर mHawk डीजल या 2.6-लीटर डीजल इंजन के साथ पेश किया जाता है। इसे 4x4 व्हील ड्राइव के साथ 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स दिया जाता है। इसमें कई तरह की सुरक्षा सुविधाएं मिलती है। इसमें बहु-स्तरित बुलेटप्रूफ ग्लास, छत हैच, और इंजन, बैटरी और ईंधन टैंक के लिए सुरक्षा दी जाती है। साथ ही सैटेलाइट संचार प्रणाली, अग्नि शमन प्रणाली, रिमोट-नियंत्रित हथियार प्रणाली, लेजर रेंज फाइंडर, रियरव्यू कैमरा और ड्राइवर के लिए एलसीडी स्क्रीन भी दी गई है। इसमें मशीन गन माउंट और फायरिंग पोर्ट के साथ कपोला भी दिया जाता है। Marksman का इस्तेमाल इंडियन स्पेशल फोर्सेस करती है।

महिंद्रा मार्क्समैन B6 स्तर की बैलिस्टिक सुरक्षा कवच के साथ आती है। इसमें 2.2-लीटर mHawk डीजल या 2.6-लीटर डीजल इंजन के साथ पेश किया जाता है। इसे 4x4 व्हील ड्राइव के साथ 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स दिया जाता है। इसमें कई तरह की सुरक्षा सुविधाएं मिलती है। इसमें बहु-स्तरित बुलेटप्रूफ ग्लास, छत हैच, और इंजन, बैटरी और ईंधन टैंक के लिए सुरक्षा दी जाती है। साथ ही सैटेलाइट संचार प्रणाली, अग्नि शमन प्रणाली, रिमोट-नियंत्रित हथियार प्रणाली, लेजर रेंज फाइंडर, रियरव्यू कैमरा और ड्राइवर के लिए एलसीडी स्क्रीन भी दी गई है। इसमें मशीन गन माउंट और फायरिंग पोर्ट के साथ कपोला भी दिया जाता है। Marksman का इस्तेमाल इंडियन स्पेशल फोर्सेस करती है।

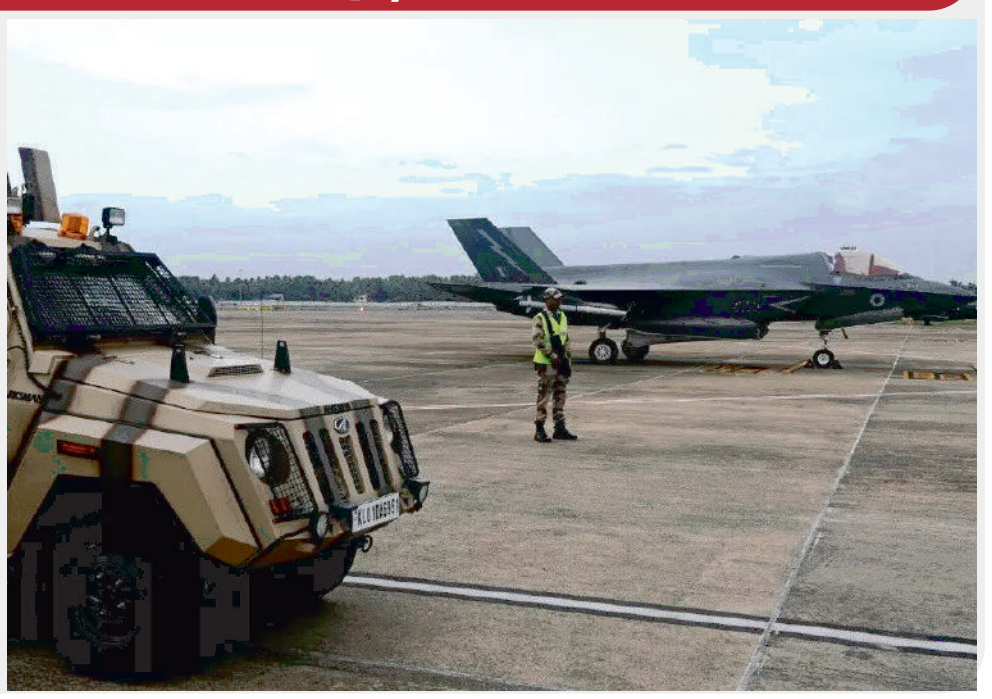

# सुज़ुकी बर्गमैन 400 पहले से ज्यादा हुआ अट्रैक्टिव, नए कलर के साथ हुआ लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

सुजुकी ने यूरोप में अपनी लोकप्रिय मैक्सी-स्कूटर 2025 Suzuki Burgman 400 को नए रंगरूप में पेश किया है। इस स्कूटर में 400cc का सिंगल-सिलेंडर इंजन है और यह CVT गियरबॉक्स के साथ आता है। नए मॉडल में LCD स्क्रीन ट्रैक्शन कंट्रोल LED हेडलैंप जैसे कई आधुनिक फीचर्स दिए गए हैं। 2025 Suzuki Burgman 400 को तीन नए आकर्षक रंगों में पेश किया गया है जो इसे स्पोर्टी लुक देते हैं।

**नई दिल्ली।** सुजुकी ने अपनी पॉपुलर मैक्सी-स्कूटर 2025 Suzuki Burgman 400 को यूरोप में पेश किया है। इसमें किसी तरह का मैकेनिकल बदलाव नहीं किया गया है, लेकिन इसे नए और अट्रैक्टिव कलर के साथ पेश किया गया है। आइए बर्गमैन 400 के 2025 मॉडल के डिज़ाइन, इंजन और फीचर्स के बारे में जानते हैं और यह भी जानते हैं कि भारत में इसे कब लॉन्च किया जाएगा?

**2025 Suzuki Burgman 400 का नया लुक**

2025 बर्गमैन 400 को तीन नए कलर के साथ पेश किया गया है, जो इसे स्पोर्टी लुक देते हैं। इमें सुनहरे पहियों के साथ पर्ल मैट शैडो ग्रीन, काले रंग में सुनहरे पहियों के साथ ब्लैक विद गोल्डन रिम्स, और स्कूटर को स्पोर्टी और एनर्जेटिक वाइब के लिए ब्राइट मेटालिक ब्लू कलर दिया गया है। इन कलर के अलावा बाकी डिजाइन और फीचर्स वही है, जो पहले इसमें मिलते थे।

**2025 Suzuki Burgman 400 का इंजन**

इसके इंजन में किसी तरह का अपडेट नहीं किया गया है। इसमें 400cc का सिंगल-सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया जाता है, जो CVT (कंटिन्यूअसली वैरिएबल ट्रांसमिशन) गियरबॉक्स के साथ आता है।

**2025 Suzuki Burgman 400 के फीचर्स**

इसे कई मॉडर्न फीचर्स के साथ ऑफर किया जाता है, जो इसे एक प्रीमियम स्कूटर बनाते हैं। इममें LCD स्क्रीन के साथ ट्विन-पॉड एनालॉग इंस्ट्रूमेंट कंसोल, स्लिपिंग से बचाने के लिए ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम, अंडर-सीट स्टोरेज, रात में बेहतर रोशनी के लिए LED हेडलैंप जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

**2025 Suzuki Burgman 400 का सस्पेंशन**

इसमें आगे की तरफ टेलीस्कोपिक, कॉइल स्प्रिंग और ऑयल डैम्प्ड सस्पेंशन दिया गया है और पीछे की तरफ लिंक टाइप, सिंगल शॉक, कॉइल स्प्रिंग और ऑयल डैम्प्ड सस्पेंशन दिया गया है। ब्रेकिंग के लिए आगे की तरफ ट्विन 260 mm डिस्क और पीछे की तरफ सिंगल 210 mm डिस्क ब्रेक दिया है। इसमें डुअल-चैनल ABS दिया गया है।

# हुंडईको फिर पछाड़ महिंद्रा निकली आगे, मारुति पहले नंबर पर बरकरार

परिवहन विशेष न्यूज

मई 2025 में यात्री वाहनों की थोक बिक्री 0.8% घटकर 344656 इकाई रही। दोपहिया वाहनों की बिक्री 2.2% बढ़कर 1655927 इकाई हो गई। सियाम के अनुसार सभी श्रेणियों में वाहनों की थोक बिक्री 1.8% बढ़कर 2012969 इकाई हो गई। राजेश मेनन ने कहा कि यात्री वाहन सेगमेंट में मामूली गिरावट आई है पर कुल बिक्री अच्छी रही। रेपो रेट में कटौती और अच्छे मानसून से ऑटो क्षेत्र को बढ़ावा मिलेगा।

**नई दिल्ली।** घरेलू यात्री वाहनों की थोक बिक्री इस साल मई में मामूली रूप से 0.8 प्रतिशत घटकर 3,44,656 इकाई रह गई। पिछले साल इसी महीने में यह आंकड़ा 3,47,492 इकाई रहा था। सोसाइटी आफ इंडियन आटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सियाम) द्वारा जारी नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, मई में निर्माताओं से डीलरों को दोपहिया वाहनों की बिक्री 2.2 प्रतिशत बढ़कर 16,55,927 इकाई हो गई, जबकि एक साल पहले इसी महीने यह 16,20,084 इकाई थी। अगर सभी श्रेणियों में वाहनों की थोक बिक्री की बात करें तो यह 1.8 प्रतिशत बढ़कर 20,12,969 इकाई हो गई, जबकि पिछले साल मई में यह 19,76,674 इकाई थी।

**चार पहिया वाहनों की बिक्री**

सियाम ने कहा कि यात्री वाहन सेगमेंट में मारुति सुजुकी इंडिया की घरेलू बिक्री पिछले महीने 1,35,962 यूनिट रही, जबकि मई 2024 में यह 1,44,002 यूनिट थी। घरेलू वाहन निर्माता महिंद्रा एंड महिंद्रा ने पिछले साल इसी महीने 43,218 यूनिट के मुकाबले 52,431 यूनिट की बिक्री की, जबकि हुंडई मोटर इंडिया ने मई 2024 में 49,151 यूनिट की तुलना में 43,861 यूनिट की घरेलू बिक्री दर्ज की।

**दोपहिया वाहनों की बिक्री**

दोपहिया वाहन खंड में मोटरसाइकिल की बिक्री पिछले महीने 10,39,156 इकाई पर लगभग स्थिर रही। मई 2024 में यह आंकड़ा 10,38,824 इकाई था। दूसरी ओर, स्कूटर की बिक्री पिछले महीने 7.1 प्रतिशत बढ़कर 5,79,507 इकाई हो गई, जबकि मई 2024 में यह 5,40,866 इकाई थी। सियाम ने कहा कि घरेलू बाजार में कुल तिपहिया वाहनों की बिक्री पिछले महीने 55,763 इकाई की तुलना में 3.3 प्रतिशत घटकर 53,942 इकाई रह गई।

दोपहिया वाहन खंड में मोटरसाइकिल की बिक्री पिछले महीने 10,39,156 इकाई पर लगभग स्थिर रही। मई 2024 में यह आंकड़ा 10,38,824 इकाई था। दूसरी ओर, स्कूटर की बिक्री पिछले महीने 7.1 प्रतिशत बढ़कर 5,79,507 इकाई हो गई, जबकि मई 2024 में यह 5,40,866 इकाई थी। सियाम ने कहा कि घरेलू बाजार में कुल तिपहिया वाहनों की बिक्री पिछले महीने 55,763 इकाई की तुलना में 3.3 प्रतिशत घटकर 53,942 इकाई रह गई।

# 2025 होंडा XL750 ट्रांसलप भारत में लॉन्च, नए लुक और फीचर्स के साथ हुई और दमदार

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा मोटरसाइकिल्स ने भारतीय बाजार में 2025 Honda XL750 Transalp लॉन्च की जिसकी एक्स-शोरूम कीमत 10.99 लाख रुपये है। यह बाइक ऑफ-रोड एडवेंचर और टूरिंग के लिए डिजाइन की गई है। इसमें 755cc का लिक्विड-कूल्ड इंजन है और यह दो रंगों में उपलब्ध है। बुकिंग शुरू हो चुकी है और डिलीवरी जुलाई 2025 से शुरू होने की उम्मीद है। इसमें कई आधुनिक फीचर्स भी दिए गए हैं।

**नई दिल्ली।** होंडा मोटरसाइकिल्स ने भारतीय बाजार में 2025 Honda XL750 Transalp को लॉन्च कर दिया है। इस बाइक को ऑफ-रोड, एडवेंचर, और टूरिंग के लिए डिजाइन किया गया है। इसे 10.99 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। इसे आप सड़क और ऑफ-रोड दोनों जगह पर आसानी से चला सकते हैं। इसके लॉन्च होने के साथ ही होंडा के बिगविंग डीलरशिप्स पर इसकी बुकिंग भी शुरू कर दी गई है और डिलीवरी जुलाई 2025 से शुरू की जा सकती है। आइए 2025 XL750 ट्रांसअल्प के डिजाइन, इंजन और खास फीचर्स के बारे में विस्तार से जानते हैं।

**2025 Honda XL750 Transalp का डिजाइन**

इसे नया और मॉडर्न लुक दिया गया है, जिसकी वजह से यह पिछले मॉडल से ज्यादा बेहतरीन दिखाई देती है। इसमें नया नया विंडस्क्रीन, ट्विन LED क्लस्टर के साथ रिफ्रेश्ड हेडलाइट, दोनों पहियों पर सुनहरे रंग के फिनिश के साथ वायर-स्पोक व्हील्स दिए गए हैं। इसे रॉस व्हाइट और ग्रेफाइट ब्लैक कलर ऑप्शन में पेश किया गया है।

**2025 Honda XL750 Transalp का इंजन**

इसमें 755cc का लिक्विड-कूल्ड, पैरलल-ट्विन इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 91.77 PS पावर और 75 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को राइड-बाय-वायर थ्रॉटल और 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। इसमें स्लिप-एंड-असिस्ट क्लच भी दिया गया है। इस इंजन को ट्रांसअल्प के लिए इसे खास तौर पर ट्यून किया गया है। इसके इंजन में हल्का बदलाव किया गया है, जो इस बाइक को लो-एंड ग्रंट और मिड-रेंज ड्राइव में बेहतर बनाते हैं।

**2025 Honda XL750 Transalp का सस्पेंशन**

इस बाइक में दोनों वायर-स्पोक और ट्यूब्ड टायर्स के साथ 21-इंच फ्रंट व्हील और 18-इंच रियर व्हील दिए गए हैं। फ्रंट में बेहतर कंट्रोल के लिए शोवा 43mm इनवर्टेड फोर्क, रियर लिंक-टाइप मोनोशॉक दिया गया है। इसमें सस्पेंशन को ऑफ-रोड परफॉर्मेंस के लिए खास तौर पर ट्यून किया गया है। ब्रेकिंग के लिए 310mm डुअल फ्रंट डिस्क और 256mm रियर डिस्क के साथ डुअल-चैनल ABS दिया गया है।

**2025 Honda XL750 Transalp के फीचर्स**

होंडा की इस मोटरसाइकिल में 5.0-इंच कलर TFT कंसोल, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन, म्यूजिक, कॉल, और SMS अलर्ट, बैकलिट स्विचगियर, ऑटोमैटिक टर्न सिग्नल कैंसिलेशन और स्विचेबल ट्रैक्शन कंट्रोल

# जल्द खुलेगा भारत का पहला ऑटोमोटिव डिजाइन स्कूल; नितिन गडकरी ने रखी आधारशिला, 2026 से शुरू होगा संचालन

परिवहन विशेष न्यूज

भारत का पहला ऑटोमोटिव डिजाइन स्कूल इंडियन स्कूल फॉर डिजाइन ऑफ ऑटोमोबाइल्स (INDEA) की आधारशिला रखी गई है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने इसे वर्चुअल रूप से स्थापित किया जिसका संचालन 2026 से शुरू होगा। XLRI के सहयोग से विकसित यह स्कूल भारतीय ऑटोमोटिव सेक्टर को नई दिशा देगा। यहाँ छात्रों को पारंपरिक शिक्षा से अलग प्रैक्टिकल अनुभव पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा जिससे वे डिजाइन में नवाचार कर सकेंगे।

**नई दिल्ली।** भारत का पहला ऑटोमोटिव डिजाइन स्कूल इंडियन स्कूल फॉर डिजाइन ऑफ ऑटोमोबाइल्स (INDEA) की आधारशिला रखी गई। इसकी आधारशिला को केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने वर्चुअल तरीके से रखी। इसका कामकाज साल 2026 से शुरू किया जाएगा। यह स्कूल XLRI के सेंटर फॉर ऑटोमोबाइल डिजाइन एंड मैनेजमेंट (XADM) के सहयोग से डेवलप किया जा रहा है। INDEA के संस्थापक और XADM के चेयरपर्सन अविक चट्टोपाध्याय का मानना है कि यह स्कूल भारतीय ऑटोमोटिव सेक्टर के लिए एक अनोखी डिजाइन दर्शन को जन्म देगा। आइए इस स्कूल के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, और भविष्य की योजनाओं के बारे में विस्तार से जानते हैं।

**INDEA की शुरुआत**

XLRI दिल्ली-NCR कैंपस में INDEA की भूमि पूजन और नींव रखने की समारोह 16 जून 2025 को हुआ। इस दौरान केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, XLRI दिल्ली-NCR के डायरेक्टर KS कसीमिर, और अविक चट्टोपाध्याय वर्चुअल रूप से मौजूद रहे। इस कॉलेज का लक्ष्य पारंपरिक कक्षा आधारित शिक्षा से हटकर एक वर्किंग स्टूडियो के रूप में काम करना है, जहां पर छात्रों को प्रैक्टिकल एक्सपीरिएंस दिया जाएगा।

**कैसा होगा स्लेबस?**

INDEA का स्लेबस काफी अलग है। अविक चट्टोपाध्याय ने बताया कि यहां कोई पारंपरिक कक्षा नहीं होगी, बल्कि एक बड़ा हॉल होगा जहां 25 छात्र बैठेंगे। बाकी समय वे क्ले मॉडलिंग एरिया, CAD-CAM लैब, प्रोटोटाइप वर्कशॉप, या एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग लैब में काम करेंगे। उनके स्लेबस में हैंड ड्रॉइंग, CAD (कंप्यूटर-एडेड डिजाइन), 3D मॉडलिंग, स्केल, 1:1 क्ले मॉडलिंग और प्रोटोटाइपिंग तक शामिल है।

यहां पर छात्रों को कोर्स डिजाइन और मैनेजमेंट को मिलाकर सिखाया जाएगा। छात्रों को डिजाइन सिखाने का काम जापान, जर्मनी, और भारत के डिजाइन स्पेसलिस्ट करेंगे। कोर्स के आखिरी में सभी छात्र मिलकर एक वर्किंग प्रोटोटाइप बनाएंगे, जिसे दुनिया के सामने पेश किया जाएगा।

**ऑटोमोटिव डिजाइन में एक अनोखी पहचान**

अविक चट्टोपाध्याय का मानना है कि केवल मेक इन इंडिया से काम नहीं चलेगा, इसके लिए डिजाइन इन इंडिया भी जरूरी है। जब तक हम डिजाइन को निवेश के रूप में नहीं देखेंगे, इसे खर्च समझते रहेंगे। प्रोडक्शन इंजीनियरिंग या नई असेंबली लाइन को निवेश माना जाता है, तो डिजाइन को क्यों नहीं? भारत अपनी ऑटोमोटिव डिजाइन में एक अनोखी पहचान बनाए, जो आने वाले तीन दशकों में इंडियन डिजाइन DNA के रूप में सामने आए।

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में वास्तुकला, भोजन, संगीत, कला, और कपड़ों में गहरी सौंदर्यबोध है, तो फिर वाहनों में क्यों नहीं? डिजाइन को ओवरली इंडियन नहीं दिखना चाहिए, लेकिन इसमें भारतीयता की बारीक छाप होनी चाहिए—जैसे इंटीरियर डिजाइन या इस्तेमाल की जाने वाली फैब्रिक्स में। वह इटली के ऑटोमोटिव डिजाइन से प्रेरणा लेते हैं, जहां फेरारी या लैम्बोर्गिनी के लोगो हटाने के बाद भी लोग इसे इटालियन डिजाइन के रूप में पहचान लेते हैं। इसी तरह, भारत को भी एक विशिष्ट डिजाइन लैंग्वेज डेवलप करनी चाहिए।

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि अच्छा डिजाइन महंगा नहीं, बल्कि लाभकारी होता है। वे तमाम पंच की मिसाल देते हैं, जिसकी बिक्री डिजाइन के कारण होती है चाहे वह बाहर का लुक हो या अंदर का इंटीरियर। अगर सही निवेश हो, तो डिजाइन से मुनाफा बढ़ता है।

# टपक रहे बादल

✍ डॉ. सत्यवान सौरभ

बहुत समय पहले की बात है, जब धरती इतनी गर्म नहीं होती थी और आकाश में बादल आराम से तैरते थे। उन्हीं बादलों में से सात खास बादल थे — गोलू, भोलू, झोलू, मटुक, नटखट, फुसफुस और सबसे छोटा, सबसे चंचल — टपकू।

टपकू का नाम टपकू इसलिए पड़ा, क्योंकि वह कभी सही समय पर नहीं बरसता था। जहाँ सब बादल खेतों की प्यास बुझाने, तालाब भरने या पेड़-पौधों को नहाने जाते, वहीं टपकू अचानक किसी की छतरी, खिड़की या तकिये पर टपक पड़ता। उसकी शरारतों से बच्चे हँसते भी थे और परेशान भी हो जाते थे।

**आकाश की बैठक**

एक दिन सूरज मामा ने सभी बादलों को बुलाया और कहा,

₹बच्चों, अब धरती पर बहुत गर्मी है। खेत सूख रहे हैं, तालाब खाली हैं और जानवर प्यासे हैं। अब तुम सबको बरसने जाना होगा।₹

सब बादलों ने अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी ली।

गोलू गया पहाड़ों की ओर,

भोलू चला दक्षिण भारत की तरफ,

झोलू उड़ गया रेगिस्तान की तरफ,

मटुक और नटखट बड़े शहरों के पास गए,

फुसफुस झीलों और जंगलों में बारिश करने चला।

अब बारी थी टपकू की। सूरज मामा ने पूछा,

और तुम, टपकू?

टपकू मुस्कराकर बोला,

मैं उस गाँव में जाऊँगा जहाँ बच्चे मुझे बहुत याद करते हैं!

टपकू की टप-टप बारिश

टपकू झूमता-गाता गाँव की ओर चला। नीचे धूल उड़ रही थी, बच्चे पसीने से तर थे, बकरियाँ चुपचाप बैठी थीं। टपकू ने सोचा, ₹अब मज़ा आएगा!₹ और वह एक घर की छत पर टपक पड़ा — टप! टप! टप!

एक बच्चा चिल्लाया,

अरे! टपकू आ गया!

सब बच्चे दौड़कर बाहर आ गए। टपकू ने उनके ऊपर बूँदें टपकाईं, कभी तेज, कभी धीरे। बच्चे नाचे, गाए, लेकिन तभी टपकू फिर उड़ गया। सब बोले,

अरे, रुक जा ना! ये क्या बारिश हुई?

टपकू हँसता रहा, ₹बस हल्की-फुल्की बारिश है, मज़ा लो!₹

मीरा की कॉपी भीग गई

दूसरे दिन गाँव की एक बच्ची मीरा स्कूल जा रही थी। उसके पास छाता नहीं था। तभी टपकू ने उसकी कॉपी पर बूँदें टपका दीं। स्याही फैल गई, पन्ने भीग गए।

मीरा रोती हुई बोली,

टपकू भैया, तुम तो सबकी मदद करते हो, लेकिन मेरी कॉपी खराब कर दी। क्या बारिश का यही काम है?

टपकू एकदम चुप हो गया। पहली बार किसी ने उसकी बारिश से दुखी होकर बात की थी। वह ऊपर उड़ गया और सोचने लगा — क्या मैं सिर्फ शरारतों के लिए हूँ? क्या बारिश सिर्फ खेलने की चीज़ है?

**बादलों की सलाह**

टपकू अपने बड़े भाइयों गोलू और भोलू के पास गया और सारी बात बताई। भोलू ने प्यार से कहा,

देखो टपकू, बच्चों को हँसाना अच्छा है, लेकिन अगर कोई दुखी हो जाए तो सोचना पड़ता है। बारिश सिर्फ मस्ती नहीं, जिम्मेदारी भी है।₹

गोलू ने थपकी दी,

अगर तुम चाहो, तो तुम भी पक्के बादल बन सकते हो। खेतों को पानी दो, तालाब भरो, जानवरों की प्यास बुझाओ।

टपकू ने सिर हिलाया,

हाँ भैया, अब मैं जिम्मेदारी निभाऊँगा!

**टपकू का रूपांतरण**

अगले दिन आकाश में टपकू कुछ बदला-बदला सा दिखा। वह और मोटा हो गया था, उसकी गरज तेज हो रही थी और वह सीधा गाँव की ओर बढ़ रहा था।

**बच्चों ने देखा, "अरे! टपकू फिर आया है!"**

लेकिन इस बार वह झमाझम बरसा! चारों ओर पानी ही पानी — खेत हरे हो गए, बगीचे महक उठे, तालाब भर गए और बच्चों ने कागज़ की नावें तैराईं।

मीरा ने छतरी लेकर आसमान की ओर देखा और मुस्कराकर बोली,

अब टपकू भैया नहीं, झमाझम राजा आ गए हैं!

नया नाम

अब गाँव के बच्चे उसे ₹टपक रहे बादल₹ नहीं कहते थे। उन्होंने उसका नया नाम रखा — झमाझम टपकू।

और टपकू? वह अब भी हँसता, खेलता, पर जब भी धरती प्यासी होती — वह सबसे पहले आ जाता।

# पाठ योजना: शिक्षक की तैयारी या औपचारिकता ?

विजय गर्ग

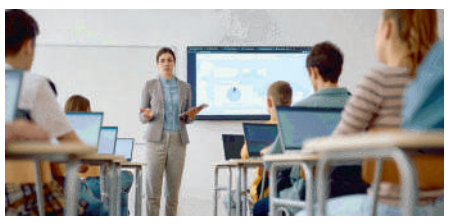

आज के शिक्षा तंत्र में 'पाठ योजन' एक ऐसा शब्द बन गया है, जो या तो केवल निरीक्षण की फाइलों तक सीमित है या फिर शिक्षकों के लिए एक अनचाहा बोझ। यह प्रश्न स्वाभाविक है-

क्या पाठ योजना वास्तव में शिक्षण की तैयारी है या केवल एक औपचारिकता ?

अगर और मगर की बातें अगर शिक्षक को अपनी कक्षा की विविधता का ज्ञान हो, तो वह समझेगा कि पाठ योजना उसे मार्गदर्शन देती है।

अगर योजना को केवल लिखने की औपचारिकता न मानकर, शिक्षण की रणनीति समझा जाए, तो इसका उपयोग बढ़ेगा।

अगर विद्यालय प्रशासन योजनाओं का अवलोकन, जांच और सुधार करे, तो शिक्षक इसे गंभीरता से लेंगे। मगर जब योजना लिखी तो जाती

है, पर कोई उसे पड़ता तक नहीं, तो शिक्षक इसे समय की बर्बादी मानते. हैं।

अगर मूल्यांकन और फीडबैक की व्यवस्था हो, तो पाठ योजना एक सशक्त औजार बन सकती है। अधिकतर शिक्षक इसे व्यर्थ क्यों मानते हैं?

निरीक्षण की कमी अधिकतर स्कूलों में पाठ योजनाओं की के वल औपचारिक जांच होती है, उनका कोई व्यवहारिक अवलोकन नहीं होता।

कोई प्रतिक्रिया नहीं योजनाओं पर ना तो सुझाव मिलते हैं, ना ही उन्हें सुधारने की प्रक्रिया अपनाई जाती है।

समय का अभाव परीक्षा, मूल्यांकन, रिपोर्ट और सह-शैक्षणिक गतिविधियों के बीच पाठ योजना बनाना केवल अतिरिक्त कार्य लगता है।

व्यवहारिक उपयोगिता पर संदेह जब योजना केवल फॉर्म भरने का काम बन जाए, तो शिक्षकों को उसका शैक्षणिक महत्व नजर नहीं आता।

बिना निरीक्षण और मूल्यांकन के यह समय की बर्बादी है। पाठ योजना केवल तभी प्रभावी होती है जब उसका मूल्यांकन हो, उस पर संवाद हो, और शिक्षक को उसकी प्रतिक्रिया मिले। अन्यथा यह केवल एक दस्तावेज बनकर रह जाती है- ना छात्रों को लाभ होता है, ना शिक्षक को संतोष।

जब स्कूल में प्रधानाचार्य, कोऑर्डिनेटर या पर्यवेक्षक कक्षा अवलोकन करते हैं, और पाठ योजना से मिलान करते हैं, तब ही यह प्रक्रिया सार्थक बनती है। अन्यथा यह शिक्षकों की रचनात्मकता का दम घोटने वाला कार्य बन जाता है।

भारतीय कक्षा की विविधता, एक शिक्षक की सबसे बड़ी चुनौती भारतीय कक्षाओं में एक समान छात्र नहीं होते। हर कक्षा एक मिश्रण होती है: ईश्वर प्रदत्त प्रतिभावान विज्ञानी और टॉपर मेहनती और नियमित

रटने वाले निंदा करने वाले संसाधनों से युक्त वंचित और घरेलू जिम्मेदारियों में उलझे हुए इस स्थिति में क्या एक पाठ योजना सबके लिए उपयुक्त हो सकती है? नहीं, कतई नहीं। तो सवाल उठता है कि समाधान क्या है ?

ऐसे में एक लचीली और बहुस्तरीय योजना ही कारगर सिद्ध हो सकती है। एक कुशल शिक्षक को चाहिए कि वह अपनी पाठ योजना को ऐसा बनाए: जिसमें मुख्य लक्ष्य स्पष्ट हों, लेकिन प्रस्तुतीकरण में लचीलापन हो। तेज छात्रों के लिए उच्च स्तरीय प्रश्न, कमजोर छात्रों के लिए सहायक गतिविधियाँ, समूह कार्य, श्रव्य दृश्य सामग्री, अनुभवजन्य प्रयोग सब कुछ उसमें शामिल हो।

गृह कार्य का बोझ कम हो और कक्षा में अधिक अभ्यास हो, ताकि घर पर पढ़ाई न कर पाने वाले छात्र भी सीख सकें।

शिक्षक इसे औपचारिकता नहीं, शिक्षा का हिस्सा बनाएं पाठ योजना केवल एक दस्तावेज नहीं, शिक्षण का पूर्वाभ्यास है। यह शिक्षक को मानसिक रूप से तैयार करती है, समय का बेहतर प्रबंधन सिखाती है और कक्षा को प्रभावशाली बनाती है।

परंतु जब तक विद्यालय इसे केवल एक फॉर्म भरने का काम समझेगा, और शिक्षक इसे बोझ मानते रहेंगे - तब तक यह न तो छात्रों की मदद कर पाएगी, न ही शिक्षा के स्तर को ऊपर उठा पाएगी। इसलिए आवश्यक है कि स्कूल प्रशासन और शिक्षक दोनों इसे समझे, प्रयोग करें, संवाद करें और इसे विकसित करें। तभी पाठ योजना एक औपचारिकता से निकलकर शिक्षण की आत्मा वन पाएगी।

# इंस्टाग्राम से परे, फेसबुक रील्स: क्या हम रियल की कला खो रहे हैं

विजय गर्ग

ऐसे समय में जहां 15 सेकंड का वीडियो एक लाख बार देखा जा सकता है, यह पूछना उचित है: क्या हम वास्तव में अब और संवाद कर रहे हैं, या हम सिर्फ प्रदर्शन कर रहे हैं? वास्तविक संचार की कला - दिल से दिल की बात, ठहराव, मौन की बारीकियों, शब्दों के पीछे की ईमानदारी - फिल्टर, ट्रेंडिंग ध्वनियों और पूरी तरह से कोरियोग्राफ किए गए स्निपेट्स की एक हड़बड़ी में घुलने लगती है।

इंस्टाग्राम रील्स, टिक्टॉक्स और शॉर्ट-फॉर्म वीडियो ने भले ही अभिव्यक्ति के लिए नए दरवाजे खोले हों, लेकिन उन्होंने उन लोगों को भी बंद कर दिया है जो एक बार वास्तविक कनेक्शन के लिए नेतृत्व करते थे। मुझे एक वास्तविक जीवन की घटना के साथ शुरू करते हैं।

छात्रों को एक साधारण व्यायाम में संलग्न करने के लिए: उनके फोन की जांच किए बिना पांच मिनट के लिए उनके बगल में बैठे व्यक्ति से बात करें । कमरा शांत हो गया। कुछ घबराए हुए; दूसरों ने बस अपने डेस्क को देखा। जब वे शुरू हुए, तो अधिकांश वार्तालाप एक या दो मिनट के भीतर समाप्त हो गए।

सोशल मीडिया प्लेटफार्मों ने एक संवाद अधिनियम से एक प्रदर्शन के लिए संचार को फिर से परिभाषित किया है। रीलों, विशेष रूप से, संक्षिप्तता को पुरस्कृत करने के लिए संरचित किया जाता है, गहराई या भेद्यता नहीं। 15 सेकंड में, जटिल भावना के लिए बहुत कम जगह है।

जितना अधिक आप सरल करते हैं, उतना ही आप फिट होते हैं। जितना अधिक आप फिट होते हैं, उतना ही आप गायब हो जाते हैं। माइक्रोसॉफ्ट के एक अध्ययन के अनुसार, औसत मानव ध्यान अवधि एक सुनहरी मछली की तुलना में 8 सेकंड तक कम हो गई है। क्या यह कोई आश्चर्य है, तो, कि अब हम किताबों, लंबी बातचीत या यहां तक कि फिल्मों पर काटने के आकार की सामग्री पसंद करते हैं? जब शब्द सिकुड़ जाते हैं, तो भावनाएं रुके।₹, ₹हम्मम.₹, ₹योग्य.₹, ₹ठीक है.₹, ₹देखा.₹ यह वही है जो हमारी बातचीत आज की तरह दिखती है। भाषा की समृद्धि चपटी हो रही है। सरकस्म गलत है।

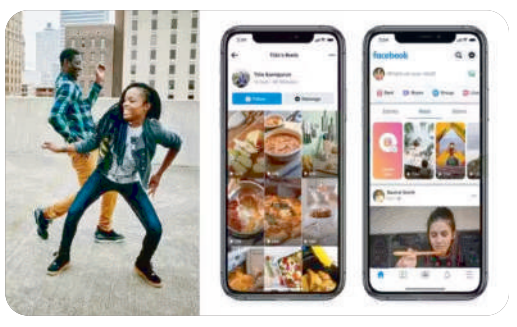

विडंबना खो जाती है। सहानुभूति कठिन हो जाती है जब आप एक आवाज तरकश नहीं सुन सकते हैं या एक आंसू रोल नीचे देख सकते हैं। वास्तविक संचार में टोन, संदर्भ, शरीर की भाषा शामिल है - सभी डिजिटल आशुलिपि से गायब हैं जो अब हम उपयोग करते हैं। मैंने एक बार दो किशोरों को एक-दूसरे के साथ नहीं, बल्कि हाथ में अपने फोन के साथ एक-दूसरे के साथ एक-दूसरे को मैसेज करते हुए देखा।

यह रचनात्मक, अभिव्यंजक और यहां तक कि उपचार भी हो सकता है। लेकिन सत्यापन के लिए रिकॉर्ड करने, संपादित करने, अपलोड करने और प्रतीक्षा करने की निरंतर आवश्यकता संचार को प्रतिस्पर्धा में बदल रही है। जब लक्ष्य कनेक्ट करने के लिए नहीं बल्कि प्रभावित करने के लिए है, कुछ पवित्र खो जाता है ।

टू-वे स्ट्रीट रियल कम्युनिकेशन के रूप में संचार का अर्थ है जितना बोलना सुनना। यह समझने, जवाब देने, अंतरिक्ष रखने के बारे में है। न केवल अपनी बारी का इंतजार करने के लिए, या बदतर, रिकॉर्ड।

जब संदेश मोनोलॉग बन जाते हैं तो रिश्ते पीड़ित होते हैं। परिवार एक ही कमरे में बैठते हैं, प्रत्येक सदस्य स्क्रॉल करते हैं, पसंद करते हैं, साझा करते हैं, लेकिन बोलते नहीं हैं। मुझे एक रात का खाना याद है जहां एक बच्चा कुछ कहने के लिए अपनी मां की आस्तीन पर टहलता रहा। मां, इंस्टाग्राम के लिए अपने भोजन को फिल्माने में व्यस्त हैं, बिना सुने अपने बच्चे को परेशान करती हैं।

वह बच्चा यह विश्वास करते हुए बड़ा हो सकता है कि स्क्रीन आवाज़ों की तुलना में अधिक ध्यान देने योग्य हैं। हम क्या कर सकते हैं? यह प्रौद्योगिकी के खिलाफ एक शेख़ी नहीं है। यह संतुलन के लिए एक कॉल है। यह हमारी बोलने, सुनने, महसूस करने और कनेक्ट करने की क्षमता को पुनः प्राप्त करने के बारे में है।

**यहाँ कुछ चीजें हैं जो हम सभी कोशिश कर सकते हैं:**

1. । टेक-फ्री टाइम: दिन में कम से कम एक घंटे एक तरफ सेट करें जहां कोई स्क्रीन की अनुमति नहीं है। इसका उपयोग बात करने, चलने या किसी के साथ बैठने के लिए करें।

2. । लॉन्ग-फॉर्म वार्तालाप: टेक्स्टिंग के बजाय किसी मित्र को कॉल करें। बेहतर अभी तक, व्यक्ति में मिलते हैं। रुक जाने दो। मौन को बोलने दो।

3 । पोस्टिंग पर जर्नलिंग: ऑनलाइन सब कुछ साझा करने के बजाय, अपने विचारों को लिखें। पसंद के लिए नहीं, बल्कि स्पष्टता के लिए।

4 । माइंडफुल शेयरिंग: पोस्ट करने से पहले, पूछें: क्या मैं व्यक्त करने या प्रभावित करने के लिए साझा कर रहा हूं? एक अंतिम शब्द शायद आंखों के संपर्क, अविभाजित ध्यान और गहरी सुनने की भाषा को वापस लाने का समय है।

शायद यह समय हमें याद है कि कहने लायक सब कुछ 15 सेकंड में नहीं कहा जा सकता है। रीलों को रीलों होने दें। लेकिन बातचीत को वास्तविक होने दें। चलो बस नहीं देखा जा सकता है। आइए समझते हैं।

**सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब**

# स्वस्थ जीवनशैली दवा से अधिक लाभकारी

विजय गर्ग

दुनिया में एक बड़ी आबादी डायबिटीज से पीड़ित है। डायबिटीज को कई रोगों की जननी भी माना जाता है। एक अध्ययन के अनुसार, एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाना एंटी डायबिटीज दवा मेटफार्मिन के उपयोग से अधिक प्रभावी है और इसके लाभ 20 वर्षों बाद भी बने रहते हैं।

1996 में शुरू किए गए यूएस डायबिटीज प्रिवेंशन प्रोग्राम में 22 राज्यों के 30 संस्थानों से 3,234 प्रीडायबिटीज वाले मरीजों को शामिल किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य मेटफार्मिन का उपयोग और स्वस्थ जीवनशैली में संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, और पर्याप्त नींद शामिल है के लाभों की तुलना करना था। संतुलित आहार में फल, सब्जियां, साबुत अनाज और कम वसा वाले प्रोटीन का सेवन व प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों, शर्करा युक्त पेय पदार्थों और अत्यधिक वसा वाले खाद्य पदार्थों से बचें। यूएस के न्यू मैक्सिको विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने पाया कि जीवनशैली में बदलाव करने से डायबिटीज के बढ़ने में 24 प्रतिशत की कमी आई, जबकि एंटी डायबिटीज दवा ने 17 प्रतिशत तक कम किया। ये निष्कर्ष द लैंसेट डायबिटीज एंड एंडोक्राइनोलाजी जर्नल में प्रकाशित हुए। टीम ने नोट किया कि दोनों दृष्टिकोणों मेटफार्मिन लेने व स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के बीच के अंतर पहले कुछ वर्षों में देखे गए और ये स्थायी थे।

जीवनशैली में बदलाव ज्यादा प्रभावी : पहले तीन वर्षों के बाद जीवनशैली में बदलाव जैसे वजन कम करना और शारीरिक गतिविधि बढ़ाना टाइप दो डायबिटीज के मामलों में 58 प्रतिशत की कमी लाए, जबकि मेटफार्मिन के साथ यह कमी 31 प्रतिशत थी। न्यू मैक्सिको विश्वविद्यालय के स्कूल आफ मेडिसिन के प्रोफेसर एमेरिटस बल्लभ राज शाह ने कहा कि डाटा यह सुझाव देता है कि जो लोग डायबिटीज से प्रभावित नहीं हुए, वे 22 वर्षों बाद भी डायबिटीज से प्रभावित नहीं हुए। जीवनशैली में बदलाव समूह के प्रतिभागियों ने डायबिटीज के बिना अतिरिक्त 3.5 वर्ष बिताए, जबकि मेटफार्मिन समूह के प्रतिभागियों ने 2.5 वर्ष का अतिरिक्त लाभ उठाया। शाह ने आगे कहा कि तीन वर्षों के भीतर ( अध्ययन शुरू होने के बाद), उन्हें अध्ययन रोकना पड़ा क्योंकि जीवनशैली मेटफॉर्मिन से बेहतर थी। इसका मतलब है कि जीवनशैली जिस पर सभी भरोसा कर रहे हैं अधिक प्रभावी है। शोध लेखकों ने लिखा, फालोअप के दौरान प्लेसबो की तुलना में (इंटेंसिव लाइफस्टाइल इंटरवेंशन) समूह में डायबिटीज के घटने की दर 24 प्रतिशत कम हुई व मूल मेटफार्मिन समूह में यह 17% कम हुई। इसके परिणामस्वरूप 3.5 वर्ष और 2.5 वर्ष के बीच डायबिटीज फ्री सर्वाइवल में वृद्धि हुई।

**विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब**

# ब्रिक्स में भारत का बढ़ता वर्चस्व संतुलित दुनिया का आधार

ललित गर्ग

ब्रिक्स सम्मेलन में आतंकवाद, विशेषकर कश्मीर में फैले इस्लामी आतंकवाद को लेकर चर्चा ने इस मंच को वैश्विक राजनीति की दिशा तय करने वाले संगठनों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा कर दिया है। इसमें भारत की भूमिका, विशेषकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की निर्णायक भूमिका रही है। इसके साथ ही ब्राजील के रियो डी जनेरियो में रविवार को हुए 17वें ब्रिक्स सम्मेलन में सदस्य देशों ने 31 पेज और 126 पॉइंट वाला एक जॉइंट घोषणा पत्र जारी किया। इसमें पहलगाम आतंकी हमले और ईरान पर इजराइली हमले की निंदा की गई। इससे पहले 1 जुलाई को भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया की मेंबरशिप वाले क्वाड ग्रुप के विदेश मंत्रियों की बैठक में भी पहलगाम हमले की निंदा की गई थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस समिट में पहलगाम की आतंकी घटना पर कठोर शब्दों में कहा कि पहलगाम आतंकी हमला सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि पूरी इंसानियत पर चोट है। आतंकवाद की निंदा हमारा सिद्धांत होना चाहिए, सुविधा नहीं। मोदी ने शांति एवं सुरक्षा सत्र में कहा कि पहलगाम में हुआ 'कायरतापूर्ण' आतंकवादी हमला भारत की 'आत्मा, पहचान और गरिमा' पर सीधा हमला है। इसके साथ ही उन्होंने एक नई विश्व व्यवस्था की मांग उठाई। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस समिट में महत्वपूर्ण मुद्रा में दिखाई दिये। उन्होंने एक बार फिर इसके विस्तार की बात की और सदस्य देशों से भी आग्रहपूर्ण ढंग से दबाव बनाया कि कि ब्रिक्स को विस्तार होना चाहिए। ब्रिक्स यानी बी से ब्राजील, आर से रूस, आई से इंडिया (भारत), सी से चीन और एस से दक्षिण अफ्रीका- ये दुनिया की पांच सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था वाले देशों का एक समूह है। ब्रिक्स एक ऐसा बहुपक्षीय मंच है, जो उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग, वैश्विक विकास और सामूहिक सुरक्षा की भावना को बल देता है। ब्रिक्स समिट काफी सफल एवं निर्णायक रहा है।

ब्रिक्स सम्मेलन में आतंकवाद, विशेषकर कश्मीर में फैले इस्लामी आतंकवाद को लेकर चर्चा ने इस मंच को वैश्विक राजनीति की दिशा तय करने वाले संगठनों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा कर दिया है। इसमें भारत की भूमिका, विशेषकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की निर्णायक भूमिका रही है। इन शक्तिसम्पन्न पांचों देशों का वैश्विक मामलों पर महत्वपूर्ण प्रभाव है और दुनिया की लगभग 40 फीसदी आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। चीन इसे अपने हित के लिए इस्तेमाल करना चाहता है, जबकि भारत इसे सही मायनों में लोकतांत्रिक संगठन बनाना चाहता है। भारत चाहता है कि ब्रिक्स समूह मिलकर दुनिया में शांति, सह-जीवन, अहिंसा, लोकतांत्रिक मूल्य, समानता एवं सह-अस्तित्व पर बल देते हुए दुनिया को युद्ध, आतंक एवं हिंसामुक्त बनाया जाये। ब्रिक्स देशों के इस सम्मेलन में एक विशेष बिंदु जो उभरकर सामने आया वह था- अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद का बदलता स्वरूप और इसके कश्मीर जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में प्रभाव। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट रूप से यह रेखांकित किया कि आतंकवाद अब किसी एक राष्ट्र की समस्या नहीं रह गई है, बल्कि यह एक वैश्विक संकट बन चुका है। उन्होंने कश्मीर में हो रहे आतंकवादी हमलों, पाकिस्तान समर्थित गतिविधियों और भारत की सीमाओं पर हो रही हिंसक घटनाओं को उदाहरण के रूप में सामने रखा। मोदी ने ब्रिक्स मंच से यह भी स्पष्ट किया कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, लेकिन जब आतंक का राजनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल होता है, तो वह मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन जाता है।

भारत ने लंबे समय से कॉम्प्रेहेंसिव कॉन्वेंशन ऑन इन्टरनेशनल टेरिजम्स (सीसीआईटी) की पैरवी की है। इस बार ब्रिक्स मंच पर मोदी ने इस प्रस्ताव को फिर से प्रमुखता से उठाया और एक साझा परिभाषा व वैश्विक नीति की मांग की ताकि आतंकवादियों को सुरक्षा और राजनीतिक सहारा न मिल सके। प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी सुझाव दिया कि ब्रिक्स को एक साझा आतंकवाद निरोधी तंत्र बनाना चाहिए, जो सूचनाओं का आदान-प्रदान, निगरानी तंत्र और आतंक के वित्तपोषण को रोकने में सहयोग करे। भारत ने इस बार पाकिस्तान का नाम लिए बिना यह सिद्ध किया कि कश्मीर में आतंकवाद एक स्थानीय असंतोष नहीं, बल्कि बाहरी प्रायोजित आतंक है। ब्रिक्स देशों, विशेषकर रूस और ब्राज़ील ने इस बात को स्वीकारा कि कश्मीर में फैले आतंकवाद पर चिंता जायज़ है और उन्होंने भारत के दृष्टिकोण का समर्थन किया। यह कूटनीतिक जीत प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व कौशल को रेखांकित करती है। उन्होंने न केवल भारत के राष्ट्रीय हितों की रक्षा की, बल्कि वैश्विक आतंकवाद के विरुद्ध एक नैतिक और व्यावहारिक आधार भी प्रस्तुत किया।

भारत 2026 में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता करने जा रहा है। यह भारत के लिए भविष्य को गढ़ने का एक सुनहरा अवसर है। भारत अब न केवल आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देगा, बल्कि यह भी सुनिश्चित करेगा कि ब्रिक्स एक न्यायसंगत, सुरक्षित और आतंकवादमुक्त विश्व के निर्माण की दिशा में कार्य करे। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भारत की भूमिका न केवल आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक स्वरूप में दिखाई दी, बल्कि यह भी स्पष्ट हुआ कि भारत अब एक वैश्विक नेतृत्वकर्ता राष्ट्र के रूप में उभर चुका है। नरेंद्र मोदी ने जिस सूझबूझ, तर्कशक्ति और साहस के साथ कश्मीर मुद्दे को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया, वह भारत की कूटनीति के नए युग की शुरुआत है। आगामी वर्ष में जब भारत ब्रिक्स की अध्यक्षता करेगा, तब यह विश्वास किया जा सकता है कि न केवल भारत, बल्कि समूचा विश्व भारत की नीति, नैतिक दृष्टि और नेतृत्व क्षमता का सम्मान करेगा। इस मंच से भारत केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि मानवता, शांति और न्याय की नई इबारत लिखेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक नई विश्व व्यवस्था की मांग उठाई उन्होंने कहा कि आज दुनिया को एक बहुध्रुवीय और समावेशी व्यवस्था की जरूरत है। इसकी शुरुआत वैश्विक संस्थाओं में बदलाव से करनी होगी। मोदी ने कहा, 'बीसवीं सदी में बनाई गई वैश्विक संस्थाएं इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों से निपटने में नाकाम हैं। एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमता के दौर में तकनीक हर हफ्ते अपडेट होती है, लेकिन एक वैश्विक संस्थान 80 सालों में एक बार भी अपडेट नहीं होती। बीसवीं सदी के टाइपराइटर इक्कीसवीं सदी के सॉफ्टवेयर को नहीं चला सकते। प्रधानमंत्री ने कहा, ग्लोबल साउथ के देश अक्सर डबल स्टैंडर्ड का शिकार रहे हैं। चाहे विकास हो, संसाधनों की बात हो, या सुरक्षा से जुड़े मुद्दों की, ग्लोबल साउथ को कभी प्राथमिकता नहीं दी गई है। इनके बिना, वैश्विक संस्थाएं ऐसे मोबाइल की तरह हैं, जिसमें सिम कार्ड तो है लेकिन नेटवर्क नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, वैश्विक अर्थव्यवस्था में जिन देशों का योगदान ज्यादा है, उन्हें फैसले लेने का हक नहीं है। यह सिर्फ प्रतिनिधित्व का नहीं, बल्कि विश्वसनीयता और प्रभावशीलता का भी सवाल है।

भारत का मानना था कि समान सोच वाले देशों को साथ लेकर चला जा सकता है। आनेवाले समय में ब्रिक्स दुनिया की आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने लगेगा। निश्चित ही ब्रिक्स की ताकत से एक वैश्विक संतुलन स्थापित हो रहा है और अमेरिका एवं पश्चिमी देशों के अहंकार एवं दुनिया पर शासन करने की मंशा पर पानी फिरा है। हमारा भविष्य सितारों पर नहीं, जमीन पर निर्भर है, वह हमारा दिलों में छिपा हुआ है, दूसरे शब्दों में कहें तो हमारा कल्याण अन्तरिक्ष की उड़ानों, युद्ध, आतंक एवं शस्त्रों में नहीं, पृथ्वी पर आपसी सहयोग, शांति, सह-जीवन एवं सद्भावना में निहित है। 'वसुधैव कुटुम्बकम का मंत्र इसलिये सारी दुनिया को भा रहा है। इसलिये बदलती हुई दुनिया में, बदलते हुए राजनैतिक हालात में सारे देश एक साथ जुड़ना चाहते हैं। ब्रिक्स का संगठन ऐसा सपना है जिसे भारत रत्न स्व. प्रणव मुखर्जी ने भारत के विदेश मन्त्री के तौर पर 2006 में देखा था। प्रणव दा बदलते विश्व शक्ति क्रम में उदीयमान आर्थिक शक्तियों की समुचित व जायज सहभागिता के प्रबल समर्थक थे और पुराने पड़ते राष्ट्रसंघ के आधारभूत ढांचे में रचनात्मक बदलाव भी चाहते थे। इसके साथ ही वह बहुध्रुवीय विश्व के भी जबर्दस्त पक्षधर थे जिससे विश्व का सकल विकास न्यायसंगत एवं लोकतांत्रिक तरीके से हो सके। अब नरेन्द्र मोदी ने इसमें सराहनीय भूमिका निभाई है। उनके दूरगामी एवं सूझबूझ भरे सुझावों का ब्रिक्स देशों ने लोहा माना है। ब्रिक्स संगठन में भारत का वर्चस्व चीन की तुलना में बढ़ा है जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शिता एवं कूटनीति का परिणाम है।

# सीबीआई की रेड नहीं, मेडिकल सिस्टम की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट : भ्रष्टाचार की दवाइयों से जहर बनती डॉक्टर फैक्ट्री

जब एक देश की स्वास्थ्य व्यवस्था और उसकी नींव मानी जाने वाली मेडिकल शिक्षा भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाए, तो यह केवल एक घोटाला नहीं, बल्कि लाखों लोगों के भरोसे और भविष्य पर सीधा हमला है। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने हाल ही में एक सनसनीखेज खुलासे के साथ स्वास्थ्य मंत्रालय, राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान आयोग (एनएमसी), और निजी मेडिकल कॉलेजों के बीच गहरे भ्रष्टाचार के जाल को उजागर किया है। 34 लोगों के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी ने एक ऐसी सच्चाई सामने लाई है, जो न केवल मेडिकल शिक्षा की विश्वसनीयता को धक्का देती है, बल्कि देश के स्वास्थ्य तंत्र के प्रति जनता का विश्वास भी हिलाती है।

यह घोटाला स्वास्थ्य मंत्रालय के गलियारों से शुरू होता है, जहां अधिकारियों ने बिचौलियों और निजी मेडिकल कॉलेजों के साथ मिलकर एक ऐसा तंत्र बनाया, जो नियमों को तोड़ने-मरोड़ने का पर्याय बन गया। गोपनीय दस्तावेजों की चोरी, निरीक्षण कार्यक्रमों का पहले से लीक होना, और मूल्यांकनकर्ताओं की जानकारी कॉलेजों तक पहुंचाना—यह सब एक सुनियोजित साजिश का हिस्सा था। इस सेटिंग ने मेडिकल कॉलेजों को वह मौका दिया, जिसके जरिए वे निरीक्षण प्रक्रिया को धोखे में बदल सके। कॉलेजों ने इस अवसर का भरपूर फायदा उठाया। फर्जी संकाय की नियुक्ति, काल्पनिक मरीजों को भर्ती दिखाना, और बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली में हेरफेर जैसे हथकंडे अपनाए गए। यह सब रिश्वत के खेल का हिस्सा था, जहां लाखों रुपये हवाला के जरिए लेन-देन किए गए। यह धन न केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए, बल्कि सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों के नाम पर भी इस्तेमाल हुआ। यह खुलासा यह सवाल उठाता है कि क्या पवित्रता का मुखौटा पहनकर भ्रष्टाचार को छिपाना अब आम बात हो गई है?

मेडिकल शिक्षा का उद्देश्य कुशल और नैतिक डॉक्टर तैयार करना है, जो देश की स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करें। लेकिन जब यह प्रक्रिया ही भ्रष्टाचार से ग्रस्त हो, तो परिणामस्वरूप निकलने वाले डॉक्टरों की गुणवत्ता पर सवाल उठना लाजमी है। फर्जी संकाय और नकली मरीजों के दम पर मान्यता प्राप्त करने वाले कॉलेज न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को ठेस पहुंचाते हैं, बल्कि मरीजों की जान को भी खतरे में डालते हैं। यह घोटाला मेडिकल शिक्षा की वैश्विक साख पर भी गहरा प्रहार करता है। भारत, जो चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए वैश्विक स्तर पर जाना जाता है, इस तरह के घोटालों के कारण अपनी विश्वसनीयता खो रहा है। उन लाखों छात्रों का क्या, जो भारी-भरकम फीस चुकाकर इन कॉलेजों में पढ़ते हैं? क्या उनकी मेहनत और सपने इस भ्रष्ट तंत्र की भेंट चढ़ जाएंगे? यह स्थिति न केवल शिक्षा व्यवस्था के प्रति अविश्वास को जन्म देती है, बल्कि समाज में असमानता को भी बढ़ावा देती है, क्योंकि आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए अवसर और सीमित हो जाते हैं।

यह घोटाला केवल मेडिकल शिक्षा तक सीमित नहीं है; इसके सामाजिक और आर्थिक प्रभाव भी गंभीर हैं। निजी मेडिकल कॉलेजों का व्यावसायीकरण पहले ही शिक्षा को एक विलासिता बना चुका है। जब ये कॉलेज भ्रष्टाचार के जरिए मान्यता हासिल करते हैं, तो यह शिक्षा की पहुंच को और सीमित करता है। मेधावी लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए मेडिकल शिक्षा का सपना और दूर हो जाता है। आर्थिक दृष्टिकोण से, हवाला के जरिए होने वाला रिश्वत का लेन-देन देश की अर्थव्यवस्था को खोखला करता है। यह धन, जो जनकल्याण के लिए उपयोग हो सकता था, भ्रष्टाचार के काले गलियारों में गायब हो रहा है। धार्मिक और सामाजिक कार्यों के नाम पर इसका इस्तेमाल न केवल नैतिकता पर सवाल उठाता है, बल्कि समाज के प्रति एक गहरे विश्वासघात को दर्शाता है।

यह घोटाला राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान आयोग (एनएमसी) की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाता है। एनएमसी को भ्रष्टाचार-मुक्त और पारदर्शी व्यवस्था लाने के लिए बनाया गया था, लेकिन इस घोटाले ने इसके दावों की पोल खोल दी। यह स्पष्ट है कि नियामक ढांचे में गहरी खामियां हैं, जिन्हें तत्काल दूर करने की जरूरत है। निरीक्षण प्रक्रिया को डिजिटल और स्वचालित करना, स्वतंत्र ऑडिट को अनिवार्य करना, और भ्रष्टाचार में शामिल लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित करना कुछ ऐसे कदम हैं, जो इस तंत्र को मजबूत कर सकते हैं। साथ ही, जनता को भी जागरूक होकर इस भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठानी होगी। यह केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज का सामूहिक दायित्व है कि हम ऐसी व्यवस्था बनाएं, जहां शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्र भ्रष्टाचार से मुक्त हों।

यह घोटाला एक कड़वी सच्चाई सामने लाता है कि हमारी व्यवस्था में भ्रष्टाचार की जड़ें कितनी गहरी हैं। लेकिन यह एक अवसर भी है—सुधार का अवसर, जवाबदेही का अवसर, और एक ऐसी व्यवस्था बनाने का अवसर, जो नैतिकता और पारदर्शिता पर टिकी हो। सीबीआई की कार्रवाई एक शुरुआत है, लेकिन यह तभी सार्थक होगी जब इसके परिणामस्वरूप ठोस बदलाव आएं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि मेडिकल शिक्षा का हर स्तर—प्रवेश से लेकर मान्यता तक—पारदर्शी और जवाबदेह हो। यह न केवल उन छात्रों के लिए जरूरी है, जो अपने सपनों को साकार करने के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं, बल्कि उन करोड़ों मरीजों के लिए भी, जिनका जीवन इन डॉक्टरों के हाथों में होता है।

यह घोटाला एक चेतावनी है—हमारी व्यवस्था की कमजोरियों की, हमारे विश्वास की ठगी की, और हमारे भविष्य के साथ खिलवाड़ की। यह एक ऐसा आघात है, जो हर उस व्यक्ति के दिल को छूता है, जो इस देश के स्वास्थ्य और शिक्षा तंत्र पर भरोसा करता है। लेकिन यह समय केवल शोक मनाने का नहीं, बल्कि संकल्प लेने का है। हमारी मेडिकल शिक्षा को भ्रष्टाचार के इस काले साये से मुक्त करना होगा। यह एक लंबी लड़ाई है, लेकिन अगर हम एकजुट होकर इस भ्रष्ट तंत्र के खिलाफ खड़े हों, तो हम एक ऐसी व्यवस्था बना सकते हैं, जो न केवल कुशल डॉक्टर तैयार करे, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी निभाए। आइए, इस घोटाले को एक सबक बनाएं और एक नए, पारदर्शी, और नैतिक भारत की नींव रखें।

**प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)**

# ब्रिक्स बनाम अमेरिका: टैरिफ युद्ध की नई दस्तक

वैश्विक मंच पर एक नया तूफान खड़ा हो चुका है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की ताजा चेतावनी ने ब्रिक्स देशों के साथ व्यापारिक और भू-राजनीतिक तनाव को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। 9 जुलाई 2025 को समाप्त होने वाली जवाबी टैरिफ की समयसीमा और ब्राजील में चल रहे 17वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के बीच ट्रम्प का यह बयान कि ब्रिक्स की ₹अमेरिका विरोधी नीतियों₹ का समर्थन करने वाले देशों पर 10% अतिरिक्त टैरिफ लगेगा, वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़े बदलाव का संकेत देता है। यह केवल व्यापार युद्ध की शुरुआत नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन में एक गहरी दरार का प्रतीक है।

अमेरिका द्वारा लगाए गए जवाबी टैरिफ की कहानी अप्रैल 2025 से शुरू होती है, जब ट्रम्प प्रशासन ने विश्व भर के व्यापारिक साझेदारों पर 10% से 49% तक टैरिफ की घोषणा की थी। भारत जैसे देशों पर 26% टैरिफ लगाया गया, जबकि चीन पर 34% और दक्षिण अफ्रीका पर 30% टैरिफ निर्धारित किया गया। हालांकि, वैश्विक दबाव के चलते इन टैरिफ को 90 दिनों के लिए निलंबित कर दिया गया, जिसकी समयसीमा अब 9 जुलाई को समाप्त हो रही है। ट्रम्प ने 7 जुलाई को अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर ऐलान किया कि 12 देशों को टैरिफ पत्र भेजे जाएंगे, जिनमें कोई अपवाद नहीं होगा। यह कदम न केवल ब्रिक्स देशों को निशाना बनाता है, बल्कि वैश्विक व्यापार व्यवस्था को भी चुनौती देता है।

ब्रिक्स समूह, जिसमें ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका के साथ-साथ मिस्र, इथियोपिया, इंडोनेशिया, ईरान और संयुक्त अरब अमीरात जैसे नए सदस्य शामिल हैं, वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रभावशाली शक्ति बन चुका है। 2024 में चार नए देशों और 2025 में इंडोनेशिया के शामिल होने से इस समूह का दायरा और बढ़ गया है। ब्रिक्स देशों की कुल जनसंख्या विश्व की लगभग आधी है, और यह समूह वैश्विक जीडीपी का 40% और व्यापार व निवेश प्रवाह का 25% हिस्सा नियंत्रित करता है। ऐसे में, ब्रिक्स का बढ़ता प्रभाव अमेरिका के लिए असहजता का कारण बन रहा है, खासकर जब यह समूह अमेरिकी डॉलर की वैश्विक प्रभुता को चुनौती देने की कोशिश कर रहा है।

17वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में रियो डी जेनेरियो में जारी संयुक्त घोषणापत्र में ब्रिक्स देशों ने अमेरिका की एकतरफा टैरिफ नीतियों की कड़ी आलोचना की। घोषणापत्र में कहा गया कि टैरिफ और गैर-टैरिफ उपाय वैश्विक व्यापार को विकृत करते हैं और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के नियमों का उल्लंघन करते हैं। ब्रिक्स ने एक खुले, निष्पक्ष, और नियम-आधारित बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली की वकालत की, जो वैश्विक मंदी और धीमी वृद्धि को रोकने के लिए आवश्यक है। इस बयान ने ट्रम्प के गुस्से को और भड़का दिया, जिन्होंने इसे ₹अमेरिका विरोधी₹ करार देते हुए 10% अतिरिक्त टैरिफ की धमकी दी।

ट्रम्प का यह रुख नया नहीं है। जनवरी 2025 में भी उन्होंने ब्रिक्स देशों को चेतावनी दी थी कि अगर वे डॉलर के विकल्प के रूप में नई मुद्रा विकसित करते हैं, तो 100% टैरिफ का सामना करना पड़ेगा। यह धमकी ब्रिक्स की उस महत्वाकांक्षा से जुड़ी है, जिसमें वह अमेरिकी डॉलर और यूरो पर वैश्विक निर्भरता को कम करने के लिए एक वैकल्पिक भुगतान प्रणाली या नई मुद्रा की दिशा में काम कर रहा है। 2022 के 14वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में इस विचार की नींव रखी गई थी, और रूस-चीन जैसे देशों ने रूबल और युआन में 95% व्यापार शुरू कर इस दिशा में कदम बढ़ा दिए हैं।

भारत के लिए यह स्थिति विशेष रूप से जटिल है। एक ओर, भारत ब्रिक्स का एक प्रमुख सदस्य है, जो वैश्विक दक्षिण की आवाज को मजबूत करने और आर्थिक सहयोग बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। दूसरी ओर, अमेरिका के साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी और 8 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार इसे टैरिफ युद्ध में नाजुक स्थिति में डालता है। भारत ने अप्रैल में लगाए गए 26% टैरिफ को पूरी तरह हटाने की मांग की है, और दोनों देशों के बीच सितंबर-अक्टूबर तक एक अंतरिम व्यापार समझौते की उम्मीद है। हालांकि, केंद्रीय वाणिज्य मंत्री ने स्पष्ट किया है कि भारत राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देगा और किसी भी डेडलाइन के दबाव में समझौता नहीं करेगा।

ट्रम्प की नीतियों का प्रभाव केवल व्यापार तक सीमित नहीं है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं, विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स और रत्न-आभूषण जैसे क्षेत्र, जो भारत के लिए 14 अरब और 9 अरब डॉलर के निर्यात बाजार हैं, इस टैरिफ युद्ध से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं। हालांकि, फार्मास्यूटिकल्स और ऊर्जा क्षेत्रों को फिलहाल छूट दी गई है, जो भारत के 12.2 अरब डॉलर के दवा निर्यात के लिए राहत की बात है। फिर भी, विशेषज्ञों का मानना है कि लंबे समय में टैरिफ में बदलाव इन क्षेत्रों को भी प्रभावित कर सकते हैं।

ब्रिक्स देशों का जवाबी रुख भी कम आक्रामक नहीं है। चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने कहा कि ब्रिक्स का उद्देश्य किसी देश के खिलाफ नहीं, बल्कि समावेशी और सहकारी विकास को बढ़ावा देना है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पिछले साल अमेरिका पर डॉलर को हथियार बनाने का आरोप लगाया था, और ब्रिक्स की नई मुद्रा की योजना को वैश्विक वित्तीय प्रणाली में अमेरिकी प्रभुत्व के खिलाफ एक कदम माना जा रहा है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इस टकराव का प्रभाव गहरा हो सकता है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने 2025-26 के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर को 6.2% अनुमानित किया है, जो वैश्विक अनिश्चितताओं और व्यापार तनाव के कारण 0.3% कम है। ब्रिक्स देशों का आंतरिक व्यापार 2025 में 1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच चुका है, जो उनकी आर्थिक ताकत को दर्शाता है। लेकिन ट्रम्प की टैरिफ नीति इस वृद्धि को बाधित कर सकती है, जिससे वैश्विक मंदी का खतरा बढ़ सकता है।

इस तनाव का एक और आयाम ब्रिक्स की आतंकवाद के खिलाफ अटल एकजुटता है। 17वें शिखर सम्मेलन में, पहलगाम में हुए भीषण आतंकी हमले की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए ब्रिक्स ने आतंकवाद के खात्मे के लिए निर्णायक और ठोस कार्रवाई का आह्वान किया। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस मंच का प्रभावी उपयोग कर पाकिस्तान को वैश्विक कटघरे में खड़ा किया, जिसने ब्रिक्स की भू-राजनीतिक प्रासंगिकता को और सशक्त किया।

यह टकराव केवल व्यापारिक नीतियों तक सीमित नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन का एक गहन प्रश्न है। ट्रम्प की "अमेरिका पहले" नीति और ब्रिक्स की बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था की दमदार वकालत एक ऐसी वैचारिक जंग की शुरुआत कर रही है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था को अभूतपूर्व दिशाओं में ले जा सकती है। क्या यह संघर्ष एक नई विश्व व्यवस्था को आकार देगा, या यह वैश्विक मंदी का कारण बनेगा? यह सवाल भविष्य के गर्भ में छिपा है, मगर इतना निश्चित है कि आने वाले दिन वैश्विक मंच पर ऐतिहासिक बदलावों के साक्षी बनेंगे।

**प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)**

# शिक्षा, वैज्ञानिक सोच, और जागरूकता से ही होगा अंधविश्वासों का खात्मा !

आज हम इक्कीसवीं सदी में सांस ले रहे हैं।यह युग विज्ञान और तकनीक का युग है जहां आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) का प्रयोग किया जा रहा है। विज्ञान और तकनीक के इस दौर के बीच भारत आज भी एक बहुत ही धार्मिक देश है, जहां अलग-अलग धर्म, संप्रदायों, वर्गों के लोग आपसी सहयोग, सद्भावना से रहते हैं, लेकिन विज्ञान और तकनीक के इस दौर में भी आज भी भारतीय समाज में कहीं न कहीं अंधविश्वास की जड़ें अब भी कम गहरी नहीं हैं। आज जरूरत इस बात की है कि अंधविश्वास की इन जड़ों को समूल नष्ट किया जाए।वास्तव में अंधविश्वास, अज्ञानता, डर, या तर्कहीन विश्वासों पर आधारित एक विश्वास या प्रथा है। यह अक्सर अलौकिक शक्तियों, भाग्य, या कुछ कार्यों या वस्तुओं के शुभ या अशुभ प्रभावों में विश्वास से जुड़ा होता है। अंधविश्वास किसी तर्क या प्रमाण पर आधारित नहीं होते हैं, बल्कि ये अक्सर मान्यताओं, परंपराओं, या व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित होते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि ये अक्सर परंपराओं और रीति-रिवाजों से जुड़े होते हैं, जिनका पालन बिना किसी तर्क या प्रमाण के किया जाता है।हाल ही में अंधविश्वास के चक्कर में बिहार में परिवार के पांच लोगों की हत्या की खबरें मीडिया की सुर्खियों में आईं थीं।अंधविश्वास के कारण हैवानों ने पति-पत्नी और बच्चों को मार डाला, यह बहुत ही दुखद है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार पूर्णिया जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र अंतर्गत राजीगंज पंचायत के टेटगामा वार्ड-10 में डायन का आरोप लगाकर गांव के ही एक ही परिवार के पांच लोगों की पीट-पीटकर और जिंदा जलाकर हत्या कर दी गई। मरने वालों में तीन महिलाएं और दो पुरुष शामिल हैं। इसी प्रकार से आजमगढ़ में पुत्र की चाहत में एक महिला अंधविश्वास की भेंट चढ़ गई। परिजनों का आरोप है कि तांत्रिक ने झांड़फूंक के नाम पर नाले का गंदा पानी पिलाया जिससे उसकी मौत हुई। इतना ही नहीं, मध्यप्रदेश के एक गांव में देवस्थान के चबूतरे पर नरबलि देने का मामला भी सामने आया है। इसी प्रकार से कुछ समय पहले महाराष्ट्र के अमरावती जिले में अंधविश्वास की वजह से मासूम बच्चे के साथ दरिंदगी की दिल दहला देने वाली घटना सामने आई थी। जानकारी के अनुसार यहां एक महिला ने 10 दिन की नवजात बच्ची को पेट दर्द से राहत दिलाने के नाम पर उसे गर्म लोहे की छड़ से दाग दिया। दरअसल अंधविश्वास 'आत्मज्ञान' के अभाव में पनपता है, व्यक्ति को ज्ञान का अभाव होता है। यह देखा गया है बहुत बार हमारी आस्था ही अंधविश्वास में बदल जाती है। वास्तव में, जब हमारी आस्था हमारी आत्मा और हमारे ज्ञान का गला घोंटने लगती है, तो हम अपने सोचने-समझने की क्षमताएं खो देते हैं और वहीं जाकर अंधविश्वास का रूप धारण कर लेता है।'अंधविश्वास' एक नकारात्मक भावना है, जबकि 'आस्था' एक सकारात्मक। आस्था हमें आगे बढ़ाती है, जबकि अंधविश्वास पीछे की ओर ढकेलता है। आस्था हमारे विश्वास का 'दृढ़ और अडिग स्वरूप' है, जबकि अंधविश्वास, विश्वास का एक विचलित और विकृत स्वरूप होता है।हम ईश्वर के प्रति आस्था रखें, यह ठीक है, क्यों कि आस्था हमें आगे बढ़ाती है, हमारे में विश्वास की जड़ों को मजबूत करती है, लेकिन हम अंधे होकर किसी भी चीज का अनुसरण नहीं करें। अंधविश्वास चमत्कार को



जन्म नहीं देता। न ही कभी चमत्कार होते हैं। आदमी को चमत्कार के लिए कर्म करने पड़ते हैं, मेहनत करनी पड़ती है। टोनो-टोटको से यदि चमत्कार होते तो हर कोई कर लेता। यह बहुत दुखद है कि अनेक बार टोनो टोटको के चक्कर में हम अपने जीवन को दांव पर लगा देते हैं और जीवन में बदलाव की या चमत्कार की उम्मीद करने लगते हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि आस्था कभी भी मूर्तिपूजा, पूजा-पाठ, उपासना, किसी नियम विशेष या किसी धार्मिक-कर्मकांड विशेष का मोहताज नहीं होता। आस्था, ईश्वर की तरह ही असीम है, अनादि है, अनंत है।कबीर जी ने कहा था – 'पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार। याते चाकी भली, जो पीस खाए संसार।।' हाल फिलहाल, यह बहुत ही दुखद है कि आज के इस युग में भी हम अनेक प्रकार की कुरूतियों, अंधविश्वासों और पाखंडों को ढ़ो रहे हैं और इनसे बाहर नहीं निकल पा रहे हैं। वास्तव में भारतीय समाज में व्याप्त ये सभी कुरीतियां, पाखण्ड एवं अंधविश्वास से जुड़ीं घटनाएं हमारे समाज की तरक्की में सबसे बड़ी बाधक बनी हुई हैं। आज अंधविश्वास के नाम पर पशु बलि दी जाती है। यहां तक कि बहुत बार तो ऐसा भी देखा गया है कि जादू-टोनों पर भरोसा करते हुए कोई नरबलि जैसे कृत्य तक पर उतारू हो जाते हैं। वास्तव में यह अंधविश्वास की पराकाष्ठा ही कहा जा सकता है। शिक्षा की कमी, परंपरा और सामाजिक दबाव अंधविश्वास के प्रमुख कारण हैं। वास्तव में आज वैज्ञानिक सोच, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने की जरूरत है।अज्ञात, बीमारी, या मृत्यु का भय अंधविश्वास को जन्म दे सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि अंधविश्वासी प्रथाओं और उनके हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाना आज के समय में बहुत ही महत्वपूर्ण व जरूरी है। सच तो यह है कि हमें हमेशा सत्य की खोज करनी चाहिए और अंधविश्वासों पर कभी भी आंख मूंदकर विश्वास नहीं करना चाहिए।यह ठीक है कि आज शिक्षा व तकनीक दोनों क्षेत्रों में प्रगति के कारण हमारे समाज के लोग अंधविश्वास की छाया से निकलने लगे हैं, लेकिन अभी काफी कुछ करना बाकी है। कहना ग़लत नहीं होगा कि अंधविश्वास आज भी एक जटिल समस्या है जिसके कई कारण और निवारण हैं। शिक्षा, वैज्ञानिक सोच और जागरूकता बढ़ाकर, हम अंधविश्वासों को दूर करने और एक अधिक तर्कसंगत और वैज्ञानिक समाज बनाने की दिशा में काम कर सकते हैं। हमारे देश में आज अंधविश्वास की रोकथाम के लिए दंडात्मक प्रावधान हैं, लेकिन बावजूद इसके बहुत से पाखंडी लोग, तांत्रिक इस दिशा में सक्रिय हैं। पाखंड व अंधविश्वास का सहारा लेकर ऐसे लोग अपने चूल्हे के नीचे आंच सरकाते हैं और लोगों को बरगलाते हैं। अंधविश्वास समाज को अंदर ही अंदर से खोखला व बर्बाद कर देता है, इसलिए इस पर रोक बहुत आवश्यक है। याद रखिए कि अंधविश्वास हमारी संस्कृति की धरोहर नहीं हैं, जैसा कि

अक्सर ऐसा समझा जाता है।अंधविश्वास की असली जड़ भूत-प्रेत का डर, जादू-टोने होने का डर, प्रेम-विवाह, व्यापार-नौकरी में असफलता का डर और दुर्भाग्य घटित होने का डर है, जबकि ऐसा कुछ भी नहीं होता है। तांत्रिक उपायों से न तो सफलता मिलती है, न ही कोई बीमारी ठीक होती है, न ही पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है, न ही कोई काम बनते हैं,यह कटु सत्य है। परेशानियां और दुःख कभी भी टोनो-टोटको से ठीक नहीं होते। विज्ञान और तकनीक के इस दौर में शिक्षित कहे जाने वाले लोग भी तांत्रिकों, पाखंडियों के चक्कर में आखिर क्यों आने लगे हैं, यह समझ से परे की बात है। अंत में यही कहूंगा कि अंधविश्वास को खत्म करने के लिए शिक्षा, वैज्ञानिक सोच, और जागरूकता फैलाना ज़रूरी है। याद रखिए कि वैज्ञानिक सोच लोगों को घटनाओं को तर्कसंगत रूप से देखने और उनके पीछे के कारणों को समझने में मदद करती है। इसके अलावा कानून को भी सख्त बनाने की आवश्यकता है। तभी हम वास्तव में हम अपने समाज और देश से अंधविश्वासों का खात्मा कर पायेंगे।

**सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।**

# डी के शिवकुमार को 'सीएम इन वेटिंग' में रखने के पीछे खरगे का पुत्र मोह तो नहीं!

**रामस्वरूप रावतसरे**

चिक्कबल्लापुर में मीडिया से बातचीत में कर्नाटक के डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार ने सीएम सिद्धारमैया के बारे में कहा, "मेरे पास और क्या चारा है? मुझे उनके साथ खड़ा होना है और उनका साथ देना है। मुझे इसमें कोई ऐतराज नहीं है। पार्टी हाईकमान जो कहेगा, जो फैसला करेगा, वो पूरा होगा, मैं अभी इस पर कुछ बोलना नहीं चाहता। लाखों कार्यकर्ता इस पार्टी के साथ हैं।'

कर्नाटक की सियासत में एक बार फिर डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार की उम्मीदों को तगड़ा झटका लगा है। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने साफ कर दिया है कि वह पूरे पाँच साल तक अपनी कुर्सी पर बने रहेंगे। इस बयान ने शिवकुमार और उनके समर्थकों के अरमानों पर पानी फेर दिया। शिवकुमार ने मजबूरी में सिद्धारमैया का साथ देने की बात कही लेकिन उनके बयान में छिपी निराशा साफ झलक रही थी।

राजनीतिक पंडितों की माने तो डीके शिवकुमार का यह कहना कि मेरे पास और कोई रास्ता नहीं, मुझे उनके साथ खड़ा होना ही है। यह बयान उनकी उस हताशा को दिखाता है जो बार-बार हाईकमान के फैसलों से उपज रही है। दरअसल, कर्नाटक में कॉन्ग्रेस की सत्ता को मजबूत करने में शिवकुमार की मेहनत को कोई नकार नहीं सकता, फिर भी उन्हें बार-बार इंतजार करने को कहा जा रहा है। क्या वह हमेशा 'सीएम इन वेटिंग' बने रहेंगे या कोई बड़ा सियासी कदम भी उठा सकते हैं?

इधर सिद्धारमैया ने पत्रकारों से बातचीत में दो टूक कहा, "हाँ, मैं मुख्यमंत्री बना रहूँगा। आपको क्यों शक है?" उन्होंने भाजपा और जेडी(एस) पर नेतृत्व परिवर्तन की अफवाहें फैलाने का आरोप लगाया। दूसरी तरफ डीके शिवकुमार ने सिद्धारमैया के बयान के बाद कहा, "मुख्यमंत्री के सामने मेरा कोई सवाल ही नहीं उठता। मैंने किसी से मेरे पक्ष में बोलने को नहीं कहा।' डीके ने यह भी जोड़ा कि कॉन्ग्रेस हाईकमान का जो भी फैसला होगा, वह उसे मानेंगे लेकिन उनके इस बयान में वह जोश और आत्मविश्वास नहीं दिखा, जो पहले उनके भाषणों में झलकता था। यह साफ है कि हाईकमान ने एक बार फिर सिद्धारमैया को प्राथमिकता दी है और शिवकुमार को इंतजार करने को कहा गया है।

साल 2023 के विधानसभा चुनाव में कॉन्ग्रेस की जीत के बाद शिवकुमार को उम्मीद थी कि उन्हें सीएम की कुर्सी मिलेगी। उनकी मेहनत और संगठन कौशल ने पार्टी को 135 सीटें दिलाई थीं। सूत्रों की मानें तो उस वक्त ढाई-ढाई साल के फॉर्मूले की बात हुई थी, जिसमें सिद्धारमैया और शिवकुमार बारी-बारी से सीएम बनते। लेकिन अब सिद्धारमैया ने साफ कर दिया है कि वह पूरे कार्यकाल तक कुर्सी नहीं छोड़ेंगे और हाईकमान ने भी इस पर मुहर लगा दी है।

बताया जाता है कि कर्नाटक की सियासत में जाति का एंगल हमेशा से अहम रहा है। डीके शिवकुमार ताकतवर वोक्कालिगा समुदाय से आते हैं जो कर्नाटक की राजनीति में बड़ा प्रभाव रखता है। उनके समर्थकों का मानना है कि पार्टी ने उनके साथ नाइंसाफी की है। हाल ही में वोक्कालिगा समुदाय के कुछ धर्मगुरुओं ने भी शिवकुमार के पक्ष में बयान दिए थे। दूसरी तरफ सिद्धारमैया पिछड़े वर्ग (कुर्मी) से हैं, और उनका सामाजिक आधार भी मजबूत है। कॉन्ग्रेस हाईकमान ने सिद्धारमैया को समर्थन देकर यथास्थिति बनाए रखने का फैसला किया।

कॉन्ग्रेस विधायक इकबाल हुसैन ने दावा किया था कि 100 से ज्यादा विधायक शिवकुमार को सीएम बनाने के पक्ष में हैं। उन्होंने कहा था कि अगर कॉन्ग्रेस को 2028 में सत्ता में वापसी करनी है तो शिवकुमार को मौका देना होगा लेकिन हाईकमान ने हुसैन को नोटिस थमाकर चुप करा दिया। यह दिखाता है कि पार्टी में अनुशासन की आड़ में शिवकुमार के समर्थकों को दबाया जा रहा है।

कर्नाटक विधानसभा में कॉन्ग्रेस के 138 विधायक हैं जिसमें से करीब 100 शिवकुमार के साथ माने जाते हैं। फिर भी हाईकमान ने सिद्धारमैया को प्राथमिकता दी।

कॉन्ग्रेस हाईकमान ने इस पूरे मामले में सधी हुई चाल चली। सूत्रों के मुताबिक, बिहार चुनाव तक सिद्धारमैया को बनाए रखने का बहाना बनाया गया। हाईकमान को डर है कि सिद्धारमैया को हटाने से बिहार में पिछड़े वर्ग के बीच गलत संदेश जाएगा और भाजपा इसे भुनाएगी। साथ ही शिवकुमार के खिलाफ चल रही सीबीआई जाँच को भी फैसले में शामिल किया गया। 2019 में मनी लॉन्ड्रिंग केस में उनकी जेल यात्रा को याद दिलाकर कहा गया कि अगर वह सीएम बने तो भाजपा जाँच एजेंसियों को और सक्रिय कर सकती है जिससे कॉन्ग्रेस को नुकसान हो सकता है। यही नहीं, मल्लिकार्जुन खरगे ने सिद्धारमैया के पक्ष में फैसला लेते हुए यह भी सुनिश्चित किया कि उनके बेटे प्रियांक खरगे का नाम भी सीएम की दौड़ में बना रहे। सूत्रों का कहना है कि सिद्धारमैया ने शिवकुमार के सामने प्रदेश अध्यक्ष की कुर्सी छोड़ने की शर्त रखी थी लेकिन शिवकुमार ने इसे ठुकरा दिया। इसके बाद गेंद हाईकमान के पाले में गई और खरगे ने यथास्थिति बनाए रखने का फैसला किया।

जानकारों की माने तो शिवकुमार की स्थिति एमपी में ज्योतिरादित्य सिंधिया, छत्तीसगढ़ में टीएस सिंहदेव और राजस्थान में सचिन पायलट जैसी है, जिन्हें भी कॉन्ग्रेस ने लंबे समय तक इंतजार कराया। सिंधिया ने आखिरकार बगावत कर भाजपा का दामन थाम लिया जबकि पायलट ने धैर्य रखा। हालाँकि शिवकुमार ने अब तक तो कॉन्ग्रेस के प्रति वफादारी दिखाई है लेकिन उनके समर्थकों में बेचैनी बढ़ रही है। वोक्कालिगा समुदाय का गुस्सा और उनकी अपनी महत्वाकांक्षा देर-सबेर कोई बड़ा सियासी तूफान ला सकती है। क्या शिवकुमार बगावत करेंगे? यह संभावना कम लगती है क्योंकि वह कॉन्ग्रेस के लिए कर्नाटक में एक मजबूत चेहरा हैं लेकिन अगर हाईकमान बार-बार उनकी अनदेखी करता रहा तो उनके धैर्य की भी सीमा टूट सकती है। फिलहाल उन्होंने हाईकमान के फैसले को स्वीकार कर लिया है लेकिन उनके समर्थकों का मानना है कि यह शांति ज्यादा दिन नहीं टिकेगी।

कर्नाटक की सियासत में यह ड्रामा अभी थमा नहीं है। सिद्धारमैया की कुर्सी फिलहाल सुरक्षित है लेकिन शिवकुमार और उनके समर्थकों की बेचैनी बनी रहेगी। अगर कॉन्ग्रेस 2028 के चुनाव में कमजोर प्रदर्शन करती है, तो शिवकुमार के लिए मौका बन सकता है लेकिन अगर हाईकमान ने फिर से उनकी अनदेखी की, तो कर्नाटक में कॉन्ग्रेस की एकता पर सवाल उठ सकते हैं। भविष्य में क्या होगा, यह तो आने वाला समय ही बताएगा।

# व्यंग्य : " आज़ के " गुरुओं " की हरकतों से सर शर्म से झुक जाता है ।

अरे साहित्यकार महोदय ! अगर तुम ईमानदारी से लिखते हों तो, तुम्हें तुम्हारे शब्दों की कसम है । अब तुमने मुझे आत्महत्या करने से रोका तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा ? अरे गुरुदेव तनिक ठहरो तो सही ! मैं तुम्हें इस कार्य के लिए अब कतई नहीं रोकूंगा और मैं अपनी " भीष्म प्रतिज्ञा " भी नहीं तोड़ूंगा और नहीं मैं कोई " रणछोड़ " की तरह बनूंगा ।

पहले मेरे पास सुकून के साथ मन की शांति से बैठो और अपने दिमाग को ठंडा करके सबसे पहले मेरे साथ आप आखरी " चाय " तो पीजीयें , फिर बताना आपके साथ क्या हुआ ? इस बात की पूर्ण रूप से व्याख्या करके इसे परिभाषित करना ? कि , तुम आत्मा हत्या क्यों करना चाहते हो ?

ठीक है ! साहित्यकार महोदय , तुम मेरी बात सुनना चाहते हो तो कान खोलकर आखरी बार मेरे " मन की बात " सुनो । आजकल गुरु , गुरु नहीं रहा बल्कि वह महागुरु से होता हुआ " गुरु घंटाल " हो गया है । क्या-क्या बताऊं अब अपने दिल के हाल हमारे गुरुकुल से " गुरु " प्रारंभ हुए थे । इस आधुनिक युग में चलते-चलते शिक्षक , टीचर , मास्टर तक बन गए हैं और भविष्य में क्या बन जाएंगे । यह भी बता नहीं सकता हूं । अब तो गुरु की हालात " अतिथि " के रूप में हो गई है । ऐसे माहौल को देखते हुए गुरु का " गु " कहीं सभ्यता और संस्कृति की तरह गुम हो गया और गुरु का "रु" कहीं रूठ कर हमेशा के लिए चला गया है । ऐसे हालातो में अब मैं तुम्हें और क्या बताऊं ? क्या करूं , मरूं नहीं तो ? क्या ना करूं कुछ समझ में नहीं आ रहा है ? आज़ लालच भरीं दुनिया के गुरु सब-कुछ भूल गए हैं । गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु का सम्मान कैसे हो ? आज के गुरुओं का महागुरु होना प्रतिष्ठित का सुचक बन गया है । आज यही महागुरु अपने कुल गुरु " दिनकर गुरु " का सम्मान भूल गए और " राजनीति " से पद प्राप्त करके " सामाजिक " वातावरण में अपना दबदबा कायम कर रहे हैं और " धार्मिक " रूप से प्रतिष्ठित होना चाहते हैं और वह " आर्थिक " रूप से मजबूत होकर अपने आने वाली सात पीढीयों के लिए झूठ , फरेब , छल , कपट के साथ शिक्षा को व्यवसाय , उद्योग बना कर " धन " एकत्र करना चाहते हैं । ऐसे ऐसे माहौल में आज कल के गुरु तो अपने छात्रों के साथ बैठकर " शराब , शबाब और कबाब " का सेवन करने से भी नहीं चूक रहे हैं । जब इस प्रकार से कोई ख़बर या बात सुनता हूं तो मेरा कलेजा फट जाता है और जब कभी कोई अपनी शिष्या के साथ रंगरेलियां मनाते हैं और यह घरवाली तक बना लेते है तो ऐसी इच्छा होती है कि , यह धरती फट जाए और मैं इसमें समा जाऊं । इन वर्तमान के गुरुओं की हरकतों को देखकर सर शर्म से झुक जाता है और आत्महत्या करने का मन करता है ।

मेरे गुरुदेव , मैं आपकी भावनाओं को समझता हूं । मैं आपका सम्मान करता हूं लेकिन , मैं अपनी कसम को यही तोड़ता हूं भले ही मैं आपकी नजर में अपराधी बन जाउंगा परंतु आपको आत्महत्या नहीं करने दूंगा । माना कि , अभी " अमावस " की काली रात है तो क्या हुआ । कल फिर " पूर्णिमा " की रात भी तो आएगी , गुरुदेव ऐसा आप कहते हैं । जब मैं निराशा के अंधकार में चला गया था तब आपने मुझे यह कहा था " तेरे सितारे गर्दिश में है तो क्या हुआ लेकिन , वह अभी भी चमकदार है । " गुरु आप गुरु है और गुरु ही रहेगा । जो गुरु शब्द का मान नहीं रख सकता है । वह मेरी व आपकी , सबकी नज़र में गुरु शब्द का सम्मान नहीं रख सकता है । गुरूदेव वह गुरु, गुरु नहीं हो सकता है इसे शाश्वत सत्य की तरह हमें स्वीकार करना होगा ।

गुरूदेव आप मेरी छोटी सी बात को समझ गएं होंगे और मन में आत्म हत्या करने का जों विचार आया है । उस विचार का त्याग कर दो और समझ गएं ना मैं क्या कहना चाहता हूं ।

**प्रकाश हेमावत**

# बचपन को अख़बारों में जगह क्यों नहीं?

रविवार की सुबह बेटे प्रज्ञान को गोद में लेकर अख़बार से कोई रोचक बाल-कहानी पढ़ाने की इच्छा अधूरी रह गई। किसी भी प्रमुख अख़बार में बच्चों के लिए एक भी रचना नहीं थी। समाज बच्चों को पढ़ने के लिए कहता है, पर उन्हें पढ़ने को क्या देता है? यह संपादकीय हमारे समाचार पत्रों की बच्चों के प्रति उपेक्षा पर गहरी चोट करता है और मांग करता है कि समाचार पत्रों में बच्चों के लिए नियमित स्थान आरक्षित हो — ताकि बचपन शब्दों से जुड़े, संवेदना से सींचा जाए और विचारों से पल्लवित हो।

✍ प्रियंका सौरभ

रविवार की सुबह थी। मन हुआ कि बेटा प्रज्ञान गोद में आए और हम दोनों मिलकर अख़बार में से कोई रोचक कहानी पढ़ें — ताकि आधुनिक स्क्रीन युग में भी शब्दों की मिठास उसे मिल सके। परंतु खेदजनक आश्चर्य हुआ कि प्रतिष्ठित अख़बारों में बच्चों के लिए एक भी कहानी, चित्रकथा, या बाल संवाद उपलब्ध नहीं था। इस पीड़ा से उपजा यह सवाल एक सामूहिक चिंतन की मांग करता है — "जब हम अपने अख़बारों में बच्चों के लिए छापते ही कुछ नहीं, तो हम उनसे पढ़ने की उम्मीद किस अधिकार से करते हैं?"

**बाल मनः एक रिक्त पन्ना**

हमारी शिक्षा व्यवस्था, अभिभावक वर्ग और समाज तीनों ही अक्सर एक स्वर में कहते हैं कि आज के बच्चे किताबें नहीं पढ़ते। वे मोबाइल, इंस्टाग्राम और गेमिंग की दुनिया में खो चुके हैं। पर कोई ये क्यों नहीं पूछता कि उन्हें क्या पढ़ने के लिए दे रहे हैं हम? अख़बार, जो एक समय में हर घर की सुबह का हिस्सा हुआ करता था — अब बच्चों के लिए पूरी तरह से एक "वयस्कों का युद्धक्षेत्र" बन चुका है, राजनीति के झगड़े, नेताओं के आरोप-प्रत्यारोप, बलात्कार, हत्याएं, भ्रष्टाचार, क्रिकेट, फिल्में और योगा टिप्स। कहाँ हैं राजा की बात, हाथी की सवारी, विज्ञान की कल्पना, चाँद की कविता, और जीवन मूल्य सिखाती छोटी कहानियाँ?

**जब बच्चे दिखते ही नहीं**

**आज के समाचार पत्रों में बच्चे सिर्फ दो तरह से "दिखते" हैं —**

जब कोई बच्चा यौन हिंसा या हत्या का शिकार होता है। या जब कोई बच्चा बोर्ड परीक्षा में 99.9% अंक लाकर मीडिया का ताज बन जाता है। क्या इतने सीमित संदर्भों में बच्चे होने का अनुभव समझा जा सकता है? अख़बारों ने बच्चों को समाज से अलग करके एक ऐसी चुप्पी में डाल दिया है, जहां उनका न तो रचनात्मक स्वर सुनाई देता है, न जिज्ञासु आंखें दिखाई देती हैं।

**संपादकीय दूरदर्शिता की अनुपस्थिति**

किसी भी अखबार का मुख्य उद्देश्य होता है —₹समाज को जागरूक बनाना और उसकी सोच को दिशा देना।₹ तो फिर एक पूरे समाज की नींव यानी बच्चों के लिए कोई पन्ना क्यों नहीं? क्या आज का संपादक इतना व्यस्त हो गया है कि उसे यह भी याद नहीं कि उसकी जिम्मेदारी अगली पीढ़ी तक संस्कार और विचार की मशाल पहुँचाने की भी है? एक समय में ₹बाल-जगत₹, ₹बाल प्रभा₹, ₹बाल गोष्ठी₹, ₹बाल मेला₹ जैसे खंडों से अख़बार बच्चों को भी संवाद में शामिल करते थे। आज वे या तो बंद हो गए या ऑनलाइन लिंक की बेगानी भीड़ में खो गए।

**विज्ञापन और बाजारवाद का हमला**

बच्चे आज अख़बार के लिए 'ग्राहक' नहीं हैं। वे शैंपू या रेफ्रिजरेटर नहीं खरीदते। इसी कारण "बाजार" की भाषा में उनकी कोई 'विज्ञापन वैल्यू' नहीं है। और जहाँ विज्ञापन की भाषा नीति तय करने लगे, वहाँ बचपन बेमानी हो जाता है।

प्रत्येक अख़बार का लगभग 40% भाग विज्ञापनों से भरा रहता है — रियल एस्टेट, कपड़े, कोचिंग सेंटर, हॉस्पिटल, ब्रांडेड घड़ियाँ... कहीं भी यह नहीं दिखता कि कोई अख़बार यह पूछ रहा हो। ₹बच्चों को हम क्या पढ़ा रहे हैं?"

**जब बाल साहित्य का विलोपन होता है**

बाल साहित्य केवल मनोरंजन नहीं है —यह बच्चों को सोचने, सवाल करने, कल्पना करने और समाज से जुड़ने की प्राथमिक पाठशाला है। एक कहानी जिसमें एक पेड़ अपने फल देता है, एक चिड़िया घोंसला बनाती है, एक बच्चा अपने दोस्त के साथ पक्षियों को पानी पिलाता है —ये सब बच्चों को मानवता का बीज देते हैं। जब ये कहानियाँ हट जाती हैं, तो वहां केवल ड्रामा, सनसनी, और डाटा बचता है। और यही संवेदनहीनता आने वाली पीढ़ी में पनपती है।

**क्या पढ़ाई और ज्ञान सिर्फ स्कूल का काम है?**

हमारे समाज ने बच्चों के ज्ञान का ठेका सिर्फ स्कूलों को दे रखा है। अख़बार, जो कभी 'घर की पाठशाला' हुआ करता था, अब स्वयं को 'वयस्कों की गॉसिप' तक सीमित कर चुका है। क्या बच्चे समाचारों के योग्य नहीं? क्या विज्ञान, पर्यावरण, नैतिकता, और समाज की बातें उन्हें नहीं बताई जानी चाहिए?

यदि हम चाहते हैं कि बच्चे "समझदार नागरिक" बनें तो

हमें उन्हें शुरुआत से ही संवाद और सवालों से जोड़ना होगा — और अख़बार इसकी सशक्त जगह हो सकती है।

**क्या किया जा सकता है?**

साप्ताहिक 'बाल संस्करण' पुनः शुरू किए जाएं — हर रविवार या महीने में दो बार बच्चों के लिए विशेष खंड हो। बाल संवाद और चित्रकथाएँ हों — जिनमें नैतिक मूल्य, विज्ञान की जिज्ञासा और समाज का परिचय हो। बच्चों की रचनाएँ छापी जाएं — कविताएँ, चित्र, सवाल, विचार। बाल पत्रकारिता को बढ़ावा दिया जाए — विद्यालय स्तर पर बच्चों से लिखवाया जाए, जो छपे भी। प्रेरणादायक 'बच्चों के नायक' दिखाए जाएं — जो स्क्रीन के बाहर भी उपलब्ध हों।

**बेटा प्रज्ञान उस दिन सुबह मुझसे बोला —**

₹माँ, क्या आपके अख़बार में बच्चों के लिए कुछ नहीं होता?₹

मैं चुप रह गई। ये चुप्पी सिर्फ एक माँ की नहीं, एक पूरे समाज की चुप्पी है। और जब अख़बार समाज का दर्पण होते हैं, तो इस दर्पण में प्रज्ञान जैसे लाखों बच्चों की मासूम जिज्ञासा को जगह मिलनी ही चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि कल के भारत में पाठक, लेखक और संवेदनशील नागरिक जन्म लें — तो आज के समाचार पत्रों में प्रज्ञान के लिए भी एक पन्ना आरक्षित करना होगा।

# सरायकेला में आकर्षण केन्द्र रहा मुहर्रम जुलूस में आपरेशन सिन्दूर की झांकी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**सरायकेला :** सरायकेला के राजबांध से सोमवार की शाम मुहर्रम का जुलूस बेहद शान्ति पूर्ण तरीके निकाला गया।

यह जुलूस राजबांध इलाके से निकलकर सरायकेला नगर का भ्रमण करते हुए वापस राजबांध पहुंच कर समाप्त हुआ। जुलूस में ताशे-बाजे पर मुहर्रमी धुन बजाई गई। इस जुलुस का मुख्य आकर्षण आपरेशन सिन्दूर में सोफिया कुरैशी, उसकी साथी भैमिक एवं पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम की तस्वीर के साथ मिसाईल ब्रम्हस की झांकी रही। जो अखंड भारतीयत राष्ट्रीयतावादी विचार को प्रदर्शित कर रहा था। इस दौरान सरायकेला बीडिओ, सीओ मौजूद के साथ थाना प्रभारी मजिस्ट्रेट एवं पुलिस बलों के साथ मौजूद रहे।

युवाओं ने चौक-चौराहों पर रुक-रुक कर करबत और लाठीबाजी जैसे पारंपरिक कला-प्रदर्शन किए। जुलूस के देखने के लिए काफी संख्या में लोग पहुंचे थे। जिला पुलिस ने मुहर्रम को देखते हुए जुलूस के मार्ग पर पुलिस की तैनाती की गई थी।

# झारखंड के राज्यपाल ने डुरंड फुटबॉल टूर्नामेंट के तीन ट्राफी का किया अनावरण

भारतीय सेना द्वारा 134वां इस आयोजन 23 जूलाई से 23अगस्त 2025 तक चलेगा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**जमशेदपुर ,** पूर्वी सिंहभूम जिले में झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने एशिया का सबसे पुराने डुरंड फुटबाल टूर्नामेंट के तीन ट्रॉफी का अनावरण किया. भारतीय सेना द्वारा आयोजित यह 134वां डुरंड कप है. इस मौके पर झारखंड के राज्यपाल ने कहा कि एशिया का सबसे पुराना ऐतिहासिक डुरंड कप का आयोजन होना इस बात का प्रतीक है कि झारखंड की खेल संस्कृति नई ऊंचाई को छू रही है.

जमशेदपुर के बिस्टुपुर में स्थित एक्सएलआरआई सभागार में फुटबॉल डुरंड कप ट्रॉफी का अनावरण किया गया. इस मौके पर झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन, झारखंड खेल विभाग निदेशक, भारतीय सेना के पदाधिकारी, टाटा स्टील के वीपीसीएस और भारी संख्या में खेल प्रेमी मौजूद रहे. इस दौरान छउ नृत्य, संथाली नृत्य और भांगड़ा प्रस्तुत किया गया ।

बता दें कि 1888 को शिमला में ब्रिटिश सेना द्वारा इस टूर्नामेंट का आयोजन किया गया था. इस आयोजन के संस्थापक के नाम पर डुरंड कप टूर्नामेंट रखा गया है. जिसे एशिया का सबसे पुराना ऐतिहासिक फुटबॉल टूर्नामेंट कहा जाता है. इसमें देश के विभिन्न फुटबाल क्लब भाग लेते हैं. जमशेदपुर में दूसरी बार डुरंड कप का आयोजन हो रहा है .

डुरंड कप फुटबॉल टूर्नामेंट 23 जुलाई से 23 अगस्त 2025 तक खेला जाएगा. जमशेदपुर में ग्रुप सी के मुकाबले खेले जाएंगे. कुल 7 मैच खेला जायेगा, जिसमें क्वाटर फाइनल भी शामिल है. सारे मुकाबले जेआरडी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में खेले जाएंगे. इस टूर्नामेंट में विजेता टीम को तीन कप डुरंड कप, शिमला ट्राफी, और प्रेजिडेंट कप दिया जाता है.

राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने कहा कि प्रतिष्ठित एवं ऐतिहासिक डूरंड कप का आयोजन राज्य के लिए गौरव का क्षण है. ऐसे आयोजनों से राज्य में खेल संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा. राज्य के युवा इस तरह के अंतर्राष्ट्रीय आयोजन से काफी कुछ सीखेंगे. राज्यपाल ने कहा कि युवा शक्ति के अनुशासन और ऊर्जा को नई दिशा मिलेगी. फुटबॉल सभी वर्गों के बीच काफी लोकप्रिय खेल है. खेल से हमें एकता, अनुशासन, टीम भावना सीखने को मिलती है.

राज्यपाल ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार खेल के माध्यम से युवाओं को जोड़कर उनकी प्रतिभा निखारने, खेल में नए अवसर प्रदान करने का काम कर रही है. उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले ओलंपिक 2036 की मेजबानी का भी दावा किया है. झारखंड के कई युवाओं ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने खेल प्रतिभा के दम पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

# राज्य में चल रही है ट्रिपल 'एम' सरकार: अध्यख्य बनने के बाद नेताओं, मंत्रियों ने की मनमोहन की तारीफ

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

**भुबनेश्वर:** मनमोहन सामल को एक बार फिर से प्रदेश भाजपा अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। आज इसकी औपचारिक घोषणा की गई। चुनाव पर्यवेक्षक संजय जायसवाल ने इसकी औपचारिक घोषणा की। मनमोहन को भाजपा अध्यक्ष बनाए जाने के बाद मुख्यमंत्री ने मनमोहन की जमकर तारीफ की। मुख्यमंत्री ने कहा कि 2024 में मनमोहन भाई के लिए राज्य में सरकार बनेगी।भाजपा अकेले सरकार बनाने में सफल रही है। 21 में से 20 सांसद जीतना मनमोहन भाई के नेतृत्व की वजह से है। ओडिशा आज केंद्र में आकर्षण का केंद्र बन गया है। एबीवीपी कार्यकर्ता, विधायक, मंत्री, सांसद बनने वाले मनमोहन चौथी बार राष्ट्रपति बने हैं। इसी तरह सांसद संबित पात्रा ने भी प्रतिक्रिया दी है। संबित पात्रा ने कहा कि राज्य में ट्रिपल 'एम' की सरकार चल रही है। मोदी, मोहन और मनमोहन की सरकार चल रही है। मनमोहन सामल के दोबारा अध्यक्ष चुने जाने के मौके पर संबित पात्रा ने इस तरह की प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि मनमोहन भाई ने पार्टी के लिए बहुत बड़ा त्याग किया है। वे अपनी चांदबली सीट दांव पर लगाकर हार गए। जब केंद्रीय नेतृत्व ने उनसे अपनी सीट देखने को कहा तो उन्होंने कहा कि मेरे लिए मेरी पार्टी बड़ी है।

## एक लाख की स्कूटी चौदह का नंबर...!

यह हमीरपुर के संजीव कुमार का शौक,
हिमाचल प्रदेश के परिवहन विभाग को!

चौदह लाख₹का लगाया तगड़ा भोग।
वीआयपी नंबर के लिए इस शख्स ने,

खाली कर दिया हैं अपना ख़ुद खजाना!
यारों शौक के आगे नहीं हैं कोई बहाना।

इतने में तो एक ₹लग्जरी₹कार आ जाती,
स्कूटी खरीदने से जब मिल रहीं ख्याति!

इससे तो भैया खबर भी बनती हैं जाती।
ये आयोजित ऑनलाइन हुई थी नीलामी,

आये दोनों ही शख्स भी ₹नामी-गिरामी₹!
साढ़े तेरह व चौदह लाख की लगी बोली,

प्रदेश में दोपहिया वाहनों की नंबर प्लेट!
सोलन-हमीरपुर के बंदे करते हैं आखेंट।

आज तक किसी भी नंबर प्लेट के लिए,
इतनी बड़ी रकम कभी-भी ना मिली थी!

राज्य की सरकार की बांछे न खिली थी।

(संदर्भ-स्कूटी के नंबर के लिए 14 लाख किए खर्च)

**संजय एम तराणेकर**

# अमर प्रतीक, अनंत प्रश्न: सार्वजनिक प्रतिमाओं की विरासत और चुनौती

**[चौराहों पर खड़े आदर्श: श्रद्धा, स्वाभिमान और विवाद]**

भारत की सांस्कृतिक आत्मा उसकी मिट्टी में बसी कहानियों, संघर्षों और आदर्शों में साँस लेती है, और ये कहानियाँ तब जीवंत हो उठती हैं, जब सार्वजनिक स्थानों पर प्रतिमाएँ अपने अटल रूप में खड़ी होकर समय को चुनौती देती हैं। ये मूर्तियाँ केवल पत्थर या धातु का ढांचा नहीं, बल्कि एक राष्ट्र की स्मृति, प्रेरणा और सामूहिक संकल्प का प्रतीक हैं। चाहे वह दिल्ली के राजपथ पर महात्मा गांधी की शांत मुद्रा हो, जो अहिंसा का संदेश देती है, या अहमदाबाद में सरदार वल्लभभाई पटेल की 182 मीटर ऊँची स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, जो राष्ट्रीय एकता का गर्वोन्माद जगाती है—ये प्रतिमाएँ हमें हमारे गौरवशाली अतीत से जोड़ती हैं और भविष्य की राह दिखाती हैं। भारत में प्रतिमा स्थापना की परंपरा प्राचीन है, जो सिंधु घाटी की छोटी मूर्तियों से लेकर मौर्यकालीन अशोक स्तंभों और आधुनिक युग के विशाल स्मारकों तक फैली है। यह परंपरा केवल कला का प्रदर्शन नहीं, बल्कि समाज की उन आकांक्षाओं का दर्पण है, जो अपने नायकों को चिरस्थायी रूप में संजोना चाहता है।

सार्वजनिक प्रतिमाएँ समाज के लिए एक मूक शिक्षक की तरह हैं। जब कोई युवा भगत सिंह की प्रतिमा के सामने खड़ा होता है, तो वह केवल एक क्रांतिकारी की मूर्ति नहीं देखता, बल्कि उस बलिदान को महसूस करता है, जिसने देश की आजादी की नींव रखी। इसी तरह, डॉ. भीमराव आंबेडकर की प्रतिमाएँ, जो देशभर में हजारों की संख्या में हैं, सामाजिक न्याय और समानता की उस ज्योति को प्रज्वलित करती हैं, जिसके लिए उन्होंने जीवनभर संघर्ष किया। गुजरात पर्यटन विभाग की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी ने अपने उद्घाटन से 2023 तक 1.5 करोड़ से अधिक पर्यटकों को आकर्षित किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि ये स्मारक न केवल सांस्कृतिक धरोहर हैं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक प्रगति के स्रोत भी हैं। ये प्रतिमाएँ स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति देती हैं, पर्यटन को बढ़ावा देती हैं और क्षेत्रीय गौरव को मजबूत करती हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. रामचंद्र तिवारी ने लिखा है - प्रतिमाएँ केवल मूर्तियाँ नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना का जीवंत दस्तावेज हैं, जो हमें हमारे मूल्यों और कर्तव्यों की याद दिलाती हैं।

प्रतिमाएँ अतीत और वर्तमान के बीच एक संवाद का सेतु बनाती हैं। जब हम कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल में रानी विक्टोरिया की प्रतिमा देखते हैं, तो वह हमें औपनिवेशिक इतिहास की जटिलताओं की याद दिलाती है, वहीं चेन्नई में पेरियार की मूर्तियाँ आत्मसम्मान और सामाजिक सुधार की गाथा कहती हैं। ये स्मारक हमें यह सिखाते हैं कि हमारा इतिहास केवल जीत और हार की कहानियों का संग्रह नहीं, बल्कि उन आदर्शों का मंच है, जो हमें बेहतर इंसान बनने की प्रेरणा देते हैं। सेंटर फॉर सोशल स्टडीज, नई दिल्ली के 2023 के सर्वेक्षण के अनुसार, 72% भारतीयों का मानना है कि सार्वजनिक प्रतिमाएँ युवाओं में इतिहास के प्रति जागरूकता और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देती हैं। यह आँकड़ा इस बात का प्रमाण है कि ये मूर्तियाँ समाज के लिए केवल सजावटी वस्तुएँ नहीं, बल्कि प्रेरणा और शिक्षा का सशक्त माध्यम हैं।

किंतु प्रतिमा स्थापना का मुद्दा उतना ही जटिल है, जितना प्रेरणादायक। हाल ही में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की इंदौर खंडपीठ ने एक ऐतिहासिक फैसले में सार्वजनिक स्थानों, विशेषकर सड़कों और चौराहों पर नई प्रतिमाओं की स्थापना पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया। यह निर्णय उज्जैन के माकड़ोन में डॉ. आंबेडकर की प्रतिमा तोड़े जाने और सरदार पटेल की मूर्ति स्थापित करने की मांग से उत्पन्न विवाद के संदर्भ में आया। इस घटना ने सामाजिक तनाव को जन्म दिया और प्रतिमा स्थापना से जुड़े सामाजिक, प्रशासनिक और यातायात संबंधी मुद्दों को उजागर किया। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि यह प्रतिबंध केवल नई प्रतिमाओं पर लागू होगा, और

पहले से स्थापित मूर्तियों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह फैसला न केवल यातायात व्यवस्था और सार्वजनिक सुव्यवस्था को बनाए रखने की दिशा में एक कदम है, बल्कि सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण है।

प्रतिमा स्थापना के विवाद देश के विभिन्न हिस्सों में समय-समय पर उभरते रहे हैं। माकड़ोन की घटना इसका एक उदाहरण है, जहाँ डॉ. आंबेडकर की प्रतिमा तोड़े जाने से दलित समुदाय की भावनाएँ आहत हुईं और सामाजिक तनाव बढ़ा। ऐसी घटनाएँ न केवल कानून-व्यवस्था के लिए चुनौती बनती हैं, बल्कि सामाजिक एकता को भी कमजोर करती हैं। मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय का यह निर्णय एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो न तो किसी समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुँचाता है, न ही किसी महापुरुष के सम्मान को कम करता है। यह समाज से अपेक्षा करता है कि वह सामाजिक समरसता और सुव्यवस्था को प्राथमिकता दे। साथ ही, यह प्रशासन को कोर्ट के 2023 के आदेशों का कड़ाई से पालन करने का निर्देश देता है, ताकि ऐसी घटनाएँ दोबारा न हों।

आर्थिक दृष्टिकोण से भी प्रतिमा स्थापना के अपने आयाम हैं। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के निर्माण पर लगभग 3000 करोड़ रुपये खर्च हुए, जिस पर कुछ आलोचकों ने सवाल उठाए कि इस राशि का उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य या रोजगार सृजन में किया जा सकता था। किंतु यह भी सत्य है कि ऐसे स्मारक दीर्घकाल में आर्थिक लाभ देते हैं। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी ने न केवल पर्यटन को बढ़ावा दिया, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी सृजित किए। आधुनिक तकनीकों जैसे फाइबर रिइन्फोर्समेंट, डिजिटल मॉडलिंग और थ्रीडी प्रिंटिंग ने प्रतिमा निर्माण को और सुलभ व सटीक बनाया है, जिससे यह उद्योग कौशल विकास और आर्थिक प्रगति का स्रोत बन रहा है।

प्रतिमा स्थापना में स्थानीय जनमत का सम्मान और परियोजना की पारदर्शिता सुनिश्चित करना आवश्यक है। अनियंत्रित या राजनीति से प्रेरित स्थापना सामाजिक टकराव को जन्म दे सकती है। मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय का निर्णय इस दिशा में एक नजीर है, जो यह सिखाता है कि महापुरुषों का सम्मान उनकी मूर्तियों की संख्या में नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को अपनाने में है। यह निर्णय यातायात प्रबंधन, सामाजिक समरसता और प्रशासनिक जवाबदेही के महत्व को रेखांकित करता है।

सार्वजनिक स्थानों पर प्रतिमाएँ केवल स्थिर संरचनाएँ नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक कथानक हैं। ये हमें हमारे अतीत के गौरव, वर्तमान की जिम्मेदारियों और भविष्य की संभावनाओं से जोड़ती हैं। जब हम इनके साये में खड़े होते हैं, तो हम केवल पत्थर की मूर्तियाँ नहीं देखते, बल्कि उन सपनों को महसूस करते हैं, जिन्होंने हमारे राष्ट्र को आकार दिया। ये प्रतिमाएँ हमें सिखाती हैं कि सच्चा सम्मान मूर्तियों को स्थापित करने में नहीं, बल्कि उन मूल्यों को जीने में है, जो हमारे नायक हमारे लिए छोड़ गए। हम इन प्रतीकों को न केवल श्रद्धा से देखें, बल्कि इनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारकर एक ऐसे भारत का निर्माण करें, जो एकता, समरसता और प्रगति का प्रतीक हो।

**प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)**

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023